



स्तुति- संतोत्रगदि

२

॥ श्रीः ॥

गुरुपरणेन्दुर्चरीवर्ति.

भो भो इन्दुरनगरस्पञ्जेनधेताम्बरपाटशाखात्करणभूषः पण्डित-  
धीहृत्पादार्णवः षट्तिनतरमागधीभाषामदत्तरत्नरगन्धानुगासिपटनीप-  
सप्तस्मरणानां संसृष्टतृष्ठायादुरपिगमनागधीयपदविवरणपतिवदाहिन्दीभाषार्थ-  
सर्वसाधारणार्थज्ञानजननोचिततरभाषमयभाषार्थानां ऐश्वर्येण प्रवर्ती-  
कृततत्रभवन्निर्वाण्यः रणसाहसशास्त्रपाण्डित्यम् एतद्विद्वान् ज्ञानतां  
पाण्डित्यमरलोचन दीर्घायुषो भवन्तिविति प्रार्थयामो भगवन्तं  
धीनरागम्.

इन्द्र.  
ता. १३-१-०९

{ पन्चासपशोमुनिः



MUMBAI,

12th February 1939.

I have read with great pleasure some portions of Pandit Shrikrishna Sharma's "Saptaswaras" which I understand will shortly be out. The book possesses an originality. The learned Pandit has placed the "Swaras" within the reach of all men and I am sure the Jains will now read and understand them with facility and interest. As far as I know the work is altogether on different lines from any other Jain Work. The translation is somewhat stiff and in my opinion the use of simpler Words would have been more advantageous. But on the whole the book is an admirable one and it appears that the author has bestowed much labour over it. The Pandit has rendered conspicuous Service to the Jain Community and I am confident it will heartily welcome the book.

SIRAYMAL PARNIA

B. A. T. B. C. L. L. B.

DISTRICT AND SESSION JUDGE

MUMBAI.

*For the State*



INDORE.

10-10-1921.

I have known Pandit Shikrishna Sharma for the last two years. He seems to be a learned Pandit and takes a great deal of interest in the Study of Jain Shastras. He has manifested his love for Jainism by commenting upon "Sapta Smarana". I am glad to say that the Commentary let be prepared will be found very useful to those who study Sapta Smarana without a teacher. Maghadhi Verses have been explained in Sanskrit with some important Grammatical Notes and for the sake of those who are quite ignorant of the Sanskrit Language the purport of each verse is given in Hindi also. I believe that the Jain Community is thankful to the learned Panditji for the endeavours to render Sapta Smarana in a Language which is understood by us all. His work shows that he has thorough knowledge of Sanskrit Maghadhi and Hindi Languages. In Conclusion I pray Panditji to take up some more important works of the Maghadhi Language and translate them into Hindi so that the Hindi knowing public may appreciate the Sacred Jain Literature.

N. G. MODI;

B. A. B. L.

MAGISTRATE

INDORE.









॥ श्रीः ॥

॥ सदस्याभ्यर्थम् ॥

इह सल्लु परमदयालुभिः श्रीमत्सर्वविद्येशानकेयल  
ज्ञानिभिरनादिस्वावियानिर्मितकामक्रोधादि महातिर्मिनि-  
लाक्रान्तसंस्तरणाभ्यौ पौनःपुन्येननिमज्जतां तत्परणो-  
पायज्ञानपीताविकल्पानां प्राणिनामपारप्रापकत्वेऽपि मय्य  
घट्यंत्सुन्नतक्षणाविश्रामप्रददृशिवदृत्तमानम्भ्यांगिहणमोषान-  
पद्यतिसदृशधीतरागचरणानिःश्रेणी उदपादि-

तदवलंबनेऽप्यविवेकतिभिरवना दयाशीला धर्मप्रयाग  
प्रवर्तकाचार्या महाधीरगौतनरशमिप्रभूपाय आसन् तथा  
प्यतिकालाविरितत्वेन तेष्वन्तंगावस्तेषु प्राणिवदभयान-  
तिमिरे भ्रमतां कानिधिद्विदृग्जनपुल्लतिलयाः शत्रवः  
रचयांघभूयुः तेषां पाठिनतरवालभाषामयाना स्तौवरे  
ज्ञानासंभवे इन्दुरनगरयातिरवात्मोऽपि वरु...

कायमानेन पदवाक्यप्रमाणशालिकृतपरिश्रमेण "नागर  
 जातीयचोद्रेकुलावतसेन श्रीपोनायसूनुपण्डितश्रीकृष्ण  
 शर्मणा सप्तस्मरणानां संस्कृतच्छया हिन्दीभाषायां  
 गाथापदार्थः सर्वसाधारणज्ञानार्थं सरलहिन्दीभाषायां  
 भावार्थश्चव्यरचि.

“ ऋतेज्ञानाज्ञमोक्ष ” इतिवचनानुसारेण नित्यसप्त-  
 स्मरणपठनकर्तृणां सौकर्येण ज्ञानप्राप्तिर्भूयादितिहेतो  
 र्हिन्दुरजैनश्वेताम्बरमुख्यपाठशालाध्यापकेनोक्त पण्डित-  
 वरेण कृतःपरिश्रमःसफलोभवेदिति सर्वैर्भव्यथावकैःसार्थं  
 सप्तस्मरणमवश्यं पठनीयमितिप्रार्थनापराःसदस्याः

श्रीः

॥ श्रीधीतरागायनमः ॥

श्रीनंदिपेणसूरिविरचितमजितशान्ति  
स्तवनं प्रारभ्यते.

( गाथा )

( गाथा )

अजिअं जिअसव्वभयं संतिं च पमंतसव्वगय-  
पावं ॥ जयगुरु संतिगुणकरे दोवि जिणवरे पणि-  
चयामि ॥ १ ॥

( छाया )

जितसर्वभयं अजितं च प्रशांतसर्वगदपापं शान्तिं च  
शान्तिगुणकरौ जगद्गुरु ( तौ ) द्वात्रिंशति जिन्वरी ( अहं )  
प्रणिपतामि ।

( पदार्थ )

( जिअ ) जीत लियेहैं ( सव्वभयं ) स

जिनने ऐसे ( अजिअं ) दूसरे तीर्थकर अजितनाथस्वामी ( च ) और ( पसंत ) अपुनर्भावसे निवृत्त होगएहें ( सब्ब ) संपूर्ण ( गय ) रोग और ( पावं ) पाप जिनके ऐसे ( संतिं ) सोहलवें तीर्थकर शान्तिनाथ स्वामी ( संतिगुणकरे ) विघ्नोपशमरूपगुणको करने वाले ( जयगुरु ) जगतमें प्राणियोंको धर्मतत्वोपदेश करने वाले ( दोधि ) दोनो ( जिणवरे ) जिनोंमें श्रेष्ठ ऐसे अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीको ( पणिवयामी ) वन्दन करता हूं ।

( भावार्थ )

जीत लियेहें सतधिवभय जिन्होंने ऐसे दूसरे तीर्थकर अजितनाथ स्वामी और निवृत्त होगएहें संपूर्ण रोग और पाप जिन्होंके ऐसे सोहलवें तीर्थकर शान्तिनाथ स्वामी विघ्नोंकी शांति करने वाले जगतमें जीवोंको धर्मोपदेश करने वाले जिनोंमें श्रेष्ठ ऐसे दोनो अजितनाथ और शान्तिनाथ भगवानको मैं नन्दिपेण कवि वन्दनकरताहूं ।

( इतिहास )

जिस समय दूसरे तीर्थकर अजितनाथ स्वामी अपनी माता विजयादेवीके गर्भमेंथे उस समय रानी विजया

देवी अपने पति जितशत्रुराजाके साथ चोपट खेलने लगी परन्तु परम प्रभावशाली पुत्र गर्भमें होनेसे जितशत्रु विजयादेवीको न जीत सके इस हेतु पुत्रका नाम अजित रखा ।

शान्तिनाथ स्वामी सोहल्लवें तीर्थकर जिस समय अपनी माता के गर्भमें आए उस समयसे जगत्में परममंगल होनेलगा और नानाप्रकारके विघ्नों की शान्ति होनेलगी इस हेतु इन्होंका नाम शान्तिनाथ रखागया ।

( गाथा )

( गाथा )

वयगयमंगुलभावे तेहं विउलतयनिम्मल सुद्योवे ।  
निस्सममहप्प भावे धोस्सामि सुदिट्टसव्भावे ॥था

( छया )

व्यपतगतमंगुलभावी विपुल्लापोनिर्भल्लग्गभावी निस्स-  
ममहत्प्रभावी सुदट्टसव्भावी तौ ( अजितशान्तिनाथानौ )  
अहं स्तोप्ये ।

( पदार्थ )

( वयगय ) प्रनष्टहोगणु हैं ( मंगुल ) अशोभन  
( भावे ) परिणाम जिन्होंके ( विउल ) विभीषि ( तद )

द्वादशविधतपसे ( निम्मल ) निर्मल होगयाहै ( सहाये )  
 स्वभाव जिन्होंका ( निरुपम ) अनुपमेय और ( मह )  
 महानहै ( प्पभावे ) प्रभाव जिन्होंका ( सुदिट्ट )  
 केवल ज्ञान और दर्शन द्वारा भलीभाँति देखलिये हैं  
 ( सन्भावे ) विद्यमान जीवाजीवादिभाव जिन्होंने ऐसे  
 ( ते ) वे प्रसिद्ध अजितनाथ और शान्तिनाथ भगवान  
 को ( हं ) मैं नन्दिपेण कवि ( थोरस्तामि ) स्तुति  
 करताहूँ ।

( भावार्थ )

नष्टहोगए हैं अशोभनपरिणाम जिन्हेंकि विस्तीर्ण  
 द्वादशविध तपश्चर्यासे निर्मल होगयाहै स्वभाव जिन्हों-  
 का अनुपमेय और महानहै प्रभाव जिन्होंका केवल  
 ज्ञान और दर्शन द्वारा भलीभाँति जानलियेहैं विद्यमान  
 जीवाजीवादिभाव जिन्होंने ऐसे वे प्रसिद्ध अजितनाथ  
 और शान्तिनाथ स्वामीकी मैं स्तुति करताहूँ ।

( श्लोकः )

( सिलोगो )

सव्वदुक्खप्पसंतीणं सव्वपावप्पसंतीणं । सया  
 अजियसंतीणं नमो अजिअसंतीणं ॥ ३ ॥

( छया )

सर्वदुःख प्रशान्तिभ्यां सर्वपापप्रशान्तिभ्यां अजित-  
शान्तिभ्यां एतादृशाम्यां अजितशान्तिनाथाम्यां सदा नमः  
अस्तु ।

अर्घ्यं नमःशब्दयोगजचतुर्थ्यर्थेप्राकृतत्वात् पथी  
द्विवचनस्य च बहुवचन सर्वत्र । सञ्जुक्त्वप्संतीर्ण  
इत्यत्र पकारो लघुर्गुर्वा समासेचेति द्वित्वस्य पाक्षिक  
त्वात् ॥ द्वितीये चतुर्थे च पादे संतिणं पसंतिणं चेत्य-  
त्रार्पत्वात् दीर्घाभावः अन्यथाहि छन्दोभङ्गाः स्यात् ।

( पदार्थ )

( सञ्जु ) संपूर्ण ( दुःख ) श्लेषकर्म ( प्संतीणं )  
प्रशान्त होगईहै जिन्होंके अथवा ( दुःख ) ( दुष्टानिखानि  
इन्द्रियाणि दुःखानि तेषां प्रशान्तिः इष्टानिष्टनिपयेषु  
ययोः ) दुष्ट इन्द्रियां इष्टनिष्ट निपयोसि ( प्संतीणं )  
शांतहोगईहै जिन्होंकी अथवा ( सञ्जुदुःखप्संतीणं )  
संपूर्ण योग्य जंतुओंकी दुःखप्रशान्ति होगईहै जिन्हंसि  
( सञ्जु ) संपूर्ण ( पात्र ) पाप ( प्संतीणं ) प्रशान्त  
होगईहै जिन्होंके ( अजिय ) न जीती जानेवालीहै  
( संतीणं ) शान्ति जिन्होंकी ऐसे ( अजियसंतीणं )



अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीको ( सयो ) निरंतर ( नमो ) नमस्कार होओ ।

( भावार्थ )

संपूर्ण वेद्यकर्म प्रशान्तहोगएहें जिन्होंके ( अथवा ) संपूर्ण दुष्ट इन्द्रियां इष्ट अनिष्ट विषयों से निवृत्त हो-  
गईहें जिन्होंकी ( अथवा ) संपूर्ण योग्य जन्तुओंके  
दुःख निवारण कियेहें जिन्होंने और संपूर्ण पाप नष्ट  
होगएहें जिन्होंके और रागद्वेषादि द्वारा न जीती जाने  
वाली है शान्ति जिन्होंकी ऐसे अजितनाथ और शान्ति-  
नाथ स्वामीको मैं निरंतर नमस्कार करताहूं ।

( मागधिका छंदः )

( मागहिआ )

अजिअजिणसुहृप्पवत्तणं तव पुत्थित्तमनाम-  
कित्तणं । तहय धिइमइप्पवत्तणं तव य जिणुत्तम  
संति कित्तणं ॥ ४ ॥

( छाया )

हे अजितजिन हे पुद्योत्तम तव नामकीर्त्तनं सुख-  
प्रवर्तनं तथा च धृतिमतिप्रवर्तनं आस्ति हे जिनोत्तम-  
शांते तव च कीर्त्तनमपि तथैवास्ति ।

( पदार्थ )

( अजिआजिग ) हे अजितसंज्ञक जिनभगवन्  
 ( पुरिसुत्तम ) हे पुरुषोत्तम ( तव ) आपका ( नाम-  
 किच्छणं ) नामस्मरण ( मुह ) सुखका ( प्ववत्तणं )  
 प्रवर्तकहै ( तहय ) और वैसेही ( धिइ ) स्वास्थ्य  
 लक्षण धृति और ( मइ ) प्रज्ञालक्षण मतिका  
 ( प्ववत्तणं ) प्रवर्तक है ( च ) और ( जिणुत्तम )  
 जिनोंमें श्रेष्ठ ( संति ) हे शान्तिनाथस्वामी ( तव )  
 आपकाभी ( किच्छणं ) नाम स्मरण वैसेही है ।

( भावार्थ )

हे पुरुषोत्तम अजित संज्ञक जिनभगवन् और हे  
 जिनोंमें श्रेष्ठ शान्तिनाथ भगवन् आप दोनोंका नाम-  
 स्मरण संपूर्णसुखका प्रवर्तक है और वैसेही स्वास्थ्यलक्षण  
 धृति और प्रज्ञालक्षणमतिका भी प्रवर्तक है ।

( आलिंगनकच्छंदः )

( आलिंगणयं )

किरिआविहि संचिअकम्मकिल्लेस विमुक्खयरं ।  
 अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं ॥  
 अजिअस्स य संतिमहामुणिणोविअ संतिकरं  
 संययं मम निच्चुइकारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥

## ( श्रया )

क्रियाविधिसंचितकर्मऋदाविमुक्तिकरं अजितं च गुणैः  
निचितं महामुनिसिद्धिगतं एनादृशं अजितम्य शान्ति-  
महामुनेश्च नमस्यनकं सततं मम शान्तिकरं निर्वृत्ति-  
कारणकल्प्य भवतु ।

## ( पदार्थ )

( किरिआ ) कायिबयादि क्रियाओंके ( विधि )  
भेदोंसे ( संचिअ ) इकट्ठे कियेहुए ( कम्म ) ज्ञानावर-  
णादिऋम और ( किल्लेत्त ) कपायोंसे ( विमुत्तययं )  
अत्यंत प्रथक् करनेवाला ( अजितं ) तीर्थानरसंबंधी  
अन्यदेवोंको बन्दनजनित पुण्यसे नजीताजानेवाला ( च )  
और ( गुणोर्हि ) सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और चारित्रा-  
दिगुणोंसे ( निचिअं ) व्याप्त ( महामुनि ) श्रेष्ठमुनियोंकी  
( सिद्धि ) अग्निमादि अष्टसिद्धियोंतक ( गयं ) पहुँचाहुआ  
ऐसा ( अजिअस्त ) अजितनाथस्वामीको ( य ) और  
( संतिमहामुणिणोचिअ ) शान्तिनाथ महामुनिकोनी  
( नमंसगयं ) नमस्कार ( सययं ) निरंतर ( मम ) मेरी  
( संतिकरं ) पीडाकी शान्तिकरनेवाला ( च ) ( निव्वुइ )  
मोक्षका ( कारणं ) प्रसिद्धकारण होओ ।

( भावार्थ )

कायिक्यादि क्रियाओंके भेदोंसे इकट्ठेकियेहुए ज्ञाना-  
वरणादि कर्म और कथायोंसे अत्यन्त जुदाकरनेवाला और  
तीर्थांतरसंबंधी अन्यदेवोंको बन्दनसे उत्पन्नहुए पुण्यसे न  
जीताजानेवाला और सम्यग्ज्ञानदर्शन चारित्र्यादि गुणोंसे  
व्याप्त और श्रेष्ठमुनियोंकी अणिमादि अष्टसिद्धियोंतक  
पहुंचाहुआ ऐसा अजितनाथ स्वामीको और शान्तिनाथ  
महामुनिसे कियाहुआ नमस्कार निरंतर मेरी पीडा  
की शान्तिकरनेवाला और भेरेमोक्षका करनेवाला होओ ।

( मागधिकालंदः )

( मागहिआ )

पुरिसाजइदुक्खवारणं जइअ विमग्गह सुवख-  
कारणं । अजिअं संतिं च भावओ अभयक्खे सरणं  
पवज्झहा ॥ ६ ॥

( छया )

हे पुरुषाः यदि दुःखवारणं विमार्गयथ यदि च सौख्य  
कारणं विमार्गयथ ( तदा ) अजितं शांति च भावनः  
दारणं प्रगच्छत ( यतः एतौहो ) अभयकरे रतः  
( पवज्जहा ) इति दीर्घमार्पट्यान् ।

## ( पदार्थ )

( पुरिता ) हे भव्यजिज्ञो ( जइ ) यदि ( दुःखवारणं ) दुःखोंकानाश ( जइअ ) और यदि ( सुखकारणं ) सुख का कारण ( त्रिमग्गह ) शोधनकरना चाहतेहो तो ( अजिअं ) अजितनाथ स्वामीको ( च ) और ( संतिं ) शान्तिनाथ स्वामीको ( भावओ ) भक्तिसे ( सरणं ) शरण ( पव-ज्झहा ) जाओ ( क्योंकि वे दोनोंही ) ( अभयकरे ) अभयके करनेवाले हैं ।

## ( भावार्थ )

हे भव्यजीवो यदि तुम अपने दुःखोंका नाश और सुखकीप्राप्ति चाहतेहो तो अजितनाथ स्वामीको और शान्तिनाथस्वामीको भक्तिपूर्वक शरण जाओ क्योंकि वे दोनोंही अभयके करनेवाले हैं ।

## ( संगतकच्छंदः )

## ( संगययं )

अरुद्धातिमिरविरहिअ मुवरयजरमरणं । सुरअसुर-  
गरुलभुवगवइपयय पणिवइअं ॥ अजिअमहम-  
विअमुनयनयनिउणमभयकरं । सरणमुवसरिअ-  
भुविदिविज महिअं सययमुवणभे ॥ ७ ॥

( छाया )

आतिरतिनिमिगविरहितं उपगतजगमरणं मुगमुगगुड  
मुजगपतिप्रयनप्रगिपतिनं मुनयनयनिपुणं अभयकरं  
अपिन्य भुविजादिविजमाहितं अजिनं शरणं उपमृत्य सतनं  
उपनमे ।

( पदार्थ )

( अरु ) असंयममे अभि ( रु ) संयममे रति  
( निमिर ) अज्ञान इनसे ( दिगिति ) गति ( उपग्य )  
निवृत्त ( जगमरण ) जग और मरण जिनवा ( गुर )  
देव ( असुर ) असुरबुमार ( गरुड ) गुरुगुमार  
( भुजग ) नागबुमार इन्होके ( पइ ) पति इन्होके  
( पयय ) समयप्रकाशने ( पजिरुअं ) प्रगिपतिवा  
हे जिनसे अधरा ( गुर ) देव ( असुर ) भद्रगति  
( गरुड ) श्योनिष्क ( भुजग ) रंगार ( वा ) विज्ञान  
इन्होके ( पइ ) स्वामी उनसे ( पयय ) समयप्रकाशने  
( पजिरुअं ) समकृत ऐमे, ( मुनय ) शोभन  
नेगमादि साधनयोके ( नय ) शरीरस्वरदानेमे ( निरुणं )  
स्वपुर ( अभयकरं ) अभयकरनेसे ( अजिन ) शैर  
भी ( भुविज ) मनुष्योसे ( दिविज ) देवयोसे ( इति अं )

पूजित ऐसे ( अजिअं ) अजितनाथस्वामीको ( सरणं )  
 शरण ( उवसरिअ ) जाकर ( अहं ) मैं ( सययं )  
 निरंतर ( उवणमे ) नमस्कार करताहूँ ।

( भावार्थ )

असंयममें अरति संयममें रति और अज्ञान इनसे  
 रहित, निवृत्तहैं जरा और मरण जिनका, देव, अमुरकुमार,  
 सुपर्णकुमार, और नागकुमार, इन्होंकेपति इन्द्रने सम्यक्  
 प्रकारसे प्रणिपात कियाहै जिनको, अथवा देव, भस्मपाती,  
 प्योतिष्क, व्यंतर, विद्याधर इन्होंके स्वामीने भलेप्रकारसे  
 नमस्कार कियाहै जिनको, शोभन नैगमादि नयोंको  
 स्वीकारकरवानेमें चतुर, अभयकरनेवाले, मनुष्योंसे और  
 देवताओंमें पूजित, ऐसे अजितनाथ स्वामीको शरणागत  
 होकर मैं निरंतर नमस्कारकरताहूँ ।

( सोपानकण्डः )

( मेवाणय )

नं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तथरं । अत्रयमद्वय-  
 पंनिविमुनिममादिनिहिं ॥ मंतिअरं पणमामि  
 दमुत्तम नित्थयं ! संनिमुणे मम संति समादिवं  
 दिवउ ॥ ८ ॥

( छाया )

उत्तमनिस्तमसत्र ( सत्व ) धरं आर्जुमाद्वैवक्षांतिवि-  
मुक्तिसमाधिनिधिं शान्तिकरं दमोत्तमतीर्थकरं तं जिनोत्तमं  
शांतिमुनिं प्रणमामि ( सः ) शान्तिमुनिः मम समाधि-  
वरं दिशतु ।

( पदार्थ )

( उत्तम ) श्रेष्ठ ( निस्तम ) कांक्षारहित ( सत्त्व )  
सत्व ( सत्त्व ) भावयज्ञको ( धरं ) धारणकरनेवाले  
( अज्जम ) आर्जुम=गायाभाव ( मह्य ) मार्द्व.=निर-  
हंकारता ( संति ) क्षमा ( निमुक्ति ) निर्लोभता ( समाहि )  
समाधि इनके ( निधि ) निधि=खजीना ( संतिअरं )  
आपत्तियोंके उपशमको देनेवाले ( दम ) इन्द्रिय-  
निग्रहसे ( उत्तम ) प्रधान ( तित्थ ) तीर्थ ( यरं )  
करनेवाले ( तं ) उन प्रसिद्ध ( जिगुत्तमं ) सामान्यकेवलियों  
में श्रेष्ठ ऐसे ( संतिमुनिं ) शान्तिमुनिको ( पणमामि )  
प्रणामकरताहूँ ( संति ) शान्तिनाथस्वामी ( मम ) मुझे  
( समाहिवरं ) प्रधान चित्तकी स्वस्थताको ( दिशतु ) देवें ।

( भावार्थ )

श्रेष्ठ तथा कांक्षारहित भावयज्ञको धारणकरनेवाले  
गायाभाव निरहंकारता क्षमा निर्लोभता और समाधि इन्होंने



निधि आपत्तियोंकी शान्तिको देनेवाले इन्द्रियनिग्रहद्वारा प्रधानतीर्थको करनेवाले ऐसे उन प्रसिद्ध सामान्यकेवलियों में श्रेष्ठ शान्तिमुनिको प्रणामकरताहूं. वे शान्तिनाथ स्वामी मुझे प्रधान चित्तकी स्वस्थता दें।

( वेष्टकच्छंदः )

( वेद् डउ )

सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवि-  
त्थिन्न संथिअं थिरसस्त्थिच्छवच्छं मयगयलीलायमाण  
वरगंधहत्थिपत्थाणपत्थिअं संथवारिहं ॥ हत्थिहत्थ-  
वाहुं थंतकणगरुयगानिख्वहय पिंजरं पवरलक्खणो-  
वचियसोम्मचारुखवं । सुइसुहमणाभिरामपरम-  
रमणिज्ज वरदेवदुंदुहिनिनायमदुरयरसुभगिरं ॥ ९ ॥

( छाया )

श्रावस्तीपूर्वपार्थिवं च वरहस्तिमस्तकप्रशस्तविस्तीर्ण  
संस्थितं स्थिरसदृक्षवक्षसं मदकललीलायमानवर गंधहस्ति  
प्रधानप्रस्थितं संस्तवाहं हस्तिहस्तवाहुं ध्मातकनकरुचक-  
निरुपहतपिंजरं प्रवरलक्षणोपाचितसौम्यचारुखपं श्रुति  
मुखमनोऽभिरामपरमरमणीयवरदेवदुंदुभिनिनादमधुरतरथुम  
गिरम् ।

( पदार्थ )

( सावत्थि ) अयोध्याके ( पुत्र ) दीक्षाग्रहणके पहिले  
 ( पत्थिअं ) गजा ( च ) पादपूरणे ( वर ) श्रेष्ठ  
 ( हत्थिमत्थय ) हाथीकेमग्नकर समान (पत्थ) प्रशस्त  
 और ( चित्थिअ ) विस्तीर्ण है ( संथिअं ) शुभसंरधान  
 जिनका ( थिर ) कठोर और ( सरिच्छ ) अविषम है  
 ( वच्छं ) दक्षमथल जिनका ( मयगय ) मदयुक्त और  
 ( लीलायनाग ) लीलाकरनेवाले ( वरगंधहत्थि ) श्रेष्ठ  
 गंधगजके ( पत्थण ) गमनके समानहै ( पत्थिअं )  
 चरणोंकीगति जिनकी ( संधय ) स्तुतिके (अरिहं) योग्य  
 ( हत्थि ) हाथीकी ( हत्थ ) सूंडके समानहै ( चाहुं )  
 मुजा जिनकी ( धंत ) खूबतपेहुए ( कणाग ) सोनेके  
 ( रुयग ) आभूषणके समान ( निरुवहय ) स्वच्छहै  
 ( पिंजरं ) पीतवर्ण जिनका ( पवर ) श्रेष्ठ (लक्ष्मण)  
 चक्रायुद्धादि चिन्होंसे ( उवचिय ) युक्त और (सोम्म)  
 दर्शनीय ( चाय ) मनोहरहै ( रूथं ) रूप जिनका (सुइ)  
 कानोंको ( मुह ) सुखदेनेवाली ( मणाभिराम ) मनको-  
 आल्हाददेनेवाली ( परमरमणिज्ज ) अत्यन्तरमणीय (वर)  
 श्रेष्ठ ऐसी ( देवदुंदुहि ) देवोंकी दुंदुभिके ( निनाय )

नादके समानहै ( महुरयर ) अत्यन्तमधुर ( सुभगिरं )  
शुभवाणी जिनकी ।

( भावार्थ )

दीक्षाग्रहणके पहिले अयोध्यापुरीके गजा श्रेष्ठगजके  
मस्तकसमान प्रशस्त और विस्तीर्णहै शुभसंस्थान  
जिन्होंका, कठोर और समानहै वक्षस्थल जिन्होंका  
मदोन्मत्त और लीलाकरनेवाले श्रेष्ठगंधगजके गमनके  
समानहै चरणोंकीगति जिन्होंकी, स्तुतियोग्य, हाथोंकी  
सूंडकेसमानहैं भुजा जिन्होंकी अत्यन्त तपेहुएसोनेके  
आभूषणसमानहै स्वच्छपीतवर्ण जिन्होंका, श्रेष्ठचक्रांकुशादि  
चिन्होंसेयुक्त और दर्शनीयहै मनोहररूप जिन्होंका,  
कानोंको सुखदेनेवाली और मनको आल्हाददायक  
अत्यन्त रमणीय और श्रेष्ठ ऐसी देवोंकी दुंदुभिके नाद  
समानहै अतिमधुर शुभवाणी जिन्होंकी ।

( रासलुधकछंदः )

( रासलुब्धुं )

अजिअं जिआरिणं जिअसव्वभयं भवोहरिं ।  
पणमामि अहं पयउ पावंपसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥

( छाया )

जिनागिणं जिनसर्वभयं ( अथवा पुनरुक्तिदोषपरिहा-  
रार्थं ) जीवध्रुव्यभगं भवोपरिपुं एतादृशं अजितं प्रयतः  
अहं प्रणमामि ( सः ) भगवान् मे पापं प्रशामयतु ।

( पदार्थ )

( जिअ ) जीतेहैं ( अगिणं ) अष्टकर्मरूपशत्रु  
समुदाय जिन्होंने ( जिअ ) संज्ञिपंचेन्द्रियजीवाँको  
( सवरनयं ) ध्रुवणकेयोग्यहैं ऐश्वर्यजिन्होंके ( भवोह )  
संसारके प्रवाहके ( रिउं ) शत्रु ऐसे ( अजिअं )  
अजितनाथस्वामीको ( अहं ) मैं ( पयउ ) मन वचन  
कायसे ( पगमामि ) नमस्कार करताहूँ वह ( भयवं )  
भगवान ( मे ) मेरे ( पावं ) पापको ( पसमेउ )  
नष्टकरो ।

( भावार्थ )

जीतेहैं अष्टकर्मरूपशत्रुओंके समुदाय जिन्होंने संज्ञि-  
पंचेन्द्रियजीवाँको ध्रुवणयोग्यहैं परम ऐश्वर्य जिन्होंका  
संसारप्रवाहकेशत्रु ऐसे अजितनाथस्वामीको मैं मन-  
वचनकाय से प्रणामकरताहूँ वे अजितनाथभगवान् मेरे  
पापोंको नष्टकरो ।

( वेष्टकच्छन्दः )

( वेद्दत )

कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तउं महा-  
 चक्रवाट्टिभोए महप्पभावो जो वाहत्तरि पुखरसहस्स-  
 वरनगरनिगमजणवयवई वत्तीसारायवरसहस्साणु-  
 आयमग्गो चउद्दसवररण नवमहानिहि चउसट्टि  
 सहस्सपवरजुवईणसुंदरवई चुलसीहयगयरहसय  
 सहस्ससामी छन्नवइगामकोडिसामी आसीजो  
 भारहम्मिभयवं ॥ ११ ॥

( छाया )

यः प्रथमं कुरुजनपदहस्तिनापुरनरेश्वरः ततः महाचक्र  
 वर्तिभोगः ( आसीत् ) महाप्रभावः यः भारतेक्षेत्रे भगवान्  
 पुरवरद्वासप्ततिसहस्रवरनगरनिगमजनपदपतिः द्वात्रिं-  
 शद्राजवरसहस्रानुयातमार्गः चतुर्दशवररत्ननवमहानिवि  
 चतुःषष्टिसहस्रप्रवरयुवतीनां सुन्दरपतिः चतुरशीतिहयगज  
 रथशतसहस्रस्वामी पणवतिग्रामकोटिस्वामी आसीत् ।

( पदार्थ )

( पढमं ) प्रथम ( कुरुजगवय ) कुरुदेशमें ( हत्थिणाउर )  
 हस्तिनापुरके ( नरीसरो ) राजाथे ( तउ ) अनंतर

( महाचरुद्वि ) भार्गवकरकीके ( मांद् ) राज्य का  
 उपभोगविद्या ( महृष्यभावे ) उत्तमवॉसे, आत्माको  
 अनुंजन करनेवाले ( भववे ) भगवान् ( भारुहग्नि )  
 भागशेषमें ( पाठचरि ) षडाक्षर ( सहस्र ) हजार ( पुर )  
 पर्वोने ( धर ) श्रेष्ठ ( वननगर ) उत्तम गजपुर ( जितमेंकर-  
 न श्यताहो उसे नगर कहना ) ( निगम ) पनिकमज्ञानोंके  
 स्थान ( जगरय ) देशविशेषके ( वई ) पति ( वर्चितासाय-  
 यमहर्म ) वृत्तीसहजारश्रेष्ठ गजाओं से ( अशुभाय )  
 अनुपातई ( मग्गो ) मार्ग जिन्होंका ( चउदस ) चौदह  
 ( शरयग ) श्रेष्ठजोंके ( नव ) नौ ( महानिहि ) महानिधियों  
 के ( चउसद्वि सहस्र ) चौंसठहजार ( पर ) सुंदर  
 ( लुर्दण ) युवानियोंके ( सुंदर ) मनोहर ( वई ) पति  
 ( चुउसी ) चौंसती ( सय ) सौ ( सहस्र ) हजार अर्थात्  
 चौंसतीशय ( ह्य ) धोडे ( गय ) हाथी ( रह ) रथ  
 इन्होंकेरामी ( उत्तशदकोडि ) उत्तुकोट ( गाम ) गावोंके  
 ( सामी ) अधिपति ( आसीन ) होतेहुए ।

( भावार्थ )

प्रथम कुरुदेशमें हस्तिनापुरके राजाथे अनंतर महा-  
 चरुद्वीके भोगोंका उपभोगकरतेहुए उत्तमवॉसे आत्मानु-

रंजनकरनेवाले सुंदरहवोलियोंसे श्रेष्ठ बहोत्तरहजारनगरोंके वणिक्स्थानोंके और देशविशेषोंके पति बत्तीसहजार मुकुटधारी राजाओंसे अनुयातहै मार्गजिन्होंका चौदह श्रेष्ठ रत्न नो महानिधि और चौंसठहजार अत्यन्तसुंदर युवतियोंके मनोहरपति चोरासीलाख हाथी घोडे और रथोंके अधिपति छानवेकोट गावोंके स्वामी ऐसे भारतक्षेत्र में भगवान होतेहुए ।

( रासानंदितकंडः )

( रासानंदिअयं )

( युगलं ) ॥ तं सन्ति संतिकरं संतिष्णं सब्भया । संतिं थुणामि जिणं संतिं विहेउमे ॥१२॥

( छाया )

शान्तिं स्वान्तिकरं सर्वभयात् संतीर्णं एतादृशं तं शान्तिं जिणं मे शान्तिं विधातुं स्तौमि ।

( पदार्थ )

( संतिं ) मूर्तिमान उपशम ( संतिक ) अपने मोक्षलक्षणसामीप्यको ( रं ) देनेवाले ( सब्भया ) सम्पूर्णको भयहै जिससे ऐसे मृत्युसे ( संतिष्णं ) तिरेहुए और स्वभक्तोंको तिरानेवाले ऐसे ( तं ) उन प्रसिद्ध

( जिणं ) जिनभगवान् ( संतिं ) शान्तिनाथस्वामीकी  
 ( मे ) मेरे ( संतिं ) उपसर्गोंके नाशको ( विहेउ )  
 करनेकेलिये ( घुणाभि ) स्तुतिकरताहूँ ।

( भावार्थ )

मूर्तिमान् उपशम मोक्षलक्षणस्वसामीप्यको देनेवाले  
 सकलभयकारकमृत्युसे तिरेहुए और स्वभक्तोंको तिराने  
 वाले ऐसे उन प्रसिद्ध जिनभगवान् शान्तिनाथस्वामीकी  
 मेरे दुःखोंके नाशकेहेतु मैं स्तुतिकरताहूँ ।

( चित्रलेखाछंदः )

( चित्तलेहा )

इच्छाग विदेहनरीसर नखसहा मुणिवसहा ।  
 नवसारससिसकलाणण विगयतमा विहुयरया ॥  
 अजिउत्तमतेअगुणेहि महामुणिअमिअवला । वि-  
 उलकुला पणमामि ते भवभयमरण जगसरणा  
 मम सरणं ॥ १३ ॥

( छाया )

हे ऐश्वर्य हे विदेहनेश्वर हे नखरूपन हे मुनिरूपन  
 हे नवशारदसकलशयानन ( भाषायां सकलशब्दस्य  
 परानिपात आर्षत्वात् ) अथवा नवशारदशशिसकलानन



( शारदशशिवत् सकलं दीप्तिसहितं आननयस्य ) हे  
 विगततमः हे विधूतरजः हेगुणैः उत्तमतेजः हे महामुन्यमित  
 बल हे विपुलकुल हे अजित तुभ्यं अहं प्रणमामि हे  
 भवभयमूरण हे जगच्छरण ( त्वं ) मम शरणं असि ।

### ( पदार्थ )

( इक्खाग ) हे इक्ष्वाकुकुलोद्भव ( विदेहनरीसर )  
 हे विदेहजनपदाधिपति ( नरवसहा ) हे मनुष्योंमें श्रेष्ठ  
 (मुणिवसहा) हे मुनियोंमें श्रेष्ठ (नव) उदयमान (सारय)  
 शरत्कालिक (सकल) सोलहकलाओंसे परिपूर्ण (सासि)  
 चन्द्रमाके समानहै ( आणण ) मुखजिनका ( विगय )  
 नष्टहोगयाहै (तम) अज्ञानरूप अंधकार जिनका (विहुय)  
 धुलगाएहूँ (रज) कर्मरूप दोष जिनके (गुणोहिं) सद्गुणोंसे  
 ( उत्तमतेज ) श्रेष्ठहै तेज जिनका ( महमुणि )  
 महामुनियोंसेभी ( अभिभवला ) अत्यन्त अधिकहै बल  
 जिनका ( विउलकुला ) विस्तीर्णहै वंशजिनका (अजिअ)  
 हे अजितनाथस्वामी ( ते ) आपको ( पणमामि ) मैं  
 नमस्कारकरताहूँ (भवभय) सांसारिक भयको ( मूरण )  
 नष्टकरनेवाले ( जगसरण ) हे जगतको आश्रयदेनेवाले  
 ( मम ) मेरे ( सरण ) रक्षक हो ।

( भावार्थ )

हे हृष्टतुष्टुलोक्य हे विदेहनगरके नरपति, हे मनुष्यों में श्रेष्ठ हे मुनियोंमें उत्तम, हे शब्दकालिकउदयहोने वाले सौन्दर्यकलाओंसंपरिपूर्ण चांदके समान मुखवाले, हे अज्ञानरूपअंधकारसे रहित, धुल्यगयेहैं यद्वकर्मरूपरज जिनके, सद्गुणोंमें श्रेष्ठहैं तेज जिनका, महामुनियोंसे भी अन्यन्त अधिकहैं बलजिनका, विस्तीर्णहैं धंश जिनका, ऐसे हे अजिज्ञानाधरशामी मैं आपको नमस्कारकरताहूं हे सांसारिकजन्ममरणरूपभयको नाशकरनेवाले हे जगतको आश्रयदेनेवाले आप मेरे संरक्षकहो ।

( नाराचकच्छंदः )

( नारायण )

देवदाणविदचंदमूर्खद हृष्टतुष्टुजिष्टपरमलष्ट रूप  
 धंतरुप्पपट्टेसयमुद्धनिद्धधवलदंतपंति संति  
 सनिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर दित्ततेअवंद धेअ  
 सुच्चलोअभाविअप्पभावणेअ पइस मे समा-  
 हिं ॥ १४ ॥

( ध्याया )

हे देवदानवेन्द्रचन्द्रसूर्यवन्य हे हृष्टतुष्टुज्येष्ठपरमलपितरूप

हे ध्मातरूप्यपट्टश्रेयःशुद्धस्निग्धघवलदंतपङ्के हे शक्ति  
कीर्तिमुक्तियुक्तिगुप्ति प्रवर हे दीप्ततेजोवृन्द हे ध्येय हे  
सर्वलोकभावितप्रभावज्ञये हे शान्ते मे समाधिं प्रदिश ।

### ( पदार्थ )

( देव दाणर्द्ध ) देव और दानवोंके इन्द्रसे  
( चन्द ) द्वादशचंद्रोंसे ( सूर ) द्वादश सूर्योंसे ( वंद )  
बंध ( हठ ) रोगरहित ( तुष्ट ) प्रीतिको उत्पन्नकरनेवाला  
( जिष्ट ) अति प्रख्यात ( परमलुष्ट ) अत्यन्तसुंदरहै  
( रूच ) रूपजिनका ( घंत ) देदीप्यमान ( रूप )  
चान्दिके ( पट्ट ) पात्रके समान ( सेय ) घन ( सुद्ध )  
निर्मल ( निद्ध ) अरुक्ष ( घवल ) सफेद ( दंतपंति )  
दांतोंकीपंक्तिहै जिनकी ( सत्ति ) सामर्थ्य ( किचि )  
कीर्ति ( मुचि ) निर्लोभता ( जुचि ) न्याययुक्तवचन  
( गुचि ) रक्षण इन्होंसे ( पवर ) श्रेष्ठ ( द्विच )  
देदीप्यमान ( तेअ ) तेजके ( वंद ) समूह ( घेअ )  
ध्यानकेयोग्य ( सब्ब ) सम्पूर्ण ( लोअ ) लोगोंसे  
( भाविअ ) ज्ञात ( प्पभाव ) माहात्म्यसे ( णेअ )  
जाननेलायक ( संति ) हे शान्तिनाथस्वामी ( मे ) मुझे  
( समाहिं ) अंतःकरणकी स्वरयता ( पइस ) देओ ।

( भावार्थ )

देव और दानवोंके इन्द्रसे द्वादश सूर्योंसे और द्वादश चन्द्रमाओंसे घन्दना कियेगए, रोगरहित, प्रीतिको उत्पन्न करनेवाला अतिप्रख्यात और परमसुन्दर है स्वरूप जिनका, देदीप्यमान चांदीके पात्रसमान घन निर्मल अरुण और सफेद है दांतोंकी पंक्तियां जिनकी, शक्तिसे कीर्तिसे निर्लोभतासे न्याययुक्त वचनोंसे अत्यन्त श्रेष्ठ, प्रकाशमान तेजकेसमूह रूप, ध्यानकेयोग्य, सब लोकोमें प्रख्यात महात्म्यसे जाननेलायक, ऐसे हे शान्तिनाथस्वामी, आप मुझे अन्तःकरणकी स्वरथता देओ।

( कुसुमलताछंदः )

॥ कुसुमलया ॥

॥ युगलं ॥

विमलशशिकलातिरेकसौम्यं । वितिमिरसूरकराइ-  
रेअतेअं ॥ तिअसवडगणाइरेअरुद्रं । धराणिधरप्प-  
वराइरेअसारं ॥ १५ ॥

( छाया )

विमल शशिकलातिरेकसौम्यं वितिमिरसूर्यकरातिरेक-  
तेजसं त्रिदशपतिगणातिरेकरूपं धराणिधरप्रवरातिरेकसारम् ।

## ( पदार्थ )

( विमल ) निर्मल ( ससिकला ) चन्द्रकलासे भी  
 ( अइरेअ ) अधिक है ( सोम्मं ) सौंदर्य जिनका  
 ( वितिभिर ) मेघरहित ( सूगकर ) सूर्यकिरणोंसे भी  
 ( अइरेअ ) अधिक है ( तेअं ) तेज जिनका ( तिअसवइ )  
 इन्द्रोंके ( गण ) समुदायसे भी ( अइरेअ ) अधिक है  
 ( रूवं ) स्वरूप जिनका ( धरणिघर ) पर्वतोंमें ( प्पवर )  
 श्रेष्ठ जो मेरुपर्वत उससे भी ( अइरेअ ) अधिक है  
 ( सारं ) स्थिरता जिनकी ।

## ( भावार्थ )

निर्मल चन्द्रकलासे भी अधिकतर है सौंदर्य जिनका,  
 मेघरहित सूर्यकिरणोंसे भी अधिकतर है तेज जिनका,  
 देवताओंके पति इन्द्रादिकों के समूहसे भी अधिक है  
 स्वरूपजिनका, पर्वतोंमें श्रेष्ठतम सुमेरुपर्वतसे भी अधिक  
 है स्थिरता जिनकी ।

( भुजंगपरिरिंगितछंदः )

( भुजंगपरिरिंगिअं )

सत्तेअ सया अजिअं सारीरेअ वले अजिअं ।

नवसंजमेअ अजिअं एस अहं धुणामि जिणं  
अंजिअं ॥ १६ ॥

( छाया )

सत्वे सदा अजितं शरीरे बले अजितम् तपःसंयमे  
अजितं ( एतादृशं ) अजितं जिनं एषः अहं स्तौमि । ।

( पदार्थ )

( सत्तेअ ) व्यवसायमें ( सया ) निरंतर (अजिअं)  
न जीते जानेवाले ( शरीरेअ ) शरीरके ( बले ) बलमें  
( अजिअं ) न जीते जानेवाले ( तव ) बारह प्रकार के  
तपमें और ( संजमे ) सतरह प्रकारके संयममें (अजिअं)  
न जीतेजानेवाले ऐसे ( जिणं ) जिनभगवान (अजिअं)  
अजितनाथ स्वामीकी ( एस ) यह (अहं) मैं (धुणामि)  
स्तुति करताहूं ।

( भावार्थ )

उद्योगमें सर्वकाल न किसीसे जीते जानेवाले देह  
संबंधी बलमें भी न किसीसे जीतेजानेवाले बारह प्रकार  
के तप और सतरह प्रकारके संयममें भी अजित ऐसे  
जिनभगवान अजितनाथ स्वामीकी यह मैं स्तुति  
करताहूं ।

( खिजितकच्छन्दः )

॥ खिजिययं ॥

सोम्मगुणेहिं पावइ नतं नवसारयससी । ते-  
अगुणेहिं पावइनतं नवसरयस्वी ॥ रूवगुणेहिं  
पावइनतं तिअसगणवई । सारगुणेहिं पावइनतं  
धरणिधरवई ॥ १७ ॥

( छाया )

नवशारदशशी सौम्यगुणैः तं न प्राप्नोति नवशारदविः  
तेजोगुणैः तं न प्राप्नोति त्रिदशगणपतिः रूपगुणैः तं न  
प्राप्नोति धरणिधरपतिः सारगुणैः तं न प्राप्नोति ।

( पदार्थ )

( नव ) उदयहोनेत्राला ( सारय ) शादकृतु संबंधी  
( ससी ) चांद ( सोम्मगुणेहिं ) आल्हादकत्वादि  
गुणोंसे ( तं ) अजितनाथ स्वामीको ( न ) नहीं ( पावइ )  
प्राप्त होसकता ( नव ) नया ( सरय ) शरत्काल संबंधी  
( स्वी ) सूर्य ( तेअगुणेहिं ) प्रचंडतापादि गुणोंसे ( तं )  
अजितनाथ स्वामीको ( न ) नहीं ( पावइ ) प्राप्त  
होसकता ( तिअस ) देवताओंके ( गग ) समुदायका  
( वई ) पति इन्द्र ( रूव गुणेहिं ) सौंदर्यादि गुणोंसे

( तं ) अजितनाथ स्वामीको ( न ) नहीं ( पावइ )  
 प्राप्त होसकता ( परनिधर ) पर्वतोंका ( यहँ ) पति  
 सुमेरुपर्वत ( सारगुणेहिँ ) शैर्ष्यादि गुणोंसे ( तं )  
 अजितनाथ स्वामीको ( न ) नहीं ( पावइ ) प्राप्त  
 होसकता ।

( भावार्थ )

उदय होनेवाला शरदऋतुका चांद अपने आल्हादक,  
 त्वादि गुणोंसे अजितनाथ स्वामीकी धराधरी नहीं कर  
 सकता, नया शरतकालिक सूर्य अपने प्रचण्ड तापादि  
 गुणोंसे अजितनाथ स्वामी की धराधरी नहीं करसकता,  
 देवोंका पति इन्द्र भी अपने सौंदर्यादि गुणोंसे अजित-  
 नाथ स्वामी की धराधरी नहीं करसकता, तथा पर्वतोंका  
 स्वामी मेरुपर्वत भी अपने निश्चलतादि गुणोंसे अजित-  
 नाथ स्वामी की धराधरी नहीं करसकता ।

( ललितकण्ठदः )

( ललिअयं )

तित्थवरपवत्तयं तमरयराहियं धीरजणथुआभिर्ज  
 चुअकालिकत्तुसं । संतिसुहपवत्तयं, तिगरणपयओं  
 संति महं पद्दामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥



## ( छाया )

तीर्थवरप्रवर्तकं तमोरजोरहितं धीरजनस्तुतार्चितं  
 च्युतकलिकलुपं शांतिसुखप्रवृत्तदं ( अथवा ) शांतिसुख  
 प्रवृत्तकं त्रिकरणैः ( मनोवाक्कायैः ) प्रयतः अहं महामुनिं  
 शान्तिं शरणं उपनमे. ( शांतिसुखप्रवृत्तान् दयते पाल-  
 यति स शान्तिसुखप्रवृत्तदः तम् )

## ( पदार्थ )

( तित्थवर ) सकल तीर्थोंसे श्रेष्ठ तीर्थको ( पवत्तयं )  
 प्रवृत्त करनेवाले ( तम ) तमोगुण और ( रय ) रजोगुण  
 से ( रहिय ) रहित ( धरिजण ) पण्डितजनों से  
 ( शुअच्चिअं ) स्तुति कियेगये और पुष्पोंसे पूजित  
 ( चुअ ) नष्ट होगयाहै ( कलिकलुसं ) वैर और  
 मनका मेलापन जिनका ( संतिसुह ) मोक्षसुखमें ( पवत्त )  
 लगेहुए जनोंको ( यं ) पालन करनेवाले ऐसे ( महामुणिं )  
 महामुनि ( संतिं ) शान्तिनाथ स्वामी को ( तिगरण )  
 मन वचन कायसे ( पयओ ) पवित्र होकर ( सरणं )  
 शरण ( उपणमे ) जाताहूँ ।

## ( भावार्थ )

श्रेष्ठ चतुर्वेण संघको प्रवृत्त करनेवाले, तमोगुण और

रजागुगसे रहित, पण्डितजनोने धाणीसे रतुनि की है  
जिनकी मोक्षमुखार्थी, लोगोंको रक्षण करनेवाले ऐसे  
महामुनि शान्तिनाथ रशमीको मन दचन कायसे  
उत्तंठित होकर भी क्षरण जाताहूँ ।

( किसलयमालछंदः )

॥ किसलयमाला ॥

॥ विशेषकं ॥

विणओणयसिरइअंजलिरिसिगणसंथुअंथिमिअं  
विधुहाहिवधणवइनरवइधुयमहिअचिअं बहुसो अइ-  
रुगय सरयादिवायरस महिअ सप्पभंतवसा गगणं-  
गणविहरणत्तमुइअचारणवंदिअं सिरस्ता ॥ १९ ॥

( छाया )

विनयावनतशिरोरचितांजलि ऋषिगणसंस्तुतम् स्तिमितं  
त्रिधुषाधिपघनपतिनरपतिभिः क्रमेण स्तुतं महितं बहुशः  
अर्चितं. तपसा अचिरोद्गतशरद्विवाकरसमधिकस्वप्रभं  
शिरस्ता गमनांगणविरहणसमुदितचारणवंदितम् ।

( पदार्थ )

( विणओणय ) विनयसे इक्केहुए ( सिर ) मस्तकें  
पर ( रइ ) रचितहैं ( अंजलि ) अंजलि जिन्होंने

(रिसिगण) ऐसे ऋषियोंके समुदायने (संथुअं) स्तुतिकी है जिनकी, ( थिमिअं ) निश्चयसे ( विबुहाहिव ) इन्द्र (धणवइ) धनदादिलोकपाल और ( नरवइ ) राजाओंने ( धुय ) स्तुति की है जिनकी ( महि ) पूजा की है जिनकी ( बहुसो ) अनेकवार ( अच्चिअं ) पुष्पादिकों से अर्चनाकी है जिनकी, (तवसा) तपश्चार्यासे (अइरुग्गय) तत्काल उगाहुआ ( सरयदियायर ) शरतकालिक सूर्य से ( समहिअ ) अधिकहै ( सप्पभं ) स्वर्गीय शान्ति जिनकी, ( सिरसा ) मस्तकसे ( गगणंगण ) आकाश में ( विरहण ) संचारसे ( समुइअ ) समुद्रित (चारण) जंघाचारणादि मुनियोंने ( वदिअं ) वन्दन किया है जिनको ।

### ( भावार्थ )

विनयसे शुक्रेदृष्ट मस्तकों पर अंजलियां रख ऋषियों ने स्तुति की है जिनकी, देवाधिपति इन्द्रने अपनी वाणीद्वारा निश्चयपूर्वक स्तुति की है जिनकी, धनदादि लोकपालने प्रणानादिकों से पूजा की है जिनकी, और राजाओंने पुष्पादि द्रव्योंसे अनेकवार अर्चना की है जिनकी, मन्त्रोंद्वारा मन्त्राद्युक्त उदयानादिकोंकी प्रशंसा

के सूर्यसे भी अधिक है स्वस्मिन्ति जिनकी, आकाश में  
विहार करनेवाले जंघाचारणादि मुनियोंने स्वमस्तक से  
वंदना की है जिनको ।

( सुमुखंछंदः )

॥ सुमुहं ॥

असुरगरुडपरिवंदिअं किन्नरोगणमं सिअं । देव  
कोडिसपसंधुयं समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥

( छाया )

असुरगरुडपरिवंदितं किन्नरोग नमस्तितं देवकोटिशत  
संस्तुतं समणसंघपरिवंदितम् ।

( पदार्थ )

( असुर ) असुरकुमार ( गरुड ) सुपर्णकुमारादि  
भवनवासी देवताओंने ( परि ) आसपासआकर ( वंदिअं )  
वंदन किया है जिनको, ( किन्नरोगण ) किन्नर निकाय  
और व्यंतरनिकाय जातीके देवताओंने ( णमंसिअं )  
नमन कियाहै जिनको, ( देवकोडिसप ) सोकोट देवताओं  
ने ( संधुयं ) स्तुति कीहै जिनकी, ( समण ) साधुओं  
ने और ( संघ ) श्रावक श्राविकाओंने ( परिवंदिअं )  
भवन कियाहै जिनका. ( समणसंघः साधुसमुदाय ) ।

( भावार्थ )

असुरकुमार सुपर्णकुमार और भवनवासी देवताओंने आसपास आकर वंदनकिया है जिनको, किन्नरनिकाय और व्यंतरनिकाय के देवताओंने नमस्कार किया है जिनको, सोकोट देवताओंने तथा साधु साध्वी श्रावक श्राविकाओं ने स्तुति की है जिनकी ।

( विद्युद्विलसितच्छंदः )

॥ विज्जुविलसिअं ॥

अभयं अणहं अरयं अरुजं अजिअं अजिअं  
पयओ पणमे ॥ २१ ॥

( छाया )

अनयं अनणं अरतं अरुजं अजितं अजिनं पदतः  
प्रणमाभि ( पदतः पादयो आद्यादित्वात्तस् ) ।

( पदार्थ )

( अनयं ) सतात्रियमय गहित ( अणहं ) पापरहित  
( अरयं ) आसक्तिरहित ( अरुजं ) रोगरहित ( अजिअं )  
कामक्रोधादि शत्रुओंसे अनभिभूत एसे ( अजिनं )  
रक्षाधी के ( पयओ ) चण्णोंमें ( पणमे )

कम्पनाहं ।



आये हुए, ( संसभमो ) जलद्रीसे ( अरण ) आकाशसे  
 उतरने से ( वसुभिअ ) संचलित ( लुलिअ ) लुलित  
 ( चल ) चंचल ऐसे ( कुंडल ) कानके आभूषण  
 ( अंगय ) बाहुभूषण ( किरीड ) मुकुटों से ( सोहंत )  
 शोभायमान हैं ( मउलिनाला ) शिरःपंक्ति जिन्होंकी ।

( भावार्थ )

श्रेष्ठ विमान सुन्दर सोनेकेरय और घोडे इत्यादि  
 वाहनों से शीघ्रही आये हुए और जलद्री आकाश से  
 उतरनेसे चलायमान लुलित और चंचल ऐसे कुण्डल  
 बाहुभूषण और मुकुटों से शोभायमान हैं शिरः पंक्ति  
 जिन्होंकी ।

( रत्नमालाच्छंदः )

रयणमाला

जं सुरसंघा सासुरसंघा वेगविउत्ता भक्तिमुनुत्ता  
 आयरभूसिअसं भमपिंढिअसुद्दुमुविभिहअसव्व-  
 बल्लोया । उत्तमकंचणरयणपरुविअभासुरभूषणभा  
 छरिस्रंगा गायसमोणय भत्तिवत्तागय पंजलिये  
 सिअसीसपणामा ॥ २३ ॥

( छाया )

धैरं त्रियुक्ताः भाक्तिमुयुक्ताः आदरभूषितसंभ्रमपिंडित  
मुष्टुमुत्रिश्मिनसर्वश्रेष्ठाः उत्तमकांचनरत्नप्ररूपितभा-  
रदरभूषणभारभंगिताङ्गाः गाध्रसमन्ततभाक्तियशंगतमांजलि-  
प्रेषितशिरःप्रणामाः पृतादृशाः सासुरसंघाः सुरसंघाः  
यं प्रति ।

( पदार्थ )

( धैरं त्रियुक्ता ) शत्रुतासे रहित ( भक्तिमुयुक्ता )  
सद्भाक्ति-सहित ( आदर ) याह्योपधारसे ( भूषित )  
भूषित ( संभ्रम ) सत्वर ( पिंडित ) मिलेहुए ( मुष्टु )  
अत्यर्थ ( मुत्रिश्मिन् ) आश्चर्यमुक्त है ( सन्ववलोच्य )  
सम्पूर्ण वाहनादि समुदाय जिन्होंका, ( उत्तम ) देदीप्यमान  
( कंचन ) सुरग और ( रत्न ) रत्नोंसे ( पररूपित )  
कियेहुए ( भार ) प्रकाशमान ( भूषण ) अलंकारोंसे  
( गाध्र ) सुशोभित हैं ( अंगा ) अंग जिन्होंके  
( गाय ) गाध्रसे ( समोणय ) सम्यक् नमोहुए और  
( भाक्ति ) भाक्तिके ( वसागय ) वशीभूत ( पंजलि )  
उत्तरपर रथापित कियेहुए मुकुटाकृति हस्तपुगलद्वारा  
( पौसिअ ) किया है ( सांसपणामा ) मस्तकसे प्रणाम



जिन्होंने, ऐसे ( सासुरसंघाः ) असुर देवताओंके संघ के साथ ( सुरसंघ ) सुर देवताओंके संघ ।

( भावार्थ )

वैरभावसे रहित, भक्तिपूर्वक बाह्योपचारसे भूषित सत्वरः मिले हुए अत्यन्त आश्चर्ययुक्त हैं सैन्यसमुदाय जिन्होंने, उत्तम सुवर्णमय और रत्नजडित देदीप्यमान अलंकारों से सुशोभित हैं अंग जिन्होंने, शरीरसे भली भांति झुके हुए अत्यन्त प्रेमके वशीभूत होकर हाथजोड़ किया है प्रणाम जिन्होंने ऐसे असुर देवता और सुर देवताओं का संघ ।

( क्षिप्तकच्छदः )

॥ खित्तिअं ॥

वंदिऊण थोऊण तो जिणं तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥

( छाया )

( ते ) सुरासुरा जिं वंदित्वा च ( वाग्भिः ) स्तुत्वा ततः त्रिगुणं प्रदक्षिणं ( कृत्वा ) ( स्वस्थानगमनावसरे ) पुनरपि ( तं ) जिं प्रणम्य प्रमुदिताः सन्तः ततः स्वभवनानि गताः ।

( पदार्थ )

( सुरसुरा ) सुर और असुर देवता ( जिणं )  
जिनभगवानको ( धंदिऊण ) चन्दन कर ( थोऊण )  
घाणो से स्तुति कर ( तो ) अनंतर ( तिगुणमेध )  
तीनही ( पयाहिणं ) प्रदक्षिणा ( कर ) ( य ) और  
( पुणो ) फिर ( जिणं ) जिनभगवान को ( पणमिऊण )  
प्रणामकर ( पमुद्दा ) अत्यन्त हर्षित होकर ( तो )  
अनंतर ( सम्भवणाइं ) स्वभवनको ( गया ) गए ।

( भावार्थ )

सुर और असुर देवता जिन भगवान को चंदन कर  
और घाणोसे स्तुति कर अनंतर तीन प्रदक्षिणा कर अपने  
अपने घर जानेके समय फिर भगवानको प्रणाम कर  
अत्यन्त हर्षित हो अपने अपने घर गए ।

( श्लोककंदः )

॥ खित्तयं ॥

तं महामुणिमहंपिपंजली रागदेसभयमोह  
वज्जिअं । देवदाणव नरिद्वंदिअं सांति मुत्तम-  
महात्तवं नमे ॥ २५ ॥

## ( ज्ञाया )

रागद्वेषभयमोहवर्जितं देवदानानेन्द्रान्वितं उत्तम महा  
तासं तं महामुनिं शान्तिनाथं अहमपि प्रांजलिः  
सन् नमे ।

## ( पदार्थ )

(राग) प्रीति (द्वेष) द्वेष (भय) डर ( मोह ) अज्ञान  
इन्द्रोत्ति (वज्रिअं) रहित (देव) देस्ता (दानव) और दानव  
(नरिंद) राजाओं में (वंदिअं) नमस्कृत अथवा (देवदानव-  
नरिंद) ऊर्ध्वलोकवासी अधोलोकवासी मध्यलोकवासी जीवों  
के (वंदिअं) कारागृह को नाश करनेवाले (उत्तममहातंत्र)  
उत्तम और दीप्त तपश्चर्यावाले ( महामुनि ) महामुनि  
( संति ) शान्तिनाथ स्वामीको ( अहंपि ) मैं भी  
( पंजली ) हाथजोडकर ( नमे ) नमस्कार करताहूँ ।

## ( भावार्थ )

रागद्वेषभय और मोहसे रहित, देवदानव और राजाओं  
ने नमस्कार किया है जिनको, अथवा तीनों लोक के  
जीवोंके संसाररूप कारागृह को तोड़नेवाले, श्रेष्ठ तथा दीर्घ  
तपोव्रतधारी महामुनि शान्तिनाथ स्वामी को मैं भी  
हाथ जोडकर नमस्कार करताहूँ ।

( चतुर्भिःकलापकं )

( दीपकच्छंदः )

॥ दीवयं ॥

अंबरंतर विआरणिआहिं ललिअहंसवहुगामिणि-  
आहिं । पीणसोणथणसालणिआहिं सकलकमल-  
दललोआणिआहिं ॥ २६ ॥

( छाया )

अंबरंतरविहारिणीभिः ललितहंसवधुगामिनीभिः पीन  
श्रोणिस्तनशालिनीभिः सकलकमलदललोचनाभिः ।

( पदार्थ )

( अंबरंतर ) आकाशमार्गमें ( विआरणिआहिं )  
संचार करने वाली ( ललिअ ) सुन्दर ( हंसवहू ) हंस  
पक्षी की स्त्री के समान ( गामिणिआहिं ) गमन करने  
वाली ( पीण ) पुष्ट ( सोण ) नितंब और ( थण )  
स्तनों से ( सालणिआहिं ) शोभायमान ( सकल )  
पूर्ण (कमलदल) कमलपत्रके समान हैं (लोआणिआहिं)  
पत्र जिन्होंके ।

( भावार्थ )

आकाश मार्ग में संचार करनेवाली, सुन्दर हंस पक्षी

की स्त्री के समान गमन करनेवाली, मांसल नितांब और रत्नों से शोभायमान, सम्पूर्ण कमलपत्र के समान हैं नेत्र जिन्होंने ऐसी ।

( चित्राक्षराछंदः )

चित्तकसरा ॥

पीणनिरंतरथणभरविणमिअगायलयाहिं । मणि  
कंचणपासिडिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ॥ वर-  
सिखिणिनेउरमात्तिलयवलयविभूसाणिआहिं ।  
रुकरचउरमणोहरसुंदरदंसाणिआहिं ॥ २७ ॥

( छया )

पीननिरंतरस्तनभरविनमितगात्रलताभिः मणिकांचन  
प्रशिथिलमेखलशोभितश्रोणीतट्टाभिः वरकिकिणीनूपुर  
सत्तिलकवलयविभूषणाभिः रतिकरचतुरमनोहरसुंदर-  
दर्शनाभि ।

( पदार्थ )

( पीण ) मांसल ( निरंतर ) अन्तररहित ( थण )  
स्तनोंके ( भर ) भारसे ( विणमिअ ) नम्रहैं ( गायलयाहिं )  
गात्रलता जिन्होंनेकी ( मणि ) हीरेमाणिक और ( कंचण )  
सोनेके ( पासिडिल ) प्रशिथिल ( मेहल ) मेखलाओंसे

(सोहीअ) मुशोमित हैं (सोणितडाहिं) नितंबघट  
जिन्होंके (वर) श्रेष्ठ (खिखिणि) पायोंके घूघरे और  
(नेउर) नूपुर (सत्तिलय) सुन्दर तिलक (वल्लय)  
कंकण इत्यादि हैं (विभूसणिआहिं) आभूषण जिन्होंके  
(रइकर) प्रीति उत्पन्नकरनेवाले (चउर) चतुरों के  
(मणोहर) मनको आकर्षण करनेवाले (सुंदर)  
रमणीय हैं (दंसणिआहिं) दर्शन जिन्होंके ।

(भावार्थ)

मांसल अन्तररहित स्तनोंके भाससे नम्र हैं गात्रलता  
जिन्होंकी हीरे माणिक्य और सोनेके प्रशिथिल मेललाओं  
से मुशोमित हैं नितंबघट जिन्होंके, सुन्दर पायोंके  
घूघरे, नूपुर, उत्तमतिलक और कंकण इत्यादि आभूषण  
हैं जिन्होंके, प्रीति उत्पन्न करनेवाले, चतुर पुरुषोंके  
अन्तःकरण को आकर्षण करनेवाले और अत्यन्तरमणीय  
हैं दर्शन जिन्होंके ।

(नाराचकछंदः)

॥ नारायणो ॥

देवसुंदरी हिं पायवांदिआहिं वांदिआ य जस्स ते  
सुविपमाक्कमा अप्पणो निडालएहिं मंडणोदुणप-

गारणहिं केहिं केहिं वि अंगतिलयपत्तलेहनाम  
एहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं भक्तिसन्निविष्टवंदणा  
गयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥

( छाया )

कैःकैरप्यपांगतिलकपत्रलेखनामभिः चिल्लगैः मण्डनो  
दुणप्रकारकैः संगताङ्गकामिः पादवृन्दाभिः देवसुन्दरीभिः  
यस्य तौ सुविक्रमौ क्रमौ वन्दितौ च भक्तिसन्निविष्टवन्द-  
नागताभिः ( देवसुन्दरीभिः ) आत्मनः ललाटकैः तौ  
क्रमौ पुनःपुनर्वन्दितौ भवतः ( चिल्लगैः चित्तं लगन्तीति  
चिल्लगाः तैः चिल्लगैः अतिरम्यैरित्यर्थः ) ।

( पदार्थ )

( केहिं केहिं ) वे अपूर्व ( वि ) भी ( अंग )  
नेत्रोंमें काजलकी रचना ( तिलय ) तिलक ( पत्तलेह )  
कस्तूरी की स्तनोंपर विशेष रचना इत्यादि ( नामएहिं )  
नाम हैं जिन्होंके ( चिल्लएहिं ) अतिरम्य ( मण्डण )  
आभूषणोंकी ( उदुण ) रचनाओं के ( पगारएहिं )  
प्रकार से ( संगयं ) युक्त हैं ( अंगयाहिं ) शरीर जिन्हों  
का ऐसी ( पाय ) शरीर के अथवा आभूषणोंके किरणों  
के ( वंदिआहिं ) समुदाय है जिन्होंपर ऐसी ( देसुन्दरीहिं )

देवांगनाओंसे ( जस्त ) जिनभगवानके ( ते ) वे प्रसिद्ध  
 ( सुविष्टमा ) अत्यन्त पराक्रमशाली ( वन्मा ) चरण  
 ( वन्दिआ ) वन्दना कियेगए ( य ) और ( भात्ति )  
 अत्यन्त प्रेमसे ( संनिविष्ट ) व्याप्त ( वंदण ) नमस्कार  
 के हेतु ( आगयाहँ ) आई हुई देवांगनाओं से  
 ( अप्पणो ) अपने ( निडालणहँ ) प्रशस्त ललाटसे  
 ( ते ) वे चरण ( पुणो पुणो ) बारबार ( वन्दिआ )  
 वन्दित ( हुन्ति ) होतेहँ ।

( भावार्थ )

अपूर्व अपांग तिलक और पत्रलेख इत्यादि नामों से  
 विख्यातरचनाओंसे और आभूषणोंकी रचनाओंके प्रकार  
 से भूषित हँ शरीर जिन्होंके और आभूषणोंके किरणोंसे  
 मण्डित ऐसी देवाङ्गनाओंने जिनभगवानके पराक्रम शाली  
 चरणोंकी वन्दन किया आर अत्यन्त प्रेमसे प्रपूरित  
 नमस्कारके हेतु फिर आईहुई देवांगनाओंने उन चरणों  
 को बारबार नमस्कार किया ।

( नन्दितकलंदः )

नन्दिअयम् ॥

तमहं जिणचंदं आजिअं जिअमोहं धुपसच्च-  
 किलेसं पयओ पणमामि ॥ २५ ॥



( छाया )

जिनचन्द्रं जितमोहं धुतसर्वक्लेशं तं अजितं प्रयतःअहं  
प्रणमामि ।

( पदार्थ )

( जिणचंद्रं ) सामान्य केवलियों में चांदके समान  
( जियमोहं ) जीतलिये हैं सांसारिकमोह जिनने (धुय)  
धोडाले हैं ( सब्ब ) सम्पूर्ण ( किलेशं ) क्लेश जिनने  
ऐसे ( तं ) थे प्रसिद्ध ( अजिअं ) अजितनाथ स्वामी  
को ( पयओ ) पवित्र होकर ( अहं ) मैं ( पणमामि )  
नमस्कार करताहूं ।

( भावार्थ )

सामान्य केवलियोंमें चांदके समान जीतालिये हैं  
सांसारिक मोह जिनने धोडालेहैं सम्पूर्ण क्लेश जिनने ऐसे  
थे प्रसिद्ध अजितनाथ स्वामीको मैं पवित्र होकर नमस्कार  
करताहू ।

( भासुरकंठदः )

युगलं

धुयवंदिअस्सा रिसिगणदेवगणेहिं तो देववहूहिं  
पयओ पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तमसासणयस्सा  
भत्तिवसागयापिंडिअयाहिं देवरच्छरसा बहुयाहिं  
सुखररइ गुणपिण्डअयाहिं ॥ ३० ॥

( छाया )

भाक्तिवशागतपिंडितकामिः देववराप्तसरोबहुकामिः सुरवर  
रतिगुणपण्डितकामिः देववधूमिः प्रयतं वा पदयोः प्रणतकरस्य  
जास्यजगदुच्चमशासनस्य तौ ( क्रमौ ) ऋषिगणदेवगणैः  
स्तुतवन्दितौ ।

( पदार्थ )

( भाक्तिवशागत ) भाक्तिवशाहोकर देवलोकसे आकर  
( पिंडितकामि ) मिलीबुई ( देववर ) नृत्यकलामें श्रेष्ठ  
देव और ( अच्छरसा ) अपसराओंका ( बहुकामि )  
समुदायोंसे ( सुरवर ) श्रेष्ठ देवताओंकी ( रट ) प्रीति  
के उत्पादक ( गुण ) गुणोंमें ( पंडितकामि ) निपुण  
( देववहूहि ) देवांगनाओंसे ( पदयो ) सम्यक् अधरा  
( चरणोंमें ) ( ऋषिगण ) नमस्कृत ऐसे ( जरस )  
मोक्षके हेतु ( जग् ) जगतमें ( उच्चम ) श्रेष्ठ  
( शासनसरसा ) शासन जिनका ऐसे ( अरसा ) जिन  
भगवान के ( तौ ) वे प्रसिद्ध चरण ( रितिगण )  
ऋषिगणों से और ( देवगणैहि ) देवगणों से ( प्रय )  
स्तुति कियेगाए और ( वंदि ) वंदना कियेगाए ।

## ( भावार्थ )

गान और वादनकला में निपुण, देवोंके साथ भाक्ति-  
 चश होकर देवलोक से आकर मिलीहुई अप्सराओंसे,  
 और श्रेष्ठ देवताओंकी प्रीतिको बढ़ानेवाले गुणोंमें पण्डित,  
 ऐसी देवाङ्गनाओंसे सम्यक् नमस्कृत और मोक्षसुखके  
 हेतु जगतमें श्रेष्ठहै शासन जिनका ऐसे जिनभगवानके  
 चरण ऋषि और देवगणोंसे धंदन कियेगए और  
 स्तुति कियेगए ।

## ( नाराचकछंदः )

॥ नारायण ॥

वंससद्द तंतितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्द-  
 मीसए कएअ सुइस्तमाणणेअ सुद्धसज्जगीअपाय-  
 जालघंठिआहिं । वलयमेहलाकलावनेउराभिराम  
 सहमीसए कए अ देवनट्टिआहिं हावभाव-  
 विव्भमपगारएहिं ॥ नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआ  
 य जंस्स ते सुविक्रमा कमा त र्य तिलोय  
 सव्व सत्त संत्तिकारयं । पसंतसव्वपावदोप मेसहं  
 नमामि संत्ति मुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥

( छाया )

धंशरान्दतंत्रीतालमित्रिने त्रिपुष्कराभिरामशब्दमिश्रके  
 कृते च श्रुतिसमानने कृते शुद्धपट्टजर्गातपादजालघंटिकाभिः  
 उपलक्षिते बलयमेखलाकलापनूपुराभिरामशब्दमिश्रके  
 कृते ( सति ) हावभावविभूमप्रकारकैः अङ्गहारैः  
 नर्तित्वा देवनर्तकीभिः यस्य तौ सुविक्रमौ क्रमौ वन्दितौ  
 तं त्रिलोकसर्वशान्तिकारकं प्रशान्तसर्वपापदोषं उत्तमं  
 जिनं शान्तिनामानं एष अहं नमामि ।

( पदार्थ )

( बंस सह ) धांसुरी की ध्वनि ( तांवि ) धीणा और  
 ( ताल ) तालसे ( मेलिए ) मिलेहुए ( तिउक्खर )  
 आतोषवाद्य, दर्दरट, और मुरज इन्होंके मुखके  
 ( अभिराम ) मधुर ( सह ) शब्द से ( भीसए )  
 मिश्रित ( कए ) कियेसते ( अ ) और ( सुई )  
 संगीत शास्त्रोक्त श्रुतियोंका ( समरणे ) समीकरण  
 कियेसते ( अ ) और ( सुद्ध ) शुद्ध ( सज्ज ) पहज-  
 स्वरसे ( गीअ ) गीतकेसाथ ( पायजालघंटिआहिं )  
 त्रयोमें किंकिणियाओंसे उपलक्षित और ( बलय ) बंकरण  
 मेहला ) कंदोष ( बलाव ) भूषण, और ( नेउर )

नूपुर इन्होंके ( अभिराम ) मनोहर ( सद् ) शब्दोंसे  
 ( मीसए ) मिश्रित ( कए ) कियेसते ( अ ) और  
 ( हाव ) बहुतकाम विकार (भाव) थोडा विकाराभिप्राय  
 ( विभ्रम ) विलास ये हैं ( पगारएहिं ) प्रकार जिसमें  
 ऐसे ( अंगहारएहिं ) अंगविक्षेपोंसे ( नच्चिऊण ) नाचकर  
 ( देवनट्टिआहिं ) देवताओं के सामने नाचनेवाली  
 देवांगनाओंसे ( जस्स ) जिनभगवानके ( सुविक्कमा )  
 अत्यन्त पराक्रमशाली ( ते ) वे प्रसिद्ध ( कमा ) चरण  
 ( वंदिआ ) वन्दन कियेगए ( तयं ) वे प्रसिद्ध ( तिलोष )  
 तीनों लोकमें ( सब्ब ) सम्पूर्ण ( सच्च ) जीवोंको  
 ( संतिकारयं ) विघ्नोपशम करनेवाले ( पसंत ) नष्ट  
 होगये हैं ( सब्ब ) सब ( पाव ) पापरूप ( दोस )  
 दोष जिनके ( उच्चमं ) श्रेष्ठ ( जिणं ) जिनभगवान  
 ( संतिं ) शान्तिनाथस्वामी को ( एस ) यह ( अहं )  
 मैं ( नमामि ) नमस्कार करताहूं ।

### ( भावार्थ )

धंसी सतार और तालसे मिलेहुए और आतोदवाद्य  
 दर्दुरट और मुरज इन्हों की मधुर ध्वनिसे मिश्रित  
 संगीत शास्त्रोक्त श्रुतियोंका समकीरण कियेसते शुद्ध

पद्मस्वर से गीतके साथ पावोंकी किंकीणियोंके शब्दसे मिले हुए कंकण नूपुरआदि आभूषणों के मधुर शब्दसे मिश्रित, हावभावकटाक्षादिपूर्वके अंगविक्षेपोंसे युक्त नृत्यकर देवनर्तकीओंने अत्यन्त पराक्रमशाली जिनभगवान के चरणरुमलों को नमस्कार किया वे प्रसिद्ध तीनों लोकमें जीवोंके दिवनोंको नाशकरनेवाले पाप दोषसे रहित ऐसे श्रेष्ठ जिनभगवान शान्तिनाथ स्वामीको मैं भी नमस्कार करता हूँ ।

( ललितकच्छदः )

ललिअयम्

॥ त्रिभिर्विशेषकम् ॥

छत्रचामरपद्मागजूवज्रवभण्डिआ ज्ज्ञयवस्मगर  
तुरय सिरिवच्छमुलंछणा । दीवत्समुद्रमंदरदिसा-  
गयसोहिया सत्थिअवसहसीह सिरिवच्छमु-  
लंछणा ॥ १२ ॥

( छाया )

छत्रचामरपताकायूपयवभाण्डिताः परजत्रमकरतुराग  
थीवत्समुद्राच्छनाः दीवत्समुद्रमन्दर—दिग्गजशोनिताः  
स्वस्तिरूपमसिहथीवृक्षमुद्राच्छनाः ।

## ( पदार्थ )

( छत्र ) छत्र ( चामर ) चामर ( पङ्गा ) पताका  
 ( जूव ) स्तंभ ( जव ) यव इत्यादि चिन्होंसे ( मंडिआ )  
 शोभित ( ज्ञयवर ) श्रेष्ठध्वज ( मगर ) मकर ( तुरय )  
 अश्व ( सिरिवच्छ ) श्रीवत्स इत्यादि है ( मुलंछणा )  
 सुलांछन जिन्होंमें ( दीव ) द्वीप ( समुद्र ) समुद्र  
 ( मंदर ) सुमेरुपर्वत ( दिसागय ) दिग्गज इन्होंसे  
 ( सोहिआ ) शोभित ( सतियअ ) स्वस्तिक ( वसह )  
 वृषभ ( सीह ) सिंह ( सिरि ) लक्ष्मी ( वच्छ ) वृक्ष  
 इत्यादि ( मुलंछणा ) लक्षण हैं जिन्होंमें ।

## ( भावार्थ )

छत्र चामर पताका स्तंभ यव श्रेष्ठध्वज मकर अश्व  
 श्रीवत्स द्वीप समुद्र सुमेरुपर्वत दिग्गज स्वस्तिक वृषभ  
 सिंह लक्ष्मी वृक्ष इत्यादि चिन्होंसे सुशोभित ।

## ( वानवासिकछंदः )

॥ वाणवासिआ ॥

सहावलट्टा समपइट्टा अदोसदुट्टा गुणेहिं जिट्टा ।  
 पसाय सिट्टा तवेण पुट्टा सिरीहिं इट्टा रितीहिं  
 जुट्टा ॥ ३३ ॥

( छाया )

स्वभावलयाः शमप्रतिष्ठाः अदोषदुष्टाः गुणैः जेष्ठाः  
प्रसादश्रेष्ठाः तपसा पुष्टाः श्रिया इष्टाः ऋषिभिः जुष्टाः ।

( पदार्थ )

( सहाय ) स्वभाव से ( लडा ) शोभायमान (सम)  
शान्तिसे (पड्डा) युक्त अथवा (असमप्रतिष्ठा=निरूपम  
है स्व्याति जिन्होंकी ) ( अदोषदुष्टा ) वैषम्यरगादिकों  
से विकाररहित ( गुणोहिं ) सदुणोंसे ( जिष्टा ) घड़े  
( पसाय ) निर्मलतासे ( सिष्टा ) श्रेष्ठ ( तवेण )  
तपोबलसे ( पुष्टा ) पुष्ट ( सिरीहिं ) लक्ष्मीसे ( इष्टा )  
पूजित ( रिशीहिं ) ऋषियोंसे ( जुष्टा ) सेव्यमान ।

( भावार्थ )

स्वभावसे शोभायमान शान्तियुक्त वैषम्य रगादिकोंसे  
विकाररहित सदुणोंसे युक्त निर्मलतासे श्रेष्ठ तपश्चम्यसे  
पुष्ट लक्ष्मीसेपूजित ऋषियोंसे सेव्यमान ।

( अपरांतिकाहंदाः )

॥ अपरांतिया ॥

ते तवेण धुयसव्वपावया सव्वलोआहिअमूल  
पावया । संयुया अजिअसंतिपयया इंतु मे सिव-  
सुहाणदायया ॥ ३५ ॥



( द्याया )

तपसा धुतसर्वपापकाः सर्वलोकहितमूलप्रापकाः ते  
अजितशान्तिपादाः संस्तुताः ( सन्तः ) मे शिवसुखानां  
दायकाः भवन्तु ( संस्तुताः शंमुखहेतुस्तुतं येषां ) ।

( पदार्थ )

( तत्रेण ) तपश्चर्यासे ( धुय ) नष्ट होगए हैं ( सच्च )  
सम्पूर्ण ( पावया ) पातक जिन्होंके ( सर्व ) सम्पूर्ण  
( लोअ ) लोकके ( हिअ ) मोक्षास्व्यहितके ( मूल )  
ज्ञानदर्शन चरित्ररूप मूलको ( पावया ) प्राप्तकराने  
वाले ( ते ) पूर्वोक्त ( अजिअ ) अजितनाथ स्वामी के  
और ( संति ) शान्तिनाथ स्वामी के ( पावया ) चरण  
( संस्तुताः ) सम्यक् वर्णन कियेसते ( संस्तुता ) सुख  
हेतुक स्तवनहै जिन्होंका ( मे ) मुझे ( सिव ) मोक्षरूप  
( सुहाण ) सुखके ( दायया ) देनेवाले ( हुंतु ) होओ ।

( भावार्थ )

तपोबलसे प्रनष्टहोगए हैं सम्पूर्ण पातक जिन्होंके  
सम्पूर्ण लोकके मोक्षास्व्यहितके ज्ञानदर्शन चरित्ररूप  
मूलको प्राप्तकरानेवाले. सुखहेतुक स्तवनहै जिन्होंका  
ऐसे अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीके चरण मुझे  
मोक्षरूप सुख देनेवाले होओ ।

( गाथा छंदः )

॥ गाहा ॥

एवं तवबलाविउलं. धुअं मए अजिअसंति जिण  
जुयलं ववगयकम्मस्यमलं गइं गयं सासयां  
विमलां ॥ ३५ ॥

( छाया )

तपोबल विपुलं व्यपगतकर्मरजोमलं शाश्वतीं विमलां  
गतिं गतं ( एतादृशं ) अजितशान्तिजिनपुमलं मया  
एवं स्तुतम् ।

( पदार्थ )

( तवबल ) तपोबलसे ( विउलं ) विशाल (ववगय)  
नष्टहोगयाहै ( कम्म ) ज्ञानावरणादि आठ कर्म और  
( स्यमलं ) घप्यमान कर्मोंकामल जिन्होंका (सासयां)  
आद्यन्तरहित ( विमलां ) कर्ममलसे रहित ( गइं )  
मोक्षरूप गतिको ( गयं ) पहुंचेहुए ऐसे ( अजिअसंति  
जिणजुयलं ) दोनो जिनभगवान अजितनाथ और  
शान्तिनाथस्वामी ( मए ) मुझसे ( एवं ) इस शका  
( धुअं ) स्तुति कियेगये ।

( भावार्थ )

तपोवलसे विशाल नष्ट होगया है ज्ञानावरणादि आठ  
वध्यमान कर्मोंका मल जिन्होंका आद्यन्तरहित निर्मल  
मोक्षास्व्य गतिको पहुंचेहुए ऐसे दोनों अजितनाथ और  
शान्तिनाथस्वामी की इस प्रकार मैने स्तुति की ।

( गाथाछंदः )

॥ गाहा ॥

तं बहुगुणप्पसायं मुक्खमुहेण परमेण अविंसायं ।  
नामेउमेविंसायं कुणउअपरिंसाविअपसायं ॥ ३६ ॥

( छाया )

बहुगुणप्रसादं परमेण मोक्षमुखेन अविपादं एतादृशं  
तन् जिनयुगलं मे विपादं नाशयतु च परिपदपि प्रसादं  
करोतु ।

बहुगुणानां प्रसादो नैर्मल्यं यस्य अथवा बहुगुण  
प्रसादोऽनुग्रहो यस्य तन् ( ? ) मदुत्तेर्गुणम्वीकरण-  
दृषगावर्धरणलक्षण मनुग्रहं मयि करोतु ।

( पदार्थ )

( बहुगुण ) ज्ञानादि अनेक गुणोंका ( प्यसायं )

प्रसाद है जिन्होंको ( परमेण ) उत्तम ( मुखसुहेण )  
मोक्षसुखसे ( अविषायं ) विषादरहित ( तं ) पूर्वोक्त  
जिनयुगल ( मे ) मेरे ( विषायं ) खेदको ( नासेठ )  
नाशकरो ( अ ) और (परिषावि) सभाजननी (पसायं)  
अनुग्रह ( कुण्ड ) करो ।

( भावार्थ )

ज्ञानादि अनेक गुणोंका प्रसाद है जिन्होंको सर्वोत्तम  
मोक्षसुख होनेसे खेदरहित ऐसे पूर्वोक्त जिनयुगल मेरे  
खेदको नाशकरो और इस स्तोत्रको सुननेवाले सभाजन  
भी मुझपर क्षमारूप अनुग्रह करो ।

( गाथाछंदः )

॥ गान्हा ॥

तंमोएउअनंदिं पावेउनंदिसेणमभिनंदिं । परिषाइ  
विमुहनादिं ममयदिसउसंजमेनंदिं ॥ ३७ ॥

( छाया )

तत् ( जिनयुगलं ) ( लोकानां ) नंदिं मोदयतु  
नंदिपेणञ्च अभिनंदिं प्रापयतु परिपदोऽपि सुखनंदिं  
दिशतु संयमे ममच नंदिं दिशतु ।

## ( पदार्थ )

( तं ) वह जिनयुगल ( नंदिं ) हर्ष ( मोएउ ) करो ( अ ) और ( नंदिसेणं ) नंदिपेण कत्रिको ( अभिनंदिं ) आनंदसमृद्धि ( पावेउं ) प्राप्त कराओ ( परिसाइवि ) श्रोतृजनसभाको भी ( सुहनंदिं ) सुख-समृद्धि ( दिसउ ) देओ ( य ) और ( मम ) मुझे ( संजमं ) सतरहप्रकारके संयममें ( नंदिं ) आनंद ( दिलउ ) देओ ।

## ( भावार्थ )

वे अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामी सम्पूर्ण जीवों को और नंदिपेण कत्रिको आनंद समृद्धि देओ, और श्रोतृजनसभाको भी सुखसमृद्धि देओ और मुझे सतरह प्रकारके संयमोंमें आनंद देओ ।

## ( गाथाछंदः )

॥ गाथा ॥

पक्खिअच्चाउम्मासिअ संवच्छरिए अवत्स भणि-  
अच्चो । सोयच्चो सच्चेहि उवसग्ग निवारणो  
एसो ॥ १८ ॥

## ( छापा )

पाक्षिक्खातुर्मांसिकसांवत्सरिकेषु अवश्यं भणितव्यः।

सर्वैः श्रोतव्यः एषः अजिशान्तिस्तवः उपसर्गनिवारणः  
अस्ति ।

### ( पदार्थ )

( पक्विलअ ) पूर्णिमाको ( चाउम्मासिअ ) चातुर्मास  
में ( संवच्छरिए ) संवत्सरके प्रतिक्रमणके दिन (अवरस)  
अवश्य ( भणिअव्वो ) पठन करना चाहिये और ( सव्वेहिं )  
सर्धोने ( सोयव्वो ) श्रवणकरना चाहिये ( एसो ) यह  
स्तवन ( उवसग्ग ) विघ्नोका ( निवारण ) नाशकरने  
वाला है ।

### ( भावार्थ )

इस सम्पूर्ण विघ्नोको नाशकरनेवाले अजितनाथ और  
शान्तिनाथ स्वामीक स्तवनको पूनमकेदिन चोमासेमें  
और संवत्सरके प्रतिक्रमणके दिन अवश्य सब श्रापकोंने  
पठनकरना चाहिये और श्रवणकरना चाहिये ।

### ( गाथाछंदः )

॥ गाहा ॥

जो पदइजोअनिसुणइ उभओकालंपि अजिम-  
संतिसंधयं । नहु हुंति तस्स रोगा पुव्वुपन्ना  
विनासंति ॥ १९ ॥

## ( छाया )

यः अजितशान्तिस्तत्र उभयकालं पठति निश्चिन्तोति च  
तस्य हु ( निश्चितं ) रोगाः न भवन्ति पूर्वोत्पन्ना अपि  
( रोगाः ) नश्यन्ति ।

## ( पदार्थ )

( जो ) जो मनुष्य ( अजितसंतिसंथयं ) अजित-  
नाथ और शान्तिनाथ स्वामीक स्तवनको ( उभयोकालं )  
प्रातःकाल और सायंकाल ( पठइ ) पठनकरताहै ( अ )  
और ( निसुणइ ) श्रवणकरता है ( तस्स ) उसे  
( रोगा ) शारीरिक पीडा ( हु ) निश्चयसे ( न ) नहीं  
( हुंति ) होतीहै ( पुब्बुपन्ना ) पहिले पैदाहुए रोग  
( पि ) भी ( विनासंति ) नष्ट होतेहैं ।

## ( भावार्थ )

जो मनुष्य अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीके  
स्तवनको प्रातःकाल और सायंकाल पठनकरताहै और  
श्रवणकरताहै उसे शारीरिक पीडा निश्चयसे नहीं होती  
और इस स्तवनके पठनारंभके पहिले पैदाहुए रोगभी  
शान्त होजातेहैं ।

( गाथाछंदः )

॥ गद्य ॥

ववगयककिकल्लुमाणं ववगयनिच्छंदगगदोमाणं ।  
ववगयपुणम्भवाणं नमोत्यु देवाहिदेवाणं ॥ १० ॥

( छया )

व्यगमककिकल्लुपेभ्यः व्यगमनिच्छंदगगदोभ्यः  
व्यगमपुनर्भेभ्यः देशधिदेभ्यः नमः अम्नु ।

( पदार्थ )

( ववगय ) नाशहोगया है ( ककिकल्लुमाणं )  
कल्लहसंश्रंधि मनया मालिन्य जिनया ( ववगयनिच्छं-  
दगगदोमाणं ) नष्ट हागण है गगदेष जिनरे ( ववगय )  
नाशहोगया है ( पुणम्भवाण ) पुनर्भेभ्य इति नमः भ्ये  
( देवाहिदेवाणं ) देशधिदेव तर्धेभ्य नमः अन्वो ( नमः )  
नमस्कारहोओ ।

( भावार्थ )

नाशहोगया है कल्लहसंश्रंधि मनया मालिन्य जिनया नष्ट  
हागण है गगदेष जिनरे नाशहोगया है पुनर्भेभ्य इति नमः  
भ्ये देशधिदेव तर्धेभ्य नमः अन्वो नमः अन्वो ॥ १० ॥



( गाथाछंदः )

॥ गाथा ॥

सर्वं पसमइ पावं पुण्णं वड्ढइ नमंसमाणस्स ।  
संपुन्नचंदवयणस्स कित्तणं अजिअसंतिस्स ॥ ४१ ॥

( छाया )

संपूर्णचन्द्रवदनयोः अजितशान्तिनाथयोः कीर्तनं  
नमस्यमानस्य सर्वं पापं प्रशमयति च पुण्यं वर्धयति ।

( पदार्थ )

(संपुन्न) संपूर्ण (चंद) चन्द्रके समान है (वयणस्स)  
मुख जिन्होंका ऐसे ( अजिअ संतिस्स ) अजितनाथ  
और शान्तिनाथ स्वाभीका ( कित्तणं ) कीर्तन ( नमं  
समाणस्स ) अजित शान्तिनाथ स्वाभीको नमस्कार करने  
वाले पुरुषके ( सर्वं ) सब ( पावं ) पाप ( पसमइ )  
नाश करता है और (पुण्णं) पुण्यको (वड्ढइ) बढ़ाता है।

( भावार्थ )

पूर्णचन्द्रके समान मुख है जिन्होंका ऐसे अजितशा-  
न्तिनाथ स्वामीका कीर्तन अजितशान्तिनाथ स्वामीको  
नमस्कार करनेवाले पुरुषके सब पाप नाश करता है  
और पुण्यको बढ़ाता है ।

( गाथा छंदः )

गाथा

जइ इच्छह परमपयं अहवा किंति सुवित्थडां  
भुवणे ॥ ता तेलुकुद्धरणे जिणवयणे आयरं  
कुणह ॥ ४२ ॥

( छाया )

यदि परमपदं अथवा भुवने सुविस्तृता कीर्ति इच्छष  
तदा त्रैलोक्योद्धरणे जिनवचने आदरं कुरुष्व ।

( पदार्थ )

( जइ ) यदि ( परमपयं ) मोक्षपद ( अहवा )  
अथवा ( भुवणे ) जगतमें ( सुवित्थडा ) अतिविस्तीर्ण  
( किंति ) कीर्ति ( इच्छह ) चाहते हो ( ता ) तो  
( तेलुकुद्धरणे ) लोकत्रयको उद्धार करने वाले ( जिण-  
वयणे ) जिन वचनमें ( आयरं ) आदर ( कुणह )  
करो ।

( भावार्थ )

हे भव्य जीवो यदि मोक्षपद की अभिलाषाहो अपना  
जगतमें अति विस्तीर्ण कीर्तिही इच्छा हो तो तानों  
लोक को उद्धार करने वाले जिनभगवानके वचनों  
आदर करो ।

( स्तोत्रसमाप्तौ मंगलश्लोकाः )

॥ सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारणम् ॥  
 ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥४३॥  
 ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति छिद्यन्ते विघ्नवह्यः ॥  
 मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥  
 ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भन्वतु  
 भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी  
 भवतु लोकः ॥ ४५ ॥  
 ॥ स्मरणं यस्य सत्वानां तीव्रतापोपशांतये ॥  
 ॥ उत्कृष्टगुणरूपाय तस्मै श्रीशान्तये नमः ॥४६॥

इति श्रीनादिपेणसूरिविरचितमजितशान्तिस्तवनमिन्दुरजैनधेताप्यर

पारशालामुख्याध्यापकचोबेकुलोन्दय श्रीगोपीनाथ-

सूनुपाण्डितश्रीकृष्णशर्मकृतमुबोधिनी-

व्याख्योपेतं समाप्तम् ॥

अथ जिनवल्लभसूरिकृतं

“ उल्लासिक ” स्तोत्रं प्रारभ्यते

---

श्रीमहावीरायनमः ॥

॥ गाथा ॥

उल्लासिकमनस्खनिग्गयपहादण्डच्छलेणंगिणं ॥  
रूपादिसन्तइव्वपयहंनिव्वाणमग्गावलिम् ॥  
इन्दुजलदंतकान्तिमिसउं नीहन्तनाणंकुरु ॥  
सोवि दुइज्ज सोलस जिणे त्योस्सामि खेमंकरे ॥१॥

( छाया )

उल्लासिकमनस्खनिर्गतप्रभादण्डच्छलेन यन्दारूणामङ्गिणां  
शोणमार्गावलिं प्रकटं दिशन्ताविध कुन्देन्दु ज्वलदन्त  
नामिपतो निर्य्यञ्जानांकुरोत्करी क्षेमङ्करोद्भावपि  
वियपोडशजिनौ ( अजितशान्तिनामानौ ) ( अहं )

## ( पदार्थ )

( उल्लासि ) देदीप्यमान ( क्रम् ) पावोंके ( नक्ख )  
 नखोंसे ( निग्गय ) निकलीहुई ( पहा ) कान्ति यह  
 ही मानो एक ( दण्ड ) लकड़ी उसके ( छ्लेण )  
 मिपसे ( वन्दारूण ) नमस्कारकरनेवाले ( अङ्गिणं )  
 प्राणियोंको ( निव्वाण ) मोक्षके ( मग्ग ) मार्गकी  
 ( आवल्लिं ) श्रेणीको ( पयडं ) स्पष्टतासे ( दिसन्ती )  
 दिखलानेवालेके ( इव्व ) समान ( कुन्द ) कुन्दके  
 पुष्प और ( इन्दु ) चन्द्रमाके समान ( उज्जल )  
 स्वच्छ ( दन्त ) दांतोंकी ( कान्ति ) प्रभाके ( मिसठ )  
 मिपसे ( नीहन्तं ) निकला है ( नाण ) ज्ञानके  
 ( अंकुर ) अंकुरोंका ( उक्खेरे ) समुदाय जिन्होंसे  
 ( खेमङ्खेरे ) सुखकरनेवाले ( दोवि ) दोनोंकोभी  
 ( दुइज्ज ) दूसरे और ( सोलस ) सोलमें अजित  
 और शान्तिनाथ स्वामी को ( अहं ) मैं जिनबहुभस्वरि  
 ( द्योस्सामि ) स्तुति करताहूं.

## ( भावार्थ )

देदीप्यमान पावोंके नखोंसे निकलीहुईकान्ति यहही  
 मानो एक लकड़ी उसके मिपसे नमस्कारकरनेवाले  
 प्राणियोंको मोक्षके मार्गकी श्रेणीको स्पष्टतासे दिखलाने-

वालेके समान कुन्दपुष्प और चन्द्रमाके समान स्वच्छ दांतोंकी प्रभाके म्रियसे निकला है शानके अंजुयेंका समुदाय जिन्होंसे, सुखकरनेवाले ऐसे दूसरे और सोल हर्षे अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी मैं जिन बह्मसूरि स्तुति करता हूँ.

॥ गाथा ॥

धरमजलहिनीरं जो गिणिजं जलीहिं ॥  
 खयसमयसमीरं जो जणिञ्जा गईए ॥  
 सयलनहयलं वा लंघए जो पएहिं ॥  
 अजियमहव संतिं सो समत्थो धुणेउम् ॥२॥

( छाया )

धरमजलघिनीरं योऽञ्जलिभिर्मिनुयात् क्षयसमय-  
 समीरं यो गत्या जयेत् सदादननस्तलं यः पद्भ्यां  
 लंघयेत् स अजितमधवा शान्तिं स्तोतुं समर्थः ॥

( पदार्थ )

( धरम ), स्वयंभूरमणनामक ( जलहि ), समुद्रके  
 ( नीरं ) जलको ( जो ) जोगनुष्य ( अंजलीहिं )  
 अंजलियोंसे ( गिणिजं ) मापसफ्छहि ( खयसमय )  
 प्रलयकालके ( समीरं ) धायुको ( जो ) . . .

गईए ) गतिसे ( जणिज्झा ) जीतसकता है ( वा )  
 अथवा ( सहल ) सकल ( नहयलं ) आकाशतलको  
 ( जो ) जोमनुष्य ( पर्णहिं ) पावोंसे ( लंघए )  
 उल्लंघनकरसकताहै ( मो ) वह ही ( अजिअं )  
 अजितनाथस्वामीकी ( अहव ) अथवा ( संतिं )  
 शान्तिनाथस्वामीकी ( धुणेउम् ) स्तुतिकरनेको ( समत्थो )  
 समर्थ होताहै.

( भावार्थ )

स्वयंभूरमणनामक समुद्रके जलको जो मनुष्य  
 अंजलियोंसे माप सकताहै प्रलयकालके वायुको जो  
 मनुष्य अपनी गतिसे जीतसकताहै अथवा संपूर्ण  
 आकाशतलको जो मनुष्य पावोंसे उल्लंघनकरसताहै  
 वही मनुष्य अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी  
 स्तुति करनेको समर्थ होताहै.

॥ गाथा ॥

तहवि ह्नु बहुमाणुल्लासभक्तिभरणे ॥  
 गुणकणमवि कित्तेहामि चिन्तामणिव्व ॥  
 अलमहवअचिंता णंतसामत्थओसिम् ॥  
 फलहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥३॥

( छाया )

तथापि बहुमानोच्छ्वासभक्तिभरेण गुणकणमपि चिन्ता  
मणिमिव कीर्तयिष्यामि अथवा अलं अनयोः अचिन्त्या  
नन्तसामर्प्यतः मे सर्व्वं वाञ्छितं लघु निश्चितं  
फलिष्यति.

( पदार्थ )

( तद्वि ) तोभी ( हु ) प्रकट ( बहुमाण ) अन्तः  
करणके प्रेमविशेषसे ( उच्छ्वास ) बड़ीहुई ( भक्ति )  
प्रीतिके ( धरेण ) अतिशयसे ( गुणकणमपि ) गुणले-  
शभी ( चिन्तामणिव्य ) चिन्तामणिके समान ( किन्ते-  
हामि ) कीर्तनकरुंगा ( अथवा ) अथवा ( अलं ) बस  
इस विचारसे ( ओसिं ) इन्होंकी ( अजित और  
शान्तिनाथस्वामी की ) ( अचित ) विचारमें न आने-  
वाली ( अणंत ) अन्त न होनेवाली ( सामर्थ्य ) शक्तिसे  
( मे ) मेरे ( सर्व्वं ) सब ( वाञ्छितं ) इच्छित ( लघु )  
शीघ्रही ( निश्चितं ) निश्चयपूर्वक ( फलहइ )  
फलीभूत होंगे.

( भावार्थ )

तोभी अन्तःकरणके प्रेमविशेषसे बड़ीहुईभक्तिके अति-  
शयसे भगवानका गुणलेशभी चिन्तामणि के समान



कीर्तन करूंगा ( जैसे चिन्तामणिकी थोड़ीभी स्तुति करनेसे बहुत फलमिलताहै वैसेही भगवत्कीर्तन थोड़ाभी करनेसे बहुत फलदेनेवाला होताहै ) अथवा इस विचारसे क्या फलहै? इन अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी विचारमें न आनेवाली अनन्तशक्तिसे मेरे सब वाञ्छित शीघ्रही निश्चयसे फलीभूत होंगे.

॥ गाथा ॥

सयलजयहियाणं नाममित्तेण जाणं ॥  
 विहडइ लहु दुष्टानिष्टदोषट्टघट्टम् ॥  
 नमिग्गुरकिरीड्ढिग्घिट्ट पायारविन्दे ॥  
 सययमजिअसंती ते जिणिन्दे भिवन्दे ॥४॥

( छाया )

अहं नम्रसुरकिरीटोद्घृष्टपादारविन्दौ तौ अजितशान्ति  
 नामानौ जिनेन्द्रा सत्ततं अमिवन्दे सकल जगद्धितयोः  
 ययोः नाममात्रेण दुष्टानिष्टदोषट्टघट्टं लघु विघट्टते.

( पदार्थ )

( नमिर ) नम्र ( सुर ) देवताओंके ( किरीट )  
 मुकुटोंसे ( ऊग्घिट्ट ) उच्चेजितहै ( पायारविन्दे )  
 चरणकमलजिन्होंके ऐसे ( ते ) वे ( अजिअसंती )

अजितनाथ और शान्तिनाथशर्माके ( जिजिम्हे ) जिनेन्द्रनाथशर्माके ( शय्ये ) निरंगर (अभिरम्भे) नमस्कार करगाहूँ ( शयल ) शरत् ( जय ) जगन्ने ( द्विआर्ग ) द्विजकरनेशके ( जाणं ) जिन अजितनाथ और शान्तिनाथशर्माके ( नाममिच्छण ) नाममात्रसे ( दुष्ट ) दुःखजनक (अनिष्ट) प्रियद्वियोंगादिअनिष्टरूप (दोषद्रु) हाथियोंके ( घटम् ) समुदाय ( लड्डु ) शीघ्रही ( विद्वद ) दूरहोजातेहैं.

( भावार्थ )

यौ जो नमस्कारशर्माके पुत्रोंसे उच्चजितहैं शरणमल जिन्होंके ऐसे प्रतिद जिनेन्द्रनाथान अजितनाथ और शान्तिनाथ शर्माको निरंगर नमस्कार करगाहूँ शयल जगन्ने द्विज करनेशके जिन शान्तिनाथ और अजितनाथशर्माके नाममात्रसे दुःखजनक प्रियद्वियोंगादि अनिष्टरूप हाथियोंके समुदाय शीघ्रही दूर होजाते हैं.

॥ गाथा ॥

पसरइ चरकिती वडए देहदिती ॥  
 विलसइ भुविमिती जायए सुपविती ॥  
 फुखपगमतिती होइ समारथिती ॥  
 जिणजुअपयभती ही अचिती मसती ॥ ५ ॥

## ( छाया )

जिनयुगपदभक्तिः ही अचिंत्योरुशक्तिः ( अस्ति )  
 ( तत्प्रभावात् ) वरकीर्तिः प्रसरति देहदीप्तिः वर्धते भुवि  
 मैत्री विलसति सुप्रदृतिः जायते परमतृप्तिः स्फुरति  
 संसारछितिः भवति.

## ( पदार्थ )

( जिणजुअ ) दोनों जिन भगवानके ( पय ) चरणोंकी ( भक्ती ) भक्ति ( ही ) अत्यन्त आश्चर्य है कि ( अचिन्त ) विचारमें न आनेवाली ( उरु ) भारी है ( सक्ती ) प्रभाव जिसका ( उसके प्रभावसे ) ( वरकिर्ती ) श्रेष्ठ यश ( पसरइ ) फैलता है ( देहादिक्ती ) शरीरका तेज ( बढए ) बढ़ता है ( भुवि ) संसारमें ( मिक्ती ) मिश्रता ( विलसइ ) बढ़ती है ( सुप्पविक्ती ) अच्छा व्यापार ( जायए ) होता है ( परमतिक्ती ) अत्यन्त-संतोष ( फुरइ ) उल्लासित होता है ( संसारछिक्ती ) संसारका उच्छेद ( होइ ) होता है.

## ( भावार्थ )

अत्यन्त आश्चर्य है कि दोनों जिन भगवानके चरणोंकी भक्ति, विचारमें न आनेवाली भारी शक्तिमयी

i

.

l

f

.

( छाया )

जिनयुगपदभक्तिः ही अचिंत्योरुशक्तिः ( अस्ति  
 ( तत्प्रभावात् ) वरकीर्तिः प्रसरति देहदीप्तिः वर्धते भु  
 मैत्री विलसति सुप्रवृत्तिः जायते परमतृप्तिः स्फुरा  
 संसारछितिः भवति.

( पदार्थ )

( जिणजुअ ) दोनों जिन भगवानके ( पय ) च  
 णोंकी ( भक्ती ) भक्ति ( ही ) अत्यन्त आश्चर्य है कि  
 ( अचिन्त ) विचारमें न आनेवाली ( उरु ) भारीह  
 (सत्ती) प्रभाव जिसका ( उसके प्रभावसे ) (वरकिर्ती)  
 श्रेष्ठ यश ( पसरइ ) फैलता है ( देहदिप्ती ) शरीरका तेज  
 ( बृहए ) बढ़ता है ( भुवि ) संसारमें ( मिच्ची )  
 मित्रता ( विलसइ ) बढ़ती है ( सुप्रविच्ची ) अच्छा  
 व्यापार ( जायए ) होता है ( परमतिच्ची ) अत्यन्त-  
 संतोष ( फुरइ ) उछलिन होता है ( संसारछिच्ची )  
 संसारका उच्छेद ( होइ ) होगा है.

( भावार्थ )

अत्यन्त आश्चर्य है कि दोनों जिन भगवानके  
 चरणोंकी भक्ति विचारमें न आनेवाली भारी शक्तिमयी

है जिसके प्रभावसे श्रेष्ठयश फैलता है शरीर का तेज बढ़ता है अच्छा व्यापार होता है अत्यन्त संतोष होता है और संसारका उच्छेद ( भी ) होता है.

॥ गाथा ॥

ललियपयपयारं भूरि दिव्यंगहारम् ॥

फुडगणरसभावोदारसिंगारसारम् ॥

अणिमिसरमणीजहंसणच्छेअभीया ॥

इवपुणपणिमंदा कासि नट्टोवयारम् ॥ ६ ॥

( छाया )

यद्दर्शनच्छेदभीता इव प्रणमनमन्दाः अनिमिपरमण्यः  
ललितपदप्रचारं भूरिदिव्याङ्गहारं स्फुटपनरसभावोदार  
शृंगारसारं नृत्योपहारं अकार्पुः

( पदार्थ )

( जहंसण ) भगवद्दर्शनके ( च्छेअ ) अन्तरायसे  
( भीया ) डरी हुई ( इव ) ऐसी क्या ? ( अणिमिस )  
देवोंकी ( रमणी ) अंगनाएं ( पुणमणि ) प्रणाम  
करनेमें ( मन्दा ) सुस्त ऐसी ( ललिय ) रमणीय हैं  
( पयपयारं ) चरणोंकेन्यास जिसमें ( भूरि ) बहुतसे  
( दिव्य ) सुन्दर हैं ( अंगहारं ) अंगविशेष जिसमें



( पदार्थ )

पड़ता भव्यजीवो ( कया ) की है ( असेस ) सम्पूर्ण  
 हेतुजगत्रयमें ( संती ) शान्ति जिन्होंने ( ते ) ऐसे उन  
 प्रसिद्ध ( अजिअसंती ) अजितनाथ और शान्तिनाथ  
 स्वामीकी ( पुणह ) स्तुतिकरो ( जाणि ) जिन्होंकी  
 शोभायमान ( मुची ) मूर्ति ( सरभस )  
 सहित ( परिरंभारंभि ) आलिङ्गन का आरंभकरने-  
 वाली ( निव्वाणलच्छी ) मोक्षरूप लक्ष्मीके ( धण )  
 मांसल ( धण ) कुचोंके ( पुसिणक ) कुंकुमके ( पंक )  
 पंक्तसे ( पिंगकियव्व ) पीली की हुई है क्या ? इस  
 हेतुसे ही ( कणक ) सोनेके ( रय ) रज समान  
 ( पिसंगा ) पीली मालुम होती है.

( भावार्थ )

हे भव्यजीवो की हे जगत्रयमें शान्ति जिन्होंने ऐसे  
 उन प्रसिद्ध अजितनाथ और शान्तिनाथ स्वामीकी  
 स्तुति करो जिन्होंकी शोभायमानमूर्ति केसहित  
 आलिङ्गनका आरंभ करनेवाली मोक्षरूप लक्ष्मीके मांसल  
 कुचोंपर लगेहुए कुंकुमके पंक्तसे पीली की हुई है क्या ?  
 इस हेतुसे ही सोनेके रज समान पीली मालुम होती है.



## ॥ गाथा ॥

बहुविहनयभंगं वच्छुणिच्चं अणिच्चम् ॥  
 सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगम् ॥  
 इय कुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं ॥  
 वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥

## ( छाया )

तौ जिनौ संस्मरामि ययोः बहुविधनयभंगं कुनय-  
 विरुद्धं सुप्रसिद्धं वचनं अवचनीयमस्ति ( यत्र )  
 वस्तु नित्यमनित्यं सदसत् अभिलप्यालप्यं एकमनेकञ्च  
 ( प्रतिपाद्यते )

## ( पदार्थ )

( ते ) उन प्रसिद्ध ( जिणे ) जिनभगवानका  
 ( संभरामि ) स्मरण करताहूं ( जेसिं ) जिन्होंका  
 ( बहु ) बहुत ( विह ) प्रकारके ( नयभंगं ) नयभेद  
 हैं जिसमें ( कुनय ) कुत्सितानयोंसे ( विरुद्धं ) भिन्न  
 ( सुप्पसिद्धं ) अत्यन्तप्रसिद्ध ( वयणं ) वचन  
 ( अवयणिज्जं ) अवचनीय है ( उसका पूरी तन्हासे वर्णन  
 नहीं किया जासकता ) ( यत्र ) जिसमें ( वच्छु )  
 वस्तु ( णिच्चं ) नित्य ( च ) और ( अणिच्चं )

अनित्य ( सद् ) वस्तुअस्तित्व ( असद् ) वस्त्वभाव  
( अभिलष्य ) वर्णनकेयोग्य ( अलष्यं ) न वर्णन के  
योग्य ( णं ) एकवचननिर्देश्य ( अणोर्गं ) अनेकवचन  
निर्देश्य प्रतिपादन की जाती है.

( भावार्थ )

उन प्रसिद्ध अजितनाथ और शान्तिनाथ जिन  
भगवानको स्मरण करताहूँ जिन्होंका बहुत प्रकारके  
नयभेद हैं जिसमें कुत्सितनयोंसे विरुद्ध अत्यन्त प्रसिद्ध  
वचन अदर्शनीय है जिसवचनमें वस्तु ( व्यवहारनयसे )  
अनित्य और ( निश्चय नयसे ) नित्य वस्तुसङ्गाथ और  
अभाव वस्तुवर्णनीयत्व और अदर्शनीयत्व वस्तुकेवचन  
निर्देश्यता और अनेकवचननिर्देश्यता भलीभांति प्रति-  
पादन की जाती है.

॥ गाथा ॥

पसरइ निअलोए ताव मोहंधकारं ॥

भमइ जय मसण्णं ताव मित्थत्तटण्णम् ॥

फुरइ फुड फलंताणंतणाणंसुपूरो ॥

पयड मजियसंतंतीघाणसूरो न जाव ॥ ९ ॥

( छाया )

तावन् प्रैलोवये मोहान्धकारं प्रसरति तावन् उ.संशं

जगत् मिथ्यात्वच्छन्नं सत् भ्रमति यावत् स्फुटफलदनंत  
ज्ञानांशुपूरः अजितशान्तिध्यानसूरः प्रकटं न स्फुरति.

( पदार्थ )

( ताव ) तद्यतक ( तिअलोए ) तीनों लोकमें  
( मोहन्धयारं ) मोहरूपअन्धकार ( पसरइ ) फैलता  
है ( ताव ) तद्यतक ( असण्णं ) धर्म अधर्मादि ज्ञान  
शून्य ( जयं ) जगत् ( मिथ्यत्तच्छण्णं ) सम्यक्त्वके  
आभावसे आच्छादित होकर ( भमइ ) विपरीत प्रवृत्त  
होता है ( जाव ) जद्यतक ( फुडफलेत्ताणंतणाणं-  
सुपूरो ) स्पष्ट उद्घासको प्राप्त होनेवाला है अनंतज्ञान  
यही मानो किरणोंका समुदाय जिसका ऐसा ( अजिय-  
संतीक्षणसूरो ) अजितनाथ और शान्तिनाथस्वामीका  
शुद्धध्यानरूपसूर्य ( पयडं ) कर्मरूपरजके पटलसे न  
ढँकाहुवा ( न ) नहीं ( पुरइ ) उदय होता.

( भावार्थ )

जद्यतक उद्घासको प्राप्त होनेवाला है अनंत ज्ञान  
यह ही मानों किरणोंका समुदाय जिसका ऐसा अजि-  
तनाथ और शान्तिनाथ स्वामीका शुद्धध्यानरूपसूर्य  
कर्मरूपरजके पटलसे न ढँकाहुवा होकर नहीं उदय

होना है तबतक तीनों लोकमें मोहरूप अन्धकार फैलता है और धर्माधर्मादिज्ञानशून्य जगत् सम्यक्त्वके अभावसे आच्छादित होकर विपरीत प्रवृत्त होता है.

॥ गाथा ॥

अरिकरिहरितिण्डुण्डुचौराहिवाही ।  
समरडमरमारीरुद्वखुद्वोवसग्गा ॥  
पलयमजिअसंतीकित्तणे झत्ति जंती ।  
निविडतरतमोहा भरुकराळुंखियच्च ॥ १० ॥

( छाया )

अरिकरिहरित्विण्डोण्डुचौराधिव्याधिसमरडमरमारी रूद्र-  
धुद्रोपसर्गाः आजितशान्तिकीर्तने सति निविड तरतमौघाः  
भास्करा लुंखिता इव ( स्पष्टा इव ) झगितिप्रलयं  
गच्छति.

( पदार्थ )

( अरि ) शत्रु ( करि ) हाथी ( हरि ) सिंह  
( तिण्डु ) वृषा ( उण्डु ) आतप ( अम्बु ) जल ( चोर )  
भास्कर ( आहि ) मनोव्यथा ( वाहि ) शारीरिकपीडा  
समर ) संग्राम ( डमर ) राजकृत उपद्रव ( मारी )

महामारी ( रुद्रखुहोवसगा ) भयानक क्रूराशयवाले  
 व्यंतरादिकृत उपद्रव ( अजिअ ) अजितनाथस्वामीके  
 ( संति ) शान्तिनाथस्वामीके ( कित्तेण ) कीर्तनकिये  
 सते ( भास्कर ) सूर्यसे ( लुंखियव्व ) स्पर्श किये हुवे  
 ( निविडतर ) अतिगाढ ( तमोहा ) अन्धकारके समूह  
 के समान ( झत्ति ) शीघ्रही ( पलयं ) नाशको  
 ( जन्ती ) प्राप्त होते हैं.

( भावार्थ )

शत्रु हाथी सिंह तृपा उगता जलघात चौर मनोव्यथा  
 शारीरिकपीडा संग्राम राजकृत उपद्रव महामारी भयान-  
 कक्रूराशयवाले व्यंतरादिकृत उपद्रव ये सब अजितनाथ  
 और शान्तिनाथ स्वामीके कीर्तन से सूर्यसे स्पर्श किये  
 हुवे अतिगाढ अन्धकारके समूहके समान शीघ्रही  
 नष्ट हो जाते हैं.

॥ गाथा ॥

निचिअदुरिअदारुदित्तज्ञाणाग्गिजाला ।

परिगयमिवगौरं चिंतिअं जाणरूवं ॥

कणयनिहसरेहाकंतिचोरं करिज्झा ।

चिरथिरामिदलच्छिं गादसंथंभिअव्व ॥ ११ ॥

( छाया )

ययोः निचिनदुरितदारुहीसध्यानाग्निज्वालापरिगतमिव  
गौरं कनकनिकपरेखाकान्तिचोरं एतादृशं रूपं चितितं  
( सत् ) गाढसंस्तंमितामिव चिरस्थिरं लक्ष्मी कुर्व्यात्.

( पदार्थ )

( निचिअ ) अनेक जन्मोंमें इकट्ठे किये हुए  
( दुरिअ ) दुष्टकर्मरूप ( दारु ) लकड़ियोंसे ( उदित )  
प्रदीप्तकी हुई ( क्षाण ) ध्यानरूप ( अग्नि ) अग्निकी  
( जाला ) ज्वालाओंसे मानों ( परिगयमिव ) व्याप्त  
किया है क्या ? ऐसा ( गौरं ) उज्वल ( कणयनिहस )  
सोनेकी कसोटीपरकी ( रेखा ) रेखाकी ( कान्ति )  
कान्तिको ( चोरं ) चुरानेवाला ऐसा ( जाण ) अजित-  
नाथ और शान्तिनाथ स्वामीका ( रूपं ) रूप ( चितितं )  
चितन करने से ( इह ) इस जगत्में ( गाढ )  
अत्यन्त ( संधंभिअव्व ) नियंत्रितकी हुई के सामान  
( चिरस्थिरं ) निश्चल ऐसी ( लक्ष्मि ) लक्ष्मीको  
( करिञ्जा ) करता है.

( भावार्थ )

अनेक जन्मोंमें इकट्ठे किये हुए दुष्टकर्मरूप लकड़ियोंसे प्रज्वलित की हुई ध्यान रूप अग्नि की ज्वाला



संग्रह विधे गए लोकोको ( जलहि ) समुद्रकी  
 ( लहरि ) लहरियोंमें ( हीरंताण ) डूबने वाले लोको  
 को ( शुचि ) पैदखानेमें ( डियाण ) घन्द किये हुए  
 लोकोको ( जलिभ ) जलती हुई ( जलण ) दाशमिकी  
 ( जाला ) ज्वालामोसे ( अलिगि भाणं ) आलिगित  
 किये हुए लोकोको ( सान्ति ) शान्ति ( जणयइ )  
 उत्पन्न करता है.

### ( भावार्थ )

शान्तिनाथ और अजितनाथ स्वामी का ध्यान घोर  
 अरुणमें छुटे हुए लोकोको और राजाओंसे संग्रस्त किये हुए  
 लोकोको और समुद्रकी लहरियोंमें डूबते हुए लोकोको  
 और पैदखानेमें घन्द किये हुए लोकोको और जलती  
 हुई दाशमि की ज्वालामोसे आलिगित हुए लोकोको  
 शीमही शान्ति उत्पन्न करता है.

### ॥ गाथा ॥

हरिकरिपरिकिण्णं पकपाइकपुण्णं ॥  
 सयलपुहविरज्जं छड्ढिअंआणसज्जं ॥  
 तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्तिगग्गं ॥  
 चरणमणुपवण्णा हुंतु ते मे पसण्णा ॥ १२ ॥



( छाया )

यौ जिनी हरिकरिपरिकीर्णं पञ्चपदातिपूर्णं आज्ञासज्जं  
सकलपृथ्वीराज्यं पटलमं तृणमिव छदित्वा मुक्तिमार्गं  
चरणं अनुप्रपन्नौ तौ जिनी मे प्रसन्नौ भवताम्

( पदार्थ )

( हरि ) घोड़े और ( करि ) भद्रादिजातीय हाथियोंसे  
( परिकीर्णं ) व्याप्त ( पञ्च ) शत्रुओंको रोकने लायक  
( पाइक ) सिपाहियोंसे ( पुण्यं ) भराहुआ ( आण )  
राजाकी आज्ञाको ( सज्जं ) पालन करनेवाला  
( सयल ) सकल ( पुहवि ) पृथ्वीके ( रज्जं )  
राज्यको ( पडिलगं ) कपड़ेमें लगेहुए ( तृणमिव )  
तिनके के समान ( छडिअं ) छोड़कर ( मुक्तिमार्गं )  
मोक्षका मार्ग रूप ( चरणं ) चारित्रका ( अणुपदण्णा )  
अंगीकार करनेवाले ऐसे ( जे ) जो प्रसिद्ध ( जिणा )  
शान्तिनाथ और अजितनाथस्वामी ( ते ) वे ( मे )  
मुझपर ( पसण्णा ) प्रसन्न ( हुन्तु ) होओ.

( भावार्थ )

( माल्हीकादिदेशोंमें पैदाहोनेवाले ) घोड़े और भद्रादि  
...से परिपूर्ण शत्रु सिपाहियोंसे भरेहुए

राजाज्ञाको भलीभाँति पालनेवाले संपूर्ण पृथ्वीके राज्यको कपड़े पर लगे हुए लृणके समान छोटकर मोक्षके मार्ग रूप चारित्रका अंगीकारकरनेवाले प्रसिद्ध जिनभगवान अजितनाथ और शान्तिनाथस्वामी मुझपर प्रसन्न होओ.

॥ गाथा ॥

लृणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं ॥  
 धणभरनमिरीहिं मुट्टिमिज्जोदरीहिं ॥  
 ललितभुअलयाहिं पीणसोणित्थणीहिं ॥  
 सय सुररमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ २७ ॥

( छाया )

ययोः पादौ क्षणशशिवदनाभिः फुल्लनेत्रोत्पलामिः  
 स्तनभरनम्रामिः मुट्टिग्राह्योदरीमिः ललितभुजलताभिः  
 पीनश्रोणिरथलीमिः सुररमणीमिः सदा वन्दितौ

( पदार्थ )

(जेसि) जिन अजितनाथ और शान्तिनाथ भगवानके  
 ( पाया ) चरण ( लृण ) पृथ्वीमाके ( ससि ) चांदके  
 समान हैं ( वयणाहिं ) मुख जिन्होंके ( फुल्ल ) सदा  
 फूले हुए हैं ( नित्त ) नेत्ररूपी ( उत्पलाहिं ) कमल

जिन्होंके ( धण ) स्तकने ( भर ) भारसे ( नमिरीहिं )  
 झुकी हुई ( मुट्टि ) मुट्टीसे ( गिज्जो ) ग्रहण करने  
 लायक ( उदरीहिं ) उदर हैं जिन्होंके ( लल्लिअ )  
 सुंदर हैं ( मुअलयाहिं ) भुजलता जिन्हों की ( पीण )  
 पुष्ट हैं ( सोणित्थणीहिं ) कटिपश्चान्नाग जिन्होंके  
 ऐसी ( सुररमणीहिं ) देवांगनाओंसे ( सय ) सदैव ( वांदिआ )  
 वन्दन किये गए.

### ( भावार्थ )

पूनमके चांदके समान हैं मुख जिन्होंके सदा  
 प्रफुल्लित हैं नेत्ररूपी कमल जिन्होंके स्तनके भारसे  
 झुकी हुई मुट्टीसे ग्रहण करने लायक हैं उदर जिन्होंके  
 सुन्दर हैं भुजलता जिन्होंकी पुष्ट हैं कटिपश्चान्नाग-  
 जिन्होंके ऐसी देवांगनाओंसे जिन अजितनाथ और  
 शान्तिनाथ भगवानके चरण सदा वन्दन किये गए हैं.

### ॥ गाथा ॥

अरिसकिडिभकुट्टगंठिकासाइसार ॥  
 सयजरवणलूआसाससोसोदराणि ॥  
 नहमुहदसणच्छीकुच्छिकण्णाइरोगे ॥  
 मह जिणजुअपाया स-पसाया हरन्तु ॥१५॥

( छाया )

जिनयुगपादाः समसादाः सन्ताः मे अर्शकिटिभकुष्ट-  
 प्रेषिकासानिसारक्षयश्चरणलूतश्वासशोषोदराग्निखमुस्त-  
 दशनाक्षिबुक्षिकर्णादिरोगान् हरन्तु

( पदार्थ )

( सप्पसाया ) प्रसज्जतायुक्तऐसे ( जिनजुअ )  
 दोनोंजिनभगवानके ( पाया ) चरण ( मह ) मेरे  
 ( अरिस ) मरसे ( किडिभ ) पैरका रोग ( फुठ )  
 फोड़की बीमारी ( ग्मांठि ) गठिया ( कास ) खांसी  
 का रोग ( अइसार ) दस्तकी बीमारी  
 ( खय ) क्षयरोग ( जर ) बुखार ( षण ) फोड़ेकी  
 बीमारी ( लूआ ) पुन्नासियोंकी बीमारी ( सास ) दमकी  
 बीमारी ( सोस ) कंठ और तालुशोष ( उदराग्नि )  
 पेटकी बीमारियां ( नह ) नखकी बीमारी ( मुह )  
 मुखकी बीमारी ( दसण ) दांतकी बीमारी ( अण्छी )  
 आंखकी बीमारी ( कुच्छि ) कानकी बीमारी  
 ( फण्णाइरोगे ) कानके रोगादिकोंका ( हरन्तु ) नाश करो.

( भावार्थ )

प्रसज्जतायुक्त ऐसे दोनों जिनभगवानके चरण मेरे  
 मरसोंको पैरके रोगको फोड़को गठिया रोगको खांसीके

रोगको दस्तकी बीमारीको क्षेयको ज्वरको फोड़ेकी बीमारीको फुंसियोंकी बीमारीको श्वासरोगको कंठशोष और तालुशोषकी बीमारियोंको उदररोगको नखरोगको दन्तरोगको चक्षुरोगको कांखकी बीमारीको और कानके रोगोंको और इनसे पृथक् भी तमाम बीमारियोंको दूर करो.

॥ गाथा ॥

इय गुरुदुहतासे पखिखण चाउमासे ॥  
जिणवरदुगथुत्तं वच्छरे वा पवित्तं ॥  
पढह मुणह सज्जाएह झाएह चित्ते ॥  
कुणह मुणह विग्गं जेण घाएह सिग्गं ॥१६॥

( छाया )

भो भव्याः यूयम् इदं पवित्रं जिणवरद्विकस्तेषां  
गुरुदुःखमासे पाक्षिके चानुर्मासे वा वस्तरे पठत शृणुत  
स्वाध्यायत ध्यायत चित्तेकुरुत मन्यत येन दिप्तं  
शीघ्रं घातयत

( पदार्थ )

हे भव्यजीवो तुम ( इय ) इस ( पवित्रं ) पवित्र  
( जिणवरदुग ) दोनों जिण भगवानके ( मुत्तं )



तित्थंकर सोलसम सन्तिजिणवल्लहसंतह ॥  
 कुरु मंगल मम हरसु दुरिमखिलंपि ॥  
 थुणंतह ॥ १७ ॥

( छाया )

विजयाजितशत्रुपुत्र श्रीअजित जिनेश्वर तथा अचिरा-  
 विश्वसेनतनय पंचमचक्रीश्वर षोडश तीर्थंकर सतां बल्लभ  
 शान्तिजिन इत्थं मम मंगलं कुरु अखिलं दुरितं हरस्व  
 तथा स्तुवतामपि ( मंगलंकुरु अखिलं दुरितं हर )

( पदार्थ )

( विजया ) विजयानाम्नीमाता और ( जियसत्तु )  
 जितशत्रु नामक पिता इन्होंके ( पुत्त ) पुत्र ऐसे  
 ( सिरि ) शोभायुक्त ( अजिअ जिणेसर ) हे अजित-  
 नामक जिन भगवन् ( तह ) और ( अइरा ) अचि-  
 रानाम्नीमाता ( विससेण ) विश्वसेन नामक पिता  
 इन्होंके ( तणय ) पुत्र ( पंचम ) पांचवें ( चक्कीसर )  
 चक्रवर्ती ( सोलसम ) सोलहवें ( तित्थंकर ) तीर्थंकर  
 ( संतह ) सत्पुरुषों के ( बल्लह ) प्यारे ( संतिजिण )  
 हे शान्तिनाथ जिन भगवन् ( इय ) पूर्वोक्तप्रकारसे  
 ( मम ) मेरे और ( पिथुणंतह ) इसस्तवनको पठन

करनेवाले पुरुषोंकेभी ( अखिलं ) सम्पूर्ण ( दुरिअं )  
पापको [ हरसु ] हरणकरो और ( मंगल ) कल्याण  
( कुरु ) करो.

( भावार्थ )

विजया नाम्नी माता और जितशत्रु नामक पिताके  
पुत्र ऐसे हे अजित जिन भगवन् और अचिरानाम्नी  
माता तथा विश्वसेन नामक पिता के पुत्र पांचवें  
चक्रवर्ती सोलहवें तीर्थकर सत्पुरुषोंके प्यारे ऐसे हे  
शान्तिनाथ जिन भगवन् आप मेरे और इस स्तवनको  
पठन करनेवाले भव्यजीवोंके पूर्वोक्तप्रकार सम्पूर्ण  
पापोंको हरण करो और मंगल करे

धृजिनवहभूरिविरचितम् प्रासिकरुचोत्रमिन्दुरभेनधेताम्बरपाटशर-  
पाप्यापवाचोबे कुडोद्भवश्रीगोपीनाथसूनुवाण्डेतप्रतिष्ठागर्भतुम्भोपेना  
व्यत्योपेत समाप्तम् ॥





॥ श्रीः ॥

अथ नमिऊणनामकं स्मरणं प्रारभ्यते ।

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

आदौ मंगलाविधानपुरःसरा मंगलगाथा कथ्यते ।

॥ गाथा ॥

नमिऊण पणयमुरगण चूडामणिकिरणरंजितं  
गुणिणो । चलणजुअलंमहाभय पणासणं संथवं  
च्छं ॥ १ ॥

( छाया )

मुनेः प्रणतमुरगणचूडामणिकिरणरंजितं महाभय-  
प्रणाशनं चरणयुगळं नत्वा संस्तवं वधि ॥ १ ॥

( विवरणम् )

अहं मुनेः पार्थनायस्त्वानिनः प्रणतमुरगणचूडामणि-  
गरंजितं प्रदर्येगनताः ये मुराणां देवानां गणाः  
पानिनेषां चूडाः मुकुटानि तेषु मणयः तेषु

रंजितं शोभितं महाभयप्रणाशनं रोगजलज्वलनादि  
पोडशभयेषुयानि अष्टमहाभयानितेषां प्रणाशकर्तृ एतादृशं  
चरणयुगलं नमस्कृत्य संस्तवं वद्धि वर्णयामि ॥ १ ॥

( पदार्थ )

( मुणिणो ) पार्श्वप्रमुके ( पणय ) नमस्कारकरने  
वाले ( सुरगण ) देवताओंके समूहके ( चूडा ) मुकुटों  
में स्थित ( मणि ) मणियोंकी ( किरण ) किरणोंसे  
( रंजितं ) सुशोभित और ( महाभय ) आठ महाभयों  
के ( पणासनं ) नाशकरनेवाले ऐसे ( चलणजुअलं )  
चरणयुगलको ( नमिऊण ) प्रणामकर ( संस्तवं ) स्तवन  
को ( वुच्छं ) वर्णन करताहूँ ॥ १ ॥

( भावार्थ )

संस्तवके आरंभमें मंगल कीर्तन पूर्वक  
मंगलगाथा कहते हैं ।

प्रणामकरनेवाले देवोंके मुकुटमणियोंकी किरणोंसे  
सुशोभित और आठ महाभयोंके नाशकरनेवाले ऐसे  
पार्श्वप्रमुके चरणयुगलको प्रणामकर मैं स्तवनको वर्णन  
करताहूँ ॥ १ ॥

अधगाथापुगलेन पार्श्वस्वामिनो रोगभयनिवारण  
लक्ष्मणोऽतिशयो वच्यते ।

॥ गाथा ॥

सडियकरचरणनहमुह निबुहनासाविवन्नलावन्ना  
कुष्टमहारोगानल फुल्लिगनिद्ददमध्वंगा ॥ २ ॥

तेतुहचलणाराहण सलिलंजिसेयबुडियच्छाया  
वणदवदहागिरिषा यवव्वपनापुणोलच्छि ॥ १ ॥

( छाया )

( ये ) निदीर्गवरचरणनग्वमुखाः ( ये ) निनमना-  
सिकाः ( ये ) त्रिनष्टलाश्व्याः ( ये ) कुष्टमहारोगान-  
रफुल्लिगनिर्दग्धसर्वांगाः ते तव चरणारायनमलिलाञ्जलि-  
शेकवर्द्धितच्छायाः सन्तः पुनः घनदशदग्धा, गिरिशदवा  
इव ( आरोग्यरूपा ) लक्ष्मीं प्राप्ताः ( भवन्ति ) ॥ २-३ ॥

( विवरणम् )

विशीर्णं वरचरणनसमुद्यं येषान्ते विदीर्गवरचरणनग-  
मुखाः ( वरचरणनसमुद्यमिति प्राण्यद्वरान् निरन्ते-  
कवचनंनपैतद्वदश्व समासे ) निभरननासः निभग्ना

कुरूपतांनीताः नासाः घ्राणेन्द्रियाणि येषां त्रिनष्टं भ्रष्टं  
 लावण्यं सौंदर्यं येषां कुष्टरूपः महारोगः (कुष्टोरोगविशेषः)  
 सरुवअनलः अग्निः तस्य स्फुलिगाः अग्निकणाः  
 तौर्निर्दग्धानि प्लुष्टानि सर्वांगानि अखिलेन्द्रियाणि येषां  
 ते तत्र भवनः चरणयोः पादयोः आराधनं पूजनं तदेव  
 तत्संबंधिवासलिलं तेनकृतःसेकः पूजनावशिष्टजलसेचनं  
 इत्यर्थः तेनवर्द्धिताः एघिताः छायाः कान्तयो येषां  
 एतादृशाः सन्तः वनद्वेन आरण्यदावानलेन दग्धाः प्लुष्टाः  
 गिरिपादभाः पर्वतीयवृक्षा इव लक्ष्मीं आरोग्यसंपत्तिं प्राप्ताः  
 भवन्ति ॥ २-३ ॥

### ( पदार्थ )

( सडिय ) सडगए हूँ ( कर ) हाथ ( चरण ) पांव  
 ( नह ) नख ( मुह ) मुख जिन्होंके, ( निबुड )  
 पैठगई है ( नासा ) नासिका जिन्होंकी, ( त्रिनष्ट )  
 नष्टहोगया है ( लावन्ना ) लावण्य जिन्होंका, ( कुठ )  
 कोठरूप ( महारोग ) भारी व्याधि यही मानो ( अनल )  
 अग्नि उसकी ( फुलिग ) चिनगारियोंसे ( निदग्ध )  
 जलगाया है ( सच्चंगा ) सम्पूर्ण अंग जिन्होंका ( ते )  
 वे ( तुह ) आपके ( चरण ) चरणोंकी ( आराहण )

सेवारूप ( सादिलंजलि ) जलपूरित अंजलिके ( सेय  
 सेचनसे ( बुड्ढिअच्छाया ) वृद्धिगतहै शोभा जिन्होंके  
 ऐसे होकर ( पुणो ) फिर ( वणदव ) दावा  
 नलसे ( दढा ) जलेहुए ( गिरिपायव ) पर्वतीयवृक्षोंके  
 ( व्व ) समान ( लच्छि ) आरोग्यरूप संपदाको ( पत्ता )  
 प्राप्त होतेहैं ॥ २-३ ॥

( भावार्थ )

अब दो गाथाओंसे पार्श्वप्रमुखा रोगभयनाशक-  
 त्वरूपसे प्रभाव कथन करतेहैं ।

सडगएहैं हाथपांवनखमुखादि अवयव जिन्होंके, बैठ-  
 गईहै नासिका जिन्होंकी, प्रनष्टहोगयाहै लावण्य जिन्होंका  
 कोडरूपमहारोगसे उत्पन्नहुई हुई पीडा जनित संतापरूप  
 अग्निकी चिनगारियोंसे जलगायाहै सारा शरीर जिन्होंका  
 ऐसे प्राणी भी आपके चरणोंकी आराधनारूप जल  
 पूरित अंजलीके सेचनसे बढगई है शरीरकी कान्ति  
 जिन्होंकी ऐसे होकर फिर वनके अग्निसे जलेहुए  
 पर्वतीयवृक्षोंके समान आरोग्यरूप संपदा को प्राप्त  
 होतेहैं ॥ २-३ ॥

अथगाथाद्वयेन पार्श्वस्वामिनो द्वितीयजलभयाप-  
हरणलक्षण माहात्म्यं वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

दुब्बायखुम्भियजलनिहि उम्भटकल्लोलभीषणारावे  
संभ्रंतभयविसंतुल निज्ज्ञामयमुक्त्वावारे ॥ ४ ॥

अविदलिअजाणवत्ता खणेणपावन्ति इच्छि-  
अंकूलं पासजिणचलणजुअलं निञ्चिअ जे  
नमांतिनरा ॥ ५ ॥

( छाया )

ये नराः पार्श्वजिनचरणयुगलं नित्यं नमन्ति चेत् ते  
दुर्वातक्षुभितजलनिध्युद्भटकल्लोलभीषणारावे संभ्रंतभय-  
विसंतुलविह्वलनिर्यामकमुक्तव्यापारे अविदलितयान-  
पात्राः संतः क्षणेन इच्छितं कूलं प्राप्नुवन्ति ॥ ४-५ ॥

( विवरणम् )

ये नराः मानवाः पार्श्वजिनस्य पार्श्वस्वामिनः चरण-  
युगलं आंघ्रिद्वयं नित्यं निरंतरं नमन्ति वन्दन्ते चेत्  
अप्रधारणार्थं (तेन त एव नान्येइतिकलति) ते दुर्वातेन  
प्रातिकूलपवनेन क्षुभितः क्षोभं प्रातः यः जलनिधिः समुद्रः  
तस्य उद्भटाः उदागाः कल्लोलः उर्ध्वयः तैः भीषणः

भयंकरः आराधः शब्दः यस्मिन् संभ्रंताः प्राप्तसंकट-  
निवारणे समूहं चेतसः भयात् भीत्याः विसंतुलाः विव्हलाः  
एतादृशाः निर्यामकाः नाविकाः सैः मुक्तः परित्यक्तः  
व्यापारः व्यस्रायः यस्मिन् एतादृशे महाजलाशये  
अविदलितानि अभग्नानि यानपात्राणि पीताः येषां  
क्षणेन निमेषमात्रेण इच्छितं अभिलाषितं कूलं तीरं  
प्राप्नुवन्ति ॥ ४५ ॥

### ( पदार्थ )

( जे ) जो ( नरा ) मनुष्य ( पास्तजिण ) जिनभगवान्  
पार्श्वप्रमुके ( चलणजुअलं ) चरणयुगलको ( निधं )  
निरंतर ( नभंति ) नमनकरतेहैं ( चिअ ) अवधारणार्थे,  
( ते ) वेही ( दुब्बाय ) प्रलिकूल पवनसे ( खुप्पिय )  
क्षोभित ( जलनिहि ) समुद्रकी ( उप्पड ) भारी  
( कळोल ) लहरियोंसे ( भीसाण ) भयंकरहै ( आराधे )  
शब्द जिसमें तथा ( संभंत ) घबराए हुए और ( भय-  
विसंतुल ) भयसे विव्हल ऐसे ( निष्णामय ) मल्लाह  
लोगोंने ( मुक्क ) छोड़दिया है ( वाशारे ) नावचलानेका  
व्यापार जिसमें ऐसे जलाशयमें भी ( अविदलिअ )  
सुरक्षितहैं ( जाणवत्ता ) नौका जिन्होंकी ऐसे होकर



( खणेण ) क्षणभरमेंही ( इच्छिअं ) अभिलषित  
( कूलं ) तीरको ( पावन्ति ) प्राप्तहोतेहैं ॥ ४-५ ॥

( भावार्थ )

अब गाथा द्वयसे भगवानका जलभयनाशकत्वरूपसे  
दूसरा माहात्म्य कीर्तन करते हैं ।

जो मनुष्य पार्श्वप्रभुके चरणयुगलको नित्य नमस्कार  
करतेहैं वेही प्रतिकूल वायुसे क्षुभित समुद्रकी मोटी  
लहरियोंसे भयंकर है शब्दजिसमें और वर्तमान संकट  
के निवारणमें घबराएहुए और भयसे विव्हल मछलाहओं  
ने छोडादियाहै नौकाचालनादिव्यापार जिसमें ऐसे  
समुद्रमें भी सुरक्षित नौकावान् होकर जल्दी ही  
इच्छित तटको पहुंच जातेहैं ॥ ४-५ ॥

अथ गाथायुगलेन पार्श्वप्रभोः तृतीयं दवानलभयाप-  
हारातिशयो वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

स्वरपवणुद्धवणदव जालावालिमिलियसयल-  
दुमगहणे । उज्झंतमुद्धमयवहु भीसणखभीसणं  
मिवणे ॥ ६ ॥

जगगुरुणोकमजुअलं निव्वाविअसयलतिहु-

अणाभोअं ! जेसंभरंतिमणुआ नकुणइज्जलणो-  
भयंतेसिं ॥ ७ ॥

( छाया )

रूपवनोद्धतदनदवस्वलावलिमिलितसकलद्रुमगहने द  
सन्सुस्थमृगदधुभीषणरदभीषणदने, अथवा दद्यान्तमुग्ध-  
मृगदधुभीषणरदभीषणदने ये मनुजा निर्वापितसकल-  
त्रिभुवनाभोगं एतादृशं जगद्गुरोः क्रमयुगलं संस्मरंति  
तेषां स्वलनो भयं न करोति ॥ ६-७ ॥

( विवरणम् )

खरः प्रचण्डः पवनः वायुः तेन उद्धतः प्रसारितः  
दनदवः दावानलः तरय ज्वालाः अर्चिपः तासां  
आवलिः श्रेणिः तथा मिलिताः संस्पृष्टा दह्यमानाः इत्यर्थः  
सकलाः समग्राः द्रुमाः वृक्षाः यस्मिन् तन् गहनं वनं  
तस्मिन् तथा दह्यमानाः प्लुप्यमाणशरीराव्यवाः मुग्धाः  
सरलाः याः मृगदधुः हरिण्यः तासां भीषणः भयंकरः  
रदः आक्रंदः तेन भीषणं भयद्रदं वनं अरप्यं तस्मिन्  
अथवा दग्धुं शक्यं दह्यं वनं तरय अन्तः अदसानं  
यस्मिन् स दद्यान्तः दावाग्निः तेन मुग्धाः मुष्टिहताः  
मृगाः दनपशवः तेषां दधुभीषणः अत्यन्तभयानकः रदः

आक्रन्दः तेन भीषणं भयप्रदं वनं अरण्यं तस्मिन्  
 एतादृशेन ये मनुजाः नराः निर्वापितः आवतिजनि  
 संतापशमनेन सुशीलः सरलं समग्रं त्रिभुवनं  
 ( त्रयाणां भुवनानां समग्रः त्रिभुवनं ) त्रैलोक्यं तस्य  
 आभोगः स्थानं ( निर्वापितः सकलत्रिभुवनभोगः )  
 येन तन् तादृशं जगद्गुणैः जगदज्ञानतिमिरनिरोधकम्य  
 पार्श्वप्रभोः क्रमयुगलं क्रमयोः चरणयोः युगलं युगं  
 संभ्रमंतिः स्मृतिपथंनयन्ति तेषां पूर्वोक्तजनानां उद्वलनः  
 दवानलः भयं भीतिं न करोति ॥ ६-७ ॥

### ( पदार्थ )

( खर ) प्रचण्ड ( पवग ) शायुसे ( उद्भुय ) फैले  
 हुए ( वणदव ) वनके अग्निकी ( जाला ) ज्वालाओंकी  
 ( आवलि ) पंक्तिसे ( मिलिय ) स्पर्शकियेहुः ( सयल )  
 सम्पूर्ण ( दुम ) वृक्ष हैं जिसमें ऐसे ( गहणे ) वनमें  
 और ( उद्भ्रंन ) जलतीहुई ( मुद्ध ) सरल ( मद्यहु )  
 हरणियोंके ( भीसण ) भयंकर ( रव ) चिह्नाट से  
 ( भीसणंमि ) भयप्रद ऐसे ( वणे ) अरण्यमें अथवा  
 ( उद्भ्रंत ) दवाग्निसे ( मुद्ध ) मुच्छित ( नय ) अरण्य  
 निवासी पशुओंके ( बहु ) अत्यन्त ( भीसण ) भयंकर

( रघ ) आक्रन्दसे ( भीसणंनि ) भयप्रद ऐंत्  
 ( वणे ) वनमें ( जे ) जो ( मणुआ ) मनुष्य  
 ( निन्नाधिअ ) आपत्तिजनित संतापको दूरकर सुखी  
 कियाहै ( सयड ) समग्र ( तिहुअणाभोअं ) त्रिभुवन  
 रूपस्थानको जिसने ऐसे ( जगगुरुणो ) जगद्गुरु  
 पार्श्वप्रभुके ( कमजुअडं ) चरणयुगलका ( संभंनि )  
 स्मरणकरते हैं ( तोसिं ) उन्हींको ( जग्णां ) द्वादाग्नि  
 ( भयं ) भीति ( न कुणट ) नहीं करता ॥ ६-७ ॥  
 ( भावार्थ )

अब दो गाथाओंमें भगवान् द्वादानन्दके भयरा  
 नाशकरने हैं ऐसा भगवान्का महिमा करतेहैं ।  
 प्रचण्ड वायुसे फैलेहुए द्वादानदरी द्वादाओं की  
 पंक्ति.योंसे जलने हुएहैं तमाम वृक्ष जिनमें और जलनी  
 हुई सगळ हरिजियोंके भयप्रद चिताहटमें नवंरा  
 अथवा द्वादाग्निसे मुट्टिटा अस्प्यनिरती पशुओंके  
 अत्यन्त भयंकर आक्रन्दसे भीतिप्रद वनमें जो मनुष्य  
 संसारके संतापको दूरकर सुखी कियाहै त्रिभुवन जिनने  
 ऐसे जगद्गुरु पार्श्वभगवान्के चरणयुगल की स्मरण  
 करतेहैं उन्हीं द्वादाग्नि भय नहीं करता ॥ ६-७ ॥

अथ गाथायुग्मेन भगवतः पार्श्वप्रभोश्चतुर्थद्विपवर  
भयनिवारकत्वमहिमा दृश्यते ।

॥ गाथा ॥

विलसंतभोगभीषण फुरिआरुणनयणतरलजी-  
हालं । उग्रभुअंगंनवजलय सच्छट्टंभीषणा-  
चारं ॥ ८ ॥

मन्त्रेतिकीडसरिसं दूरपाच्छिट्ट विसम विसवेगा ।  
तुहनामस्करफुटासिद्धमंत-गुरु आनरालोए ॥ ९ ॥

( अथा )

नराः लोके तवनामक्षरस्फुटसिद्धमन्त्रेण गुरवः अत एव  
दूरपरिच्छूनद्विपमद्विपवेगाः संतः विलसन्नभोगभीषण-  
स्फुरितारुणनयनतरलजिह्वं नवजलदत्तदृशं भीषणाकारं  
( भीषणाचारं ) वा एतादृशं उग्रभुजंगं कीटसदृशं  
मन्यन्ते ॥ ८-९ ॥

( विवरणम् )

ये नराः मानवाः लोके भुवने तत्र भवतः नामाक्षराणि  
एव स्फुटः प्रथितः सिद्धमन्त्रः तेन गुरवः प्रभावशालिनः  
अतएव दूरं दूरतः परिच्छूनः परित्यक्तः विपमः मृत्युप्रदः  
विपवेगः गरलप्रभावः यैः ते विलसन् कान्तिमान् भोगः

पणा यस्य भीषणः भयङ्करः रफुरिते चपले अरणे रक्ते  
 नयने नेत्रे यस्य तरला चञ्चला जिह्वा रत्तना यस्य  
 तादृशः नवः नूतनः जलदः मेघः तत्तमानः भीषणः  
 आकारः आकृतिः यस्य यद्वा भीषणः भयप्रदः  
 आचारः आचरणं यस्य एतादृशं उग्रभुजंगं प्रचण्डसर्पं  
 कीदृसदृशं तुच्छजन्तुसमानं मन्यन्ते गणयन्ति ॥ ८-९ ॥

( पदार्थ )

( नरा ) मनुष्य ( लोए ) इस लोकमें ( तुह )  
 आपके ( नामकर ) नामाक्षर बह्नी मानो ( फुड )  
 प्रस्यान और ( सिद्ध ) सिद्ध ( मंत ) गारुडादिकमंत्र  
 उत्तसे ( गुरुआ ) प्रभादशाली होनेसे ( दूर ) अत्यन्त  
 दूर और ( परिच्छिद ) चारोंओर टालादिया है ( विसम )  
 मृत्युप्रद ( विसर्गेगा ) विपका वेग जिन्होंने ऐसे होकर  
 ( विठसंत ) चमकीला है ( भोग ) शरीर जितका  
 और ( भीसग ) भयंकर ( फुरिअ ) चपल और ( अरण )  
 लालहै ( नयन ) नेत्र जिसके और ( तरल ) चंचलहै  
 ( जीहलं ) जीभ जिसकी ( ननजलय ) नद मेघके  
 ( सच्छहं ) समान ( भीसग ) भयंकरहै ( आचारं )  
 आकार अथवा आचार जिसका ऐसे ( उग्रा ) विकाल

( गुह्रं ) सर्पको ( कीडेकेसमान ) कीडेकेसमान ( मन्त्रं )  
मानते हैं ॥ ८-९ ॥

( भावार्थ )

अथ गाथाद्वयसे सर्पविनिवारकत्वरूप  
प्रभाव वर्णन करते हैं ।

मनुष्य इस लोकमें आपके नामाक्षररूप प्रख्यात और  
सिद्ध गारुडमंत्रसे प्रभावशाली होकर मृत्युप्रद त्रिके वेग  
को असन्त दूर टालदेतेहैं और चमकदार फणावाले  
सुशोभि देहवाले चंचल और लालनेत्रवाले चपल जिह्वा  
वाले नये मेवके समान भयंकर आकृतिवाले विकाल  
सर्पको कीडेकेसमान मानते हैं ॥ ८-९ ॥

अथ गाथायुगलेन प्रमोः पञ्चमत्स्करभय  
निवारकत्वप्रभावो वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

अडर्षिसुभिल्लतकर पुलिंदसद्दूलसद्भीमासु ।  
भयविहुलवुन्नकायर उल्लरिअपहियसत्थासु ॥१०॥  
अविलुत्तविहवसारा तुहनाहपणाममत्तवावारा ।  
ववगयविग्वासिग्धं पत्ताहिय इच्छियंठाणं ॥११॥

( छाया )

मिह्रतस्करपुलिन्दशार्दूलशन्दभीमासु भयविह्वलविष-  
ण्णास्रतरोल्लुपिठतपयिकसार्थासु अटवीपु हे नाथ तव  
प्रणाममात्रव्यापाराः अतएव अत्रिलुप्तविभवसाराः ते  
जनाः व्यपगतविघ्नाःसंतः शीघ्रं हृदि इच्छितं स्थानं  
प्राप्ताः भवन्ति ॥ १०-११ ॥

( धिवरणम् )

मिह्राः आरण्यकाः तरकराः चौराः पुलिन्दाः वनचर-  
जीवाः ( मिह्राः पुलिन्दाश्च वनचरभेदाः ) शार्दूलाः  
सिंहाश्च तेषांशब्दाः तैर्भीमासु भयप्रदासु भयेन भित्त्वा  
विह्वलाः व्याकुलीकृताः विषण्णाः दुःखिता अकातरैः  
अभीरुभिः मिह्रैः उल्लुपिठताः अपहतसर्वरथाः एतादृशाः  
पयिकसार्थाः अध्वगसंघाः यासु तथाविधासु अटवीपु  
गहनवनेषु हे नाथ हे स्वामिन् तव प्रणामएव प्रणाम  
मात्रं प्रणतिमात्रं तदेव व्यापारः येषां ते अतएव अत्रि-  
लुप्ताः अपरिहृताः विभवसाराः उत्कृष्टधनं येषां ते जनाः  
व्यपगता, विनष्टाः विघ्नाः अन्तरायाः येषां ते शीघ्रं  
त्वरितं हृदि अन्तःकरणे इच्छितं अनिलपितं स्थानं  
प्रदेशं प्राप्ताः आस्तादितवन्तः भवन्ति ॥ १०-११ ॥



## ( पदार्थ )

( भिष्ठ ) भील ( तकर ) चौर ( पुलिंद ) वनेचर  
जीव ( सहूल ) सिंहोंके ( सह ) मारोमारो आदिशब्दों  
से ( भीमासु ) भयंकर, ( भय ) डरसे ( विहुल )  
व्याकुल ( बुद्ध ) दुःखित और ( अकावर ) निडर  
भीलोंसे ( उल्लूरिअ ) लूटलिये गएहैं ( पाहिअस्त्यासु )  
पथिकसमुदाय जिन्होंके विषय ऐसे ( अडधीसु ) गहन  
वनोंमें ( नाह ) हे नाथ ( तुह ) आपको ( पणाममत्त )  
प्रणाममात्र है ( वावाग ) द्वाजार जिन्होंका ऐसे होने  
सेही ( अथिलुत्त ) नलूटागयाहै ( विहवसारा )  
उत्कृष्टधन जिन्होंका ऐसे जन ( सिग्घं ) जलदी ही  
( ववगय ) विशेषतः नष्ट होगएहैं ( विग्घा ) विघ्न  
जिन्होंके ऐसे होकर ( हिय ) हृदयमें ( इच्छियं )  
अभिलषित ( ठाणं ) स्थानमें ( पत्ता ) प्राप्त  
होते हैं ॥ १०११ ॥

## ( भावार्थ )

अब दो गाथाओंसे प्रमुक्त तस्करनवनिसारणरूप  
अनिशय कथन करते हैं ।

जो भील, चौर, वनमें संचारकरनेवाले जीव और सिंह

इत्यादि प्राणियोंके मारो २ आदि शब्दोंसे भयंकर हैं, और जिन्होंमें अधिकजन समूह निडर भीलोंसे लूटे गए हैं तथा डरसे व्याकुल और दुःखित हो रहे हैं ऐसे गहन यनोंमें हे नाथ आपको प्रणामकरतेही मनुष्योंका उत्कृष्ट धन बच जाता है और सम्पूर्ण विघ्न नष्ट होकर जलदी ही वे इच्छित स्थानको प्राप्त होजाते हैं ॥ १०-११ ॥

अथ गाथाद्वयेन प्रभोः सिंहभयनिरासकारकत्वरूपं  
षष्टमाहात्म्यं वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

प्रज्वलिआनलनयणं दूरविपास्थिमुहंमहाकायं ।  
नहकुलिसघायविअलिअ गजेन्द्रकुंभस्थलाभोगं ॥१२॥

पणयसत्तंभमपत्थिव नहमणिमाणिकपडिअपाडि-  
मस्स । तुहवयणपहरणधरा सीहं कुद्धंपि न  
गणंति ॥ १३ ॥

( छाया )

हे प्रभो प्रणतससंभ्रमपार्यवनखमणिमाणिक्यपातित  
प्रतिमस्य तव वचनप्रहरणधराः मानवाः प्रज्वलितानल-  
नयनं दूरविदारितमुखं महाकायं नखकुलिसघायविदलित-  
गजेन्द्रकुंभस्थलाभोगं एतादृशं सिंहं क्रुद्धमपि न  
गणयन्ति ॥ १२-१३ ॥

## ( विवरणम् )

हे प्रभो प्रणताः नम्रीभृताः ससंभ्रमाः आदरसाहिताः पार्थिवाः राजानः तेषां ( प्रभोः ) नखाः करग्रहाः एव मणिमाणिक्यानि तेषु पातिताः याः प्रतिमाः प्रणतसंभ्रमपार्थिवानां नखमणिमाणिक्यपतितप्रतिमाः यस्मिन् सः प्रणतससंभ्रमपार्थिवनखमणिमाणिक्यपतितप्रतिमः तस्य तव वचनं आज्ञा एव प्रहरणं शस्त्रं तस्य घराः धारणकर्तारः ये मानवाः नराः प्रज्वलितः देदीप्यमानः यः अनलः अग्निःतद्वन्नयने नेत्रे यस्य तम् दूरात् विदारितं मुखं वदनं येन तम् महान् विशालः कायः शरीरं यस्य तम् तथा नखाः एव कुलिशं वज्रं तैः घातः प्रहारः तेन विदालितः चूर्णितः गजेन्द्रस्य प्रबलहस्तिनः कुंभस्थलस्य गण्डस्थलस्य आभोगः विस्तारः येन तम् सिंहं क्रुद्धमपि न गणयन्ति न भयहेतुं मन्यन्ते ॥१२-१३॥

## ( पदार्थ )

हे प्रभो ( पण्य ) प्रणामकरनेवाले ( ससंभ्रम ) आदरसाहित ( पार्थिव ) राजाओंकी ( नहमाणिमाणिक्य ) प्रभुके नखरूप मणिमाणिक्योंमें ( पडिअ ) गिरी है ( पाडिमस्त ) प्रतिमा जिनके द्विपय ऐसे ( तुह ) आपके

( वचन ) वचनरूप ( पहरण ) शस्त्रको ( धर )  
 धारण करनेवाले मानव ( पञ्जलिअ ) प्रज्वलित ( जलन )  
 अभिसमान हैं ( नयन ) नेत्र जिसके ( दूर ) दूरमें  
 ( नियारिय ) फैलाया है ( मुहं ) मुख जिसने ( नह )  
 बड़ा है ( कायं ) शरीर जिसका ( नह ) नत्त रूप  
 ( कुलिस ) वज्रके ( घाय ) प्रहारसे ( विज्जिज्ज )  
 चीरादिया है ( गइंद ) गजेन्द्रहाथीके ( इंसत्त )  
 गण्डस्थलका ( आभोअं ) विस्तार जिसने इंस ( इंस )  
 सिंहको ( कुद्धं पि ) क्रुद्ध होनेपर भी ( न ) नहीं ( गन्दि )  
 गिनते हैं ॥ १२-१३ ॥

( भावार्थ )

अब दो गाथाओंमें पार्श्वभगवान् का चिह्न  
 निरासरूप प्रताप लिखते हैं ।

हे प्रभो आपके नखरूप रत्नो जड़सहित प्रणाम  
 करनेवाले राजाओंकी प्रतिमा प्रनिर्विकित्त होती है आरके  
 वचनरूप शस्त्रको धारण करनेवाले मय्य इंस  
 प्रज्वलित अभि समान नेत्रवाले दूरमें ही खाने  
 फाड़ा है मुख जिसने, मोटे कर्णवाले और  
 वज्रके प्रहारसे छिन्न भिन्न कर दिया है

गण्डस्थल जिसने ऐसे सिंह को क्रुद्ध होनेपर भी  
तुच्छ गिनतेहैं ॥ १२-१३ ॥

अथ गाथायुगलेन प्रभोः सप्तम गजभयनिरास-  
कत्वातिशयो वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

ससिधवलदंतमुसलं दीहकरुल्लालवद्द्विउच्छाहं ।  
मधुर्पिगनयणजुअलं ससलिलनवजलहरारावं ॥१४॥

भीमं महागइदं अचासन्नपितेन विगणंति । जे  
तुम्हचलणजुअलं मुणिवइतुंगंसमल्लीणा ॥ १५ ॥

( छाया )

हे मुनिपते ये तव तुङ्गं चरणयुगलं सँल्लीनाः ते  
शशिवलदंतमुसलं दीर्घकरोल्लोलवर्धितोत्साहं मधुर्पिगनयन  
युगलं ससलिलनवजलघरारावं भीमं महागजेन्द्रं अत्या-  
सन्नमपि न विगणयन्ति ॥ १४-१५ ॥

( विवरणम् )

हे मुनिपते हे मुनिस्वामिन् ये मानवाः तव भवतः  
तुङ्गं अत्युन्नतं चरणयुगलं चरणयोः पादयोः युगलं  
युग्मं सँल्लीनाः समाश्रिताः ते शशिवलदंतमुसलं शशी  
इव चन्द्र इव धवली स्वच्छौ दन्तौ दशनौ एव मुसली

मुद्गरी यस्य तम् दीर्घरुओल्लोवर्धितोत्साहम् दीर्घिः आयतः  
 फरः शुण्डादण्डः तस्य उल्लोलः चालर्न तेन वर्धितः  
 शुद्धिगतः उत्साह उल्ल्यासः यस्य तम् मधुपिंगनयन-  
 युगलम् मधु माक्षिकं इव पिंगं पीतं नयनयोः नेत्रयोः  
 युगलं युग्मं यस्य तम् ससालिलनवजलधरारावम् सलिलेन  
 जलेन सहितः सचासी नवजलधरः नूतनमेघः तस्य  
 आरावः शब्दः इव आरावो यस्य सः तम् भीमं भीषणं  
 महागजेन्द्रं अर्जितकुंजरं अत्यासन्नमपि अतिसभीषस्थं  
 अपि न विगणयन्ति न कलयन्ति ॥ १४-१५ ॥

( पदार्थ )

:- ( मुणिवद् ) हे मुनिपते ( जे ) जो मनुष्य ( तुम्ह )  
 आपके ( तुंगं ) गुणोंसे उन्नत ( चलणजुअलं ) चरण  
 युगलका ( समर्हीणा ) सम्यक् आश्रय करलेतेहैं ( ते )  
 ये मनुष्य ( सासि ) चंद्रके समान ( धवल ) श्वेत  
 ( दंतमुसलं ) दंतद्वयरूप मुसलहै जिसकी, ( दीह )  
 लंबे ( फर ) शृंङ्गादण्ड के ( उल्लाल ) संचालनसे  
 ( वडूठि ) बढ़गया है ( उच्छाह ) उत्साह जिसका  
 ( महु ) शहदके समान ( पिंग ) पीली हैं ( नयनजुअलं )  
 दोनों आँखें जिसकी ( ससालिल ) जलसहित ( नव )



निजिय दस्पुद्धररिउ नरिदिनिवहा भडाजसं  
धवलं । पावंति पाव पसमिण पासजिणतुहप्प;  
भावेण ॥ १० ॥

( छाया )

हे पार्श्वजिन हे पापप्रशमन निर्जितदपोद्धुररिपुनरेन्द्र  
निवहभयः तीक्ष्णखड्गाभिघातापविद्धोद्धुतकबंधे  
कुन्तविनिर्निष्कारिकलभमुक्तसीत्कारप्रचुरे समरे तव  
प्रभावेण धवलं यशः प्राप्नुवन्ति ॥ १६-१७ ॥

( विवरणम् )

हे पार्श्वजिन हे पार्श्वस्वामिन् हे पापप्रशमन हे  
पाप प्राणशक निर्जितदपोद्धुररिपुनरेन्द्रनिवहभयः हे  
द्वेषेण गर्वेण उद्धुरः विद्वंखलाः रिपुनरेन्द्राः विपक्षराजानः  
यां निवहः समुदायः निर्जितः पराजितः एतादृशः  
समुदायः यैः ते भयः शूराः तीक्ष्णखड्गाभिघातापविद्धोद्धु  
बंधे तीक्ष्णाः निशिताः खड्गाः कृपाणाः तैः अभिघाताः  
राः तैः अपविद्धं अनियंत्रितं यद्यारयात् तथा  
ताः नर्तितुं प्रवृत्ताः कबंधाः मस्तकरहितशरीरभागाः  
सन् कुन्तविनिर्निष्कारिकलभमुक्तसीत्कारप्रचुरे कुन्ता  
ः तैः विनिर्निष्ताः विदारिताङ्गाः करिकलभाः



गजशावाः तैः मुक्ताः परिच्युताः सीत्काराः कातरशब्दाः  
 तैः प्रचुरे परिपूरिते समरे संग्रामे तव प्रभावेण तव  
 प्रतापेन धवलं उज्वलं यशः ख्यातिं प्राप्नुवन्ति  
 लभन्ते ॥ १६-१७ ॥

( पदार्थ )

( पासजिण ) हे पार्श्वजिन ( पावपसामिण ) हे  
 पापोंके प्रणाशक ( निज्जिय ) जीतालिये हैं ( दप्पुद्धर )  
 शूरताके गर्वसे अन्ध ( रिउनरिंद ) शत्रुराजाओंके  
 ( निवहा ) समूह जिन्होंने ऐसे ( भडा ) शूरपुरुष  
 ( तिक्खखग्ग ) तीक्ष्ण खड्गोंके ( अभिग्घाय ) प्रहारों  
 से ( पविद्ध ) बेरोक ( उद्धुय ) इधर उधर नाचने  
 लगतेहैं ( कवंधे ) मस्तक रहित कवंध जिसमें ( कुन्ता )  
 भालोंसे ( विणिमिन्न ) छिदेहुएहैं अंग जिन्होंके ऐसे  
 ( करिकलह् ) हाथियोंके बच्चोंके ( मुच्चसिक्कार )  
 निरुठेहुए सीत्कारोंसे ( पउरग्गि ) प्रपूरित ऐसे  
 ( समग्गि ) संग्राममें ( तुह् ) आपके ( प्पभावेण )  
 प्रभावसे ( धवलं ) उज्वल ( जसं ) कीर्ति ( पावन्ति )  
 प्राप्त करतेहैं ॥ १६-१७ ॥

( भावार्थ )

अब गाया ह्यसे पार्वप्रभुका आठवां संग्रामभय-  
विनाशनरूप महिमा कथन करतेहैं ।

हे पार्वनाथ हे पापघ्नसक जीतलियेहैं शूरताके  
गर्वसे मदान्य प्रतिपक्षी राजाओंके समुदाय जिन्होंने  
ऐसे शूरपुरुष तीक्ष्ण खड्गोंके प्रहारसे छिन्नहोनेकेकारण  
बेतोकूँ इधर उधर नाचने लगेहैं मस्तकरहित पड जिसमें  
और भालोंसे छिदेहुए हाथियोंके बालकोंके मुखसे निकले  
हुए सीत्कारोंसे प्रपूरित संग्राममें आपके प्रभावसे उज्वल  
यशको प्राप्त करलेतेहैं ॥ १६-१० ॥

अधुना एकया मयया पूर्वोक्तगृहभयानिरासकत्व-  
महिमा वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

रोगजलजलणविसहरचोरारिमिदं दगयरणभयाइं ।  
पासजिणनामसंकित्तणेण पसमांति सच्चाइं ॥१८॥

( छाया )

पार्वजिननामसंकीर्तनेन सर्वाणि रोगजलज्वलनविष-  
धरचोरारिमृगेन्द्रगजरणभयानि प्रशाम्बान्ति ॥ १८ ॥

## ( निररगम् )

व्यापितभयं जलजभयं अग्निभयं सर्पजभयं  
 तस्करादिशत्रुभयं सिंहभयं कस्मिभयं संग्रामभयं प्लान्द्यष्ट-  
 भयानि पार्श्वजिनेश्वरस्य नामस्मरणमात्रेणैव स्वयमेव  
 प्रशान्त्यानि उपशानं यान्ति ॥ १८ ॥

## ( पदार्थ )

( पामजिग ) पार्श्वजिनेश्वरके ( नामसंक्षिप्तगेण )  
 नानकीर्तनसे ( सव्याइं ) सम्पूर्णं ( रोग ) कुश्यादिगेण  
 ( जड ) पानी ( जलण ) अग्नि ( विसद्वर ) सर्प  
 ( चौरारि ) तस्करादिशत्रु ( मदन ) सिंह ( गय )  
 हार्थी ( रण ) संग्राम प्लान्द्यन्धि ( मव्याइं ) सर्व  
 ( भयाइं ) भय ( पत्तमन्ति ) स्वयं ही शान्त  
 होते हैं ॥ १८ ॥

## ( भावार्थ )

अथ एक गायामे पूर्वोक्त अष्टभयनिवारण-  
 रूप आतिशय कहते हैं ।

पार्श्वजिनेश्वरके नामकीर्तनसे रोगभय, जलभय,  
 आग्निभय, सर्पभय, चौरादिशत्रुभय, सिंहभय, कस्मिभय  
 तथा संग्रामभय ये आठ भय स्वयंही शान्त होते हैं ॥१८॥

अनया गाथया एतस्तोत्रमाहात्म्यं वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

एवं महाभयहरं पासर्जिणिदस्स संधवमुआरं  
भवियजणाणंदयरं कल्याणपरंपरनिहाणं ॥ १५ ॥

( छाया )

एवं महाभयहरं पार्श्वजिनेन्द्रस्य उदारं संस्तवं भव्य-  
जनानंदकरं कल्याणपरंपरानिदानं चास्ति, अथवा भव्य-  
जनानां कल्याणपरं परनिभानांच धंधकरं अस्ति ॥१५॥

( विवरणम् )

एवं पूर्वोक्ताष्टमहाभयजनितानर्थप्रतिघातकत्वेनविधुतं  
पार्श्वभगवतः उदारं अल्पशब्दसंघातमपिमहत्फलप्रदायकं  
संस्तवने इदं नमिऊणाभिधंस्तोत्रं भव्यजनानंदकरं भव्याः  
मुक्तिगमनयोग्याः ये जनाः प्राणिनः तेषां मोक्षप्रदानेन  
आनंदकरं सुखकरं कल्याणपरंपरानिदानं कल्याणरय  
मंगलस्य परंपरा संततिः तरयाः निदानं आदिवरणं च  
अस्ति । अथवा भव्याः भगवत्तथैकरसाः ये जनाः  
मानवाः तेषां कल्याणपरं मंगलैकदीक्षापरं तथा परे  
शत्रवः तेषां निभाः कपटानि तेषां धंधकरं निधंधकं  
अस्ति ॥ १५ ॥

## ( पदार्थ )

( एवं ) इस पूर्वोक्तप्रकारसे ( महाभयहरं ) मोटे भयोंका नाशकरनेवाला ( पासजिणंदरस ) पार्श्वजिन-भगवानका ( उआरं ) थोडेशब्दोंसे बहुतफलदेनेवाला ( संयवं ) नमिऊणनामकस्तोत्र ( भवियजण ) भव्य जनोंको ( आणंदयरं ) मोक्षसुखरूप आनंदकरनेवाला और मंगलकी ( परंपर ) संततिका ( निहाणं ) आदि कारण है अथवा ( भविजणाणं ) भव्यजनोंको ( कछ्छाणपरं ) मंगलदायक और, ( परनिहाणं ) शत्रुओं के कपटोंको ( अंदयरं ) बांधनेवाला है ॥ १९ ॥

## ( भावार्थ )

इस एक गाथासे इस स्तोत्रका माहात्म्य वर्णन करतेहैं ।

यह महाभयनिवारक बहुफलदायक श्रीपार्श्वप्रभुका नमिऊणनामक स्तोत्र भव्यप्राणियोंको मोक्षसुख देने वाला और अत्यन्त मंगलकारक है इसके पठनसे शत्रुओंने किये हुए मारणउच्चाटनादि सच प्रयोग व्यर्थ होते हैं ॥ १९ ॥



## ( पदार्थ )

( एवं ) इस पूर्वोक्तप्रकारसे ( महाभयहरं ) मोटे भयोंका नाशकरनेवाला ( पासजिणंदरस ) पार्श्वजिन-भगवानका ( उआरं ) थोडेशब्दोंसे बहुतफलदेनेवाला ( संथवं ) नमिऊणनामकरस्तोत्र ( भवियजण ) भव्य जनोंको ( आणंदयरं ) मोक्षसुखरूप आनंदकरनेवाला और मंगलकी ( परंपर ) संततिका ( निहाणं ) आदि कारण है अथवा ( भविजणाणं ) भव्यजनोंको ( कछ्छाणपरं ) मंगलदायक और, ( परनिहाणं ) शत्रुओं के कपटोंको ( अंदयरं ) बांधनेवाला है ॥ १९ ॥

## ( भावार्थ )

इस एक गाथासे इस स्तोत्रका माहात्म्य वर्णन करतेहैं ।

यह महाभयनिवारक बहुफलदायक श्रीपार्श्वप्रभुका नमिऊणनामक स्तोत्र भव्यप्राणियोंको मोक्षमुख देने वाला और अत्यन्त मंगलकारक है इसके पठनसे शत्रुओंने किये हुए मारणउच्चाटनादि सब प्रयोग व्यर्थ होते हैं ॥ १९ ॥

अथ शाक्ययुगलेन भयस्वानमयन्तपूर्वक  
तज्जातोपायः कथ्यते ।

॥ गाथा ॥

रायभयजक्षरक्षयस कुमुमिण दुस्सउणस्सिख-  
पीडासु संज्जासुदोसुपंधे उवसग्गे तहय रय-  
णीसु ॥ २० ॥

जो पदइ जोअ निसुणइ ताणं कह्नो य माण-  
तुंगस्स पासो पावं पसमेउ सयल भुवणचिअ  
चलणा ॥ २१ ॥

( छाया )

राजभययक्षराक्षसवृत्स्वप्नदुःशकुनकक्षपीडासु द्वयोः  
संप्ययोः पथि उपसर्गे तथाच रजनीपु य इदं स्तोत्रं पठेत्  
शृणुयाद्वा तस्य ( स्तोत्र ) कर्तुर्मानतुंगस्य च पापं  
सकलभुवनार्चितचरणः पार्श्वभ्रुः प्रशमयतु ॥ २०-२१ ॥

( विवरणम् )

नृपतियक्षदानववृत्स्वप्नदुःशकुनग्रहादिभयजनितपीडा-  
समये प्रातःकाले सायंकाले अरण्यादिमार्गगमनावसरे  
देवमनुष्य कृतोपसर्गसमये तथा च राजारवि यो जनः  
इदं “ नमिऊण ” नामकं स्तोत्रं भक्त्या पठेत् शृणुयाद्वा



तस्य, स्तुतिकर्तुर्मानतुंगाचार्यस्य चाखिलपापराशिमखिल-  
भुवनपूजितचरणकमलः पार्श्वदेवः प्रशमयतु ॥ २०-२१ ॥

( पदार्थ )

( रायभय ) राजभय ( जवख ) यक्षभय ( रक्खस )  
राक्षसभय ( कुसुमिण ) कुस्वप्नभय ( दुस्सउण )  
दुःशकुनभय ( खिख ) अशुभग्रह इन्होंकी ( पीडासु )  
पीडासमयमें और ( दोसु संञ्जासु ) 'प्रातःकाल' और  
सायंकाल में ( पंथे ) अरण्यादिमार्गमें ( उदसग्गे ) देव  
और मनुष्यकृत उपसर्गोंमें ( तहय ) और वेसेही  
( रयणीसु ) रात्रियों में ( जो ) जो मनुष्य " इस  
स्तोत्रको " ( पढइ ) पठनकरता है ( जो अनिसुणइ )  
और जो भक्तिपूर्वक सुनताहै ( ताणं ) उन्होंके  
( य ) और ( कइणो ) स्तोत्रकर्त्ता ( माणतुंगस्स ) मानतुङ्गाचार्य  
के ( पावं ) पापको ( सयल ) सम्पूर्ण ( भुवणच्चिअ )  
लोकमें अर्चितहैं ( चलणो ) चरण जिनके ऐसे ( पासो )  
पार्श्वभगवान ( पसमेउ ) नाशकरो ॥ २०-२१ ॥

( भावार्थ )

राजभय यक्षभय राक्षसभय कुस्वप्नभय अशुभग्रहभय  
इन भयोंसे पीडिताहोनेपर, प्रातःकाल सायंकालमें,  
अरण्यादिभयानक मार्गमें, देव और मनुष्यकृत संकट-

समयमें और रात्रिमें जो मनुष्य इस स्तोत्रको भक्तिपूर्वक पठन करताहै या श्रवण करताहै उसके और मानतुंगाचार्य के पापका त्रिभुवनने पूजेहैं चरणकमल जिनके ऐसे पार्श्वप्रभु नाशकरते हैं ॥ २०-२१ ॥

अनया गाथया पार्श्वभगवतोऽतिशयो वर्ण्यते ।

॥ गाथा ॥

उवसग्गंते कमठा सुरग्गि ज्झाणाउ जो नसंचं  
लिउ । सुत्तराकिन्नर जुवइहिं संयुउ जयउ पास  
जिणो ॥ २२ ॥

( छाया )

कमठासुरे उपसर्गकुर्वतिसति यः ध्यानात् न सञ्चलितः  
ससुरनरकिन्नरयुवतीभिः संरतुतः पार्श्वजिनः जयतु ॥२२॥

( विवरणम् )

कमठासुरे कमठदैत्ये उपसर्ग उपद्रवं कुर्वति आचरति-  
सति यः पार्श्वदेवः ध्यानात् नियतविषयकचित्तैवा-  
भ्यात् न सञ्चलितः न स्खलितः स सुराः देवाः नराः  
भव्यजनाः किन्नराः गंधर्वाः युवत्यः देवाङ्गनाः ताभिः  
रतुतः नुतः एतादृशः पार्श्वजिनः जयतु सर्वोत्कर्षण  
यतेताम् ॥ २२ ॥

( पदार्थ )

( कमठासुरग्गि ) कमठाने ( उवसग्गंते )

कियेसते ( जो ) जोपार्श्वप्रभु ( ज्ञाणाड )  
 ( न ) न ( संचलित ) चलायमानहुए ( सुर ) देवता  
 ( नर ) भव्यजीव ( किन्नर ) गंधर्व ( जुवइहिं )  
 देवाङ्गनाओंसे ( संधुड ) स्तुतिकिएगए ऐसे ( पासजिणो )  
 पार्श्वप्रभु ( जयउ ) विजयशालीहोवें ॥ २२ ॥

( भावार्थ )

कमठासुरने अत्यन्त त्रास देने परभी जो पार्श्वप्रभु  
 अपने ध्यानसे न संचलितहुए और देवता भव्यजीव  
 गंधर्व और देवाङ्गनाओंसे स्तुतिकिएगए ऐसे भगवान्  
 पार्श्वजिन विजयी होवें ॥ २२ ॥

॥ गाथा ॥

एअस्स मग्गयारे अट्टारस्स अक्खरोहिं जो मंतो ।  
 जो जाणइ सो ज्ञायइ परम पयत्थं फुडं पासं  
 ॥ २३ ॥

( छाया )

एतस्य मध्यभागे अष्टादशाक्षरैः ( निर्मितः ) यः मंत्रः  
 अस्ति तं ( मंत्रं ) यः जानाति सः स्फुटं परमपदस्थं  
 पार्श्वं ध्यायति ॥ २३ ॥

( विवरणम् )

एतस्य “ नमिऊणाख्यास्तोत्रस्य ” मध्यभागे “ नमि-



## ( छाया )

यः संतुष्टहृदयेन पार्श्वस्य स्मरणं करोति तस्य  
अष्टोत्तरशतव्याधिभया दूरेण नश्यन्ति ॥ २४ ॥

## ( विवरणम् )

यो जीवः संतुष्टं शान्तं हृदयं मानसं तेन पार्श्वस्य  
पार्श्वभगवतः स्मरणं ध्यानं करोति तस्य जीवस्य  
अष्टोत्तरशतसंख्याह्वयाधिजन्मानि दूरत एव नश्यन्ति  
नाशं प्राप्नुवन्ति ॥ २४ ॥

## ( पदार्थ )

( जो ) जो जीव ( संतुष्टे हृदयेण ) शान्त अंगः स्मरण  
मे ( पार्श्व ) पार्श्वप्रभुता ( सामग्य ) स्मरण ( कुण्ड )  
कर्मादि ( तस्म ) उगहे ( अद्भुत्कारस्य ) एकसो-  
आष्ट ( वादेभ्यः ) व्याधिभय ( दूरेण ) दूरसेही ( नाश )  
नष्टोत्तरे ॥ २४ ॥

## ( भावार्थ )

जो जीव आदर्शध्यान छोड़कर भगवत हृदयमे  
पार्श्वप्रभुता स्मरणकर्मादि उगहे एकसोआष्ट व्याधिभय  
दिष्टोत्तरेभ्ये भय दूरसेही नष्टोत्तरे ॥ २४ ॥

इति श्रीमद्भगवत्पद्मसंहितायां अष्टोत्तरशतव्याधिभयनाशयोगो नाम

चतुर्थोऽध्यायः ॥ २४ ॥

॥ २४ ॥

अथ श्रीजिनदत्तमूर्च्छिततंजयास्व्यस्तोत्रं  
प्रारभ्यते.

॥ श्री धीतरागायनमः ॥

तं जयउ जएतित्थं जमित्थ तित्थाहिवेणवीरेण  
सम्मं पवत्तियं भव्वसत्तसंताणमुहजणयम् ॥ १ ॥

( छाया )

तत् जगति तीर्थं जयतु यदत्र भव्यसत्तसंतानमुखजनकं  
तीर्थाधिपेन धीरेण सम्यक् प्रवर्तितम्

( पदार्थ )

( तं ) वह प्रसिद्ध ( जए ) जगतमें ( तित्थं ) चतुर्वर्ण  
संघ ( जयउ ) विजयको प्राप्त होओ ( जम् ) जो ( इत्थं )  
इस जगतमें ( भव्व ) नव्य ( सत्त ) जीवके ( संताण )  
समूहको ( मुह ) मुख ( जणयम् ) पैदा करनेवाला  
( तित्थाहिवेण ) चतुर्विध संवकेस्वाधी ( धीरेण ) महावी-  
रस्वामीने ( सम्म ) मलेप्रकारसे ( पवत्तियम् ) स्थापन  
किया

## ( भावार्थ )

जो चतुर्भुज संघ इसजगतमें भव्य जीवोंके समूह को मुक्त पेश करने माला और चतुर्भि संघके स्वामी श्रीमहावीरसामीने धमनर्यादानुसार स्थापन किया हुआ वह संघ विजयको प्राप्त होओ

## ( गाथा )

नामिय सयञ्जिलेसा निहय क्लेस्सा पसत्थ मुह-  
लेम्मा भिसिद्धमाणतित्थस्स, मंगले दिन्तुवे  
अरिहा ॥ २ ॥

## ( लाया )

नाशित मरुत्त क्लेशाः निहत कुन्देश्याः प्रशान्त शुभ  
क्लेश्याः ते अर्हन्ताः श्रीवर्धमानवीर्यस्य मंगलं ददतु

## ( पदार्थ )

( नामिय ) नाशकियं ( सयञ्ज ) सम्पूर्ण ( क्लेस्सा )  
कर्मजन्यदुःखजिन्होंने ( निहय ) नाशके हैं ( कु )  
मरुत्त ( लेम्मा ) क्लेशादिक्लेशा जिन्होंने ( पसत्थ ,  
मुहले ) योग्य ( मुह लेम्मा ) शुभ्यादिक्लेश  
जिन्होंने ( ते ) वे प्रसिद्ध ( अरिहा ) अर्हन्त नामक  
( भिसिद्धमाणतित्थस्स ) श्रीवर्धमानवीर्यस्य नामक

स्थापनकियेहुए चतुर्विध संघको ( मंगल ) कल्याण  
( दिन्तु ) देओ

( भावार्थ )

नाशकियेहैं सम्पूर्ण कर्मजन्य दुःख जिन्होंने नाशकीहैं ,  
खराब कृष्णादि लेश्या जिन्होंने और स्तुतिके योग्यहैं ,  
शुभ भुवलादिलेश्या जिन्होंकी ऐसे वे प्रसिद्ध अर्हन्त  
भगवान श्रीवर्धमान तीर्थकर भगवानने स्थापनाकियेहुए  
चतुर्विधसंघको मंगल देओ

( गाथा )

निदृष्टकम्मवीजा, वीजापरमेष्ठिनो गुणसमिद्धा, ॥  
सिद्धा तिजयपसिद्धा हणन्तु दुत्थाणि तित्थ-  
स्त ॥ ३ ॥

( छया )

निदृग्धकर्मवीजाः गुणसमृद्धाः त्रिजगत् प्रसिद्धाः द्वितीय-  
परमेष्ठिनः सिद्धाः तीर्थस्य दौस्थ्यानि मन्तु

( पदार्थ )

( निदृष्ट ) जलादियेहैं ( कम्म ) अष्टकर्मरूप ( वीजा )  
धीजजिन्होंने ( गुण ) सदुणोंसे ( समिद्धा ) व्याप्त  
( तिजय ) तर्निजगतमें ( पासिद्ध ) दिल्यात ( वीजा )



दूसरे ( परमोद्विणो ) परमेष्ठीभगवान ( सिद्धा ) सिद्धसंज्ञक  
( तित्थरस्त ) चतुर्विधसंघके ( दुत्थाणि ) क्लेशोंको ( हणन्तु )  
नाशकरो.

( भावार्थ )

जलदियेहैं अष्टज्ञानावरणदि कर्मरूप बीज जिन्होंने  
सद्गुणोंसेव्याप्त तीनो जगतमें दिख्यात ऐसे दूसरे  
परमेष्ठी भगवान सिद्ध संज्ञक चतुर्विधसंघके क्लेशोंको  
नाशकरो.

( गाथा )

आयारमायरंता पंचपयारं सया पया संता ॥  
आयरिथा तह तित्थं निहय कुतित्थं पयासन्तु ॥३॥

( छाया )

( ज्ञानदर्शनचारित्र्य तपोधीर्यादि ) पञ्च प्रकारं आचारं  
( स्वयं ) आचारन्तः तथा सदा ( अन्येभ्यः ) प्रकाशयन्तः  
आचार्याः निहतकुर्त्वीर्यं ( एतादृशं ) तीर्थं प्रकाशयन्तु

( पदार्थ )

( पंचपयारं ) ज्ञान, दर्शन चारित्र्य, तप धीर्य ये पांच  
हैं प्रकार जिसके ऐसे ( आयारं ) आचार्य्ये ( आयरंता )

स्वयं आचारणं करनेवाले (तह) और ( सया ) सदा भव्यजीवोंके अर्थ ( पयासन्त ) प्रकाश करनेवाले ऐसे ( आयरिया ) आचार्य (निहय) नाश किया है (कुतित्थं) बौद्धादिकुतीर्थ जिसने ऐसे ( तित्थं ) चतुर्विधसंघको ( पयासन्तु ) उद्यतकरो

( भावार्थ )

ज्ञान दर्शन चाग्नि तप दीर्य ये पांच हैं प्रकार ।जिसके ऐसे आचारको स्वयं आचारण करनेवाले और सदा भव्यजीवोंकेअर्थ प्रकाश करनेवाले ऐसे तृतीय परमेष्ठी आचार्य भगवान नाश किया है बौद्धादि कुतीर्थ जिसने ऐसे चतुर्विधसंघको उद्यतकरो

( गाथा )

सम्ममुअवायगावायगाय सिअवायवायगावाए ॥  
पवयणपाडिणीयकए वणंन्तु सच्चस्ससंघस्स ॥ ५ ॥

( छाया )

ये सम्यक् श्रुतवाचकाशचकाश्च स्याद्वाद्वादकाः (चतुर्थ परमेष्ठिनः उपाव्यायाः ) सर्वस्य संघस्य प्रवचनप्रत्य नाकान् अपनयन्तु

## ( पदार्थ )

( ए ) वेप्रसिद्ध ( सम्म ) उत्तमप्रकारसे ( सुअ ) द्वादशांगरूप सिद्धान्तके ( वायगा ) वाचक ( य ) और ( वायगा ) अनेक तत्वोंकेवाचक ( वा ) और ( सिअत्राय ) स्याद्वादके ( वायगा ) स्पष्टकरने वाले ऐसे चतुर्थ परमेष्ठी उपाध्यायभगवान ( सञ्चरस ) संपूर्ण ( संघरस ) चतुर्विधसंघके ( पवयण ) उत्तम जिनशासनके ( पडिणी-यकए ) प्रद्वेषियोंको ( वगिन्तु ) दूर करो-

## ( भावार्थ )

वे प्रसिद्ध उत्तमप्रकारसे द्वादशांगरूप सिद्धान्तके वक्ता और अनेक तत्वोंके प्रकाशक और स्याद्वादको स्पष्टकरने वाले ऐसे चतुर्थपरमेष्ठी उपाध्याय भगवान सम्पूर्ण चतुर्विधसंघके जिनशासनविद्वेषियोंको दूर करो

## ( गाथा )

निञ्चाण माहणु त्रय माहणं जणियमच्चमाहञ्जा ॥  
तित्थप्पभावगाने हवन्तुपरमेष्ठिणोज्झणो ॥ ६ ॥

## ( श्लोका )

निर्वागसाधनोघनमाधूनां जनिममन्साहाप्याः तीर्थ-  
प्रनाक्ताः ते ( पञ्चन ) पगोदिनः जयिनः भान्तु

( पदार्थ )

( निव्याण ) मोक्षके ( साहण ) साधनमें ( उज्जय )  
 लगेहुए ( साहणं ) साधुओंको ( जणिय ) उत्पन्नकीहे  
 ( सब्ब ) सबतन्हासे ( साहज्झा ) मदत जिन्होंने(तित्थ)  
 चतुर्विधसंधके ( प्पभाक्का ) प्रभावकोविल्यातकरनेवाले  
 ( ते ) वे ( परमेष्ठिणो ) पञ्चमपरमेष्ठी भगवान  
 ( जइणो ) विजयी ( ह्वन्तु ) होओ

( भावार्थ )

मोक्षके साधनमें लगेहुए साधुओंको उत्पन्नकीहे सब-  
 तन्हासे मदत जिन्होंने चतुर्विधसंधके प्रभाव को विल्यात  
 करनेवाले वे पञ्चमपरमेष्ठी भगवान विजयी होओ।

( गाथा )

जेणाणुगयं नाणं, निव्याणफलं च चरणमाविह्वई ॥  
 तित्थस्स दंसणं तं मंगुलमवणेउसिद्धियरम् ॥ ७ ॥

( छाया )

येनाणुगतंज्ञानं चचरणमावि निर्वाणफलं भवति सिद्धिकरं  
 तत् तीर्थस्य दर्शनं मंगुलं अपनयतु

( पदार्थ )

( जेण ) जिससे ( अणुगयं ) प्राप्तकियाहआ ( नाणं )

ज्ञान ( च ) और ( चरणमन्त्रि ) चारित्रभी (निष्ठाफलं)  
मोक्षहै फल जिसका ऐसा ( हर्ष ) होता है (सिद्धियरं)  
सकलकार्य साधक ( तं ) वह ( तित्थस्स ) तीर्थके  
( दंसण ) दर्शन ( मंगुलं ) दुर्घ्यानको ( अणोउ )  
दूरकरो

( भावार्थ )

जिससे प्राप्त किया हुआ ज्ञान और चारित्र भी मोक्षफल  
रूप होता है ऐसा वह सकल कार्य साधक तीर्थका दर्शन  
हमारे दुर्घ्यानको दूरकरो

( गाथा )

निच्छम्मो सुअधम्मो, समग्ग भव्वंगिवग्गकयसम्मो  
गुणमुट्ठियस्स संवस्स मंगलं सम्माभिह दिसउ ॥२॥

( छाया )

समग्रमन्याङ्गिर्वर्गकृतशर्मा निच्छन्नाः श्रुतधर्मः गुण-  
मुस्थितस्य संवस्य मंगलं सम्यग्भिह दिशतु

( पदार्थ )

( समग्ग ) संपूर्ण ( भव्वंगि ) भव्यप्राणियोंके ( वग्ग )  
समुदायको ( कय ) किया है ( सम्मो ) सुप्रजितने  
( निच्छम्मो ) कपटग्रहित ( सुअधम्मो ) शास्त्रोक्त

धर्म ( गुण ) ज्ञानादिगुणोंमें ( सुद्वियस्त ) निरंतर रहेहुए ऐसे ( संघस्य ) चतुर्विधसंघको ( इह ) इस जगतमें ( सम्मं ) सम्यक् प्रकारसे ( मंगलं ) कल्याण दिसउ ) देओ.

( भावार्थ )

सम्पूर्ण भव्यप्राणियोंके समुदायको कियाहै सुख जिसने ऐसा कपटरहित जैनशास्त्रोक्तधर्म ज्ञानादि गुणोंमें निरंतर रहेहुए ऐसे चतुर्विधसंघको इसजगत में मंगल देओ.

( गाथा )

रम्मोचरित्तधम्मो संपाविअभव्यसत्तसिवसम्मो ॥  
नीसेस किलेसहो हवउ सया सयल संघस्स ॥५॥

( छया )

संप्रापितभव्यसत्त्वशिवशर्मा रम्यः चारित्रधर्मः सवत्स-  
संघस्य सदा निःशेषकृशाहरः भवतु.

( पदार्थ )

( संपाविअ ) भले प्रकारसे प्राप्तकरायाहै ( भव्यसत्त्व )  
भव्य प्राणियोंको ( सिय ) मोक्षरूप ( रम्मो ) सुख  
जिसने ( रम्मो ) सुन्दर ( चरित्तधम्मो ) चारित्र रूपधर्म



अस्य ) प्रकृत क्रिया तुआ ( ममग्गम ) ममप्र ( विन्ध-  
 म्सा ) चतुर्विधसंयत्ता ( वृमन्तं ) वृमन्त ( वृणन्तु ) करो.

( भाष्यार्थ )

मांशमुत्तमं आकांक्षां जिनहोत्री ज्ञानादिगृहोक्ते.  
 ममुदायकके महान एमे श्रीतस्मिन्नाचार्यादिवर्माचार्य  
 श्रीमहावीर्यमुने प्रकृतक्रियातुआ ममप्र चतुर्विधसंयत्ता  
 वृमन्त करो.

( गाथा )

जियपडियवग्वा जयग्वा मांमुहमायंग मयमुह  
 एमुक्त्वा ॥ मिग्धिंभमेनि महिआ वयनयवग्वा  
 विधं दिनु ॥ ११ ॥

( ट्याया )

श्रीमहाशान्ति महिआः पूजावग्वाः मांमुहमायंग  
 मजमुहप्रमुक्त्वा जियप्रनिवग्वाः वग्वाः विधं ददतु.

( पदार्थ )

( जिय ) जीवितं ( पडियवग्वा ) भगवत्संज्ञात्वं  
 प्रतिपत्ती जिनहोत्रि ( वय ) वरि ( मय ) ममवग्वा वर-  
 नेवार्थोक्ती ( एमुक्त्वा ) एता जिनहोत्रि ( दिनु ) दयेकमुह  
 ( वनमेनि ) महाशान्तिवग्वा ( महिआ ) महि ( मांमुह )



गोमुख नामकयक्ष ( मायंग ) मातंग यक्ष ( गयमुह )  
 गजमुखयक्ष ये यक्ष हैं ( पमुक्खा ) मुख्यजिन्होंमें ऐसे  
 ( जम्वा ) सकल यक्ष ( सिवं ) कल्याण ( दिन्तु ) देओ.  
 ( भावार्थ )

जीतेहैं भगवच्छासनप्रतिपक्षी जिन्होंने कीहै नम-  
 स्कार करनेवालोंकी रक्षा जिन्होंने शोभायुक्त ब्रह्मशान्ति  
 यक्षके साथ गोमुख, मातंग, गजमुखयक्ष हैं मुख्य जि-  
 न्होंमें ऐसे सकलयक्ष भगवत् स्तुति करनेवाले भव्यजी-  
 वोंको कल्याण देओ.

( गाथा )

अंबा पडिहयडिंवा सिद्धासिद्धाइआ पवयणस्त  
 चक्रेसरि वइरुट्टा संतिसुरादिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥

( छाया )

प्रातिहत डिंवा अंबा सिद्धा सिद्धायिका चक्रेश्वरी वैरोट्या-  
 शांतिसुरा प्रवचनस्य सौख्यानि दिशतु.

( पदार्थ )

( पडिहय ) नाशकरियेहैं ( डिंवा ) उपसर्ग जिसने ऐसी  
 ( अंबा ) नेमिजिन भगवानकी उपासिकादेवी ( सिद्धा )  
 वर्धमानस्वामीके शासनकी रक्षासे प्रासिद्ध ऐसी ( सिद्धाइया )

सिद्धायिका देवी ( चक्रेश्वरी ) चक्रेश्वरी ( वंदरुद्रा )  
 वैरोट्या और ( संतिमुरा ) शान्ति देवता ये देव  
 तापंचक ( पवयणस्त ) चतुर्घर्णसंघको ( मुख्वाणि )  
 मनोवांछित ( दिसउ ) देओ.

( भावार्थ )

नाशकियेहें सम्पूर्ण क्लेशादि जिसने ऐसीं नेमिजिन  
 भगवानकी उपासिका अंघादेवी, वर्द्धमानस्वामीके शासनकी  
 रक्षासे प्रासिद्ध सिद्धायिका चक्रेश्वरी, वैरोट्या और शा  
 न्तिमुरा ये देवता पंचक चतुर्घर्ण संघको मनोवांछित  
 फल देओ.

( गाथा )

सोलसविज्झादेवी उदित्तुसंघस्समंगलंविउलं ।  
 अच्चुत्तासहिआउ विस्सुअमुअदेवयाइसमं ॥ १३ ॥

( छया )

अच्चुत्तासहिताः विश्रुतश्रुतदेवतया समं षोडश विद्या  
 देव्यः संघस्य निपुलं मंगलं ददतु-

( पदार्थ )

(अच्चुत्ता सहिआउ) अच्चुत्ता देवी सहित (विस्सुअ)  
 विख्यात ऐसी ( मुअदेवआइ ) श्रुतदेवताके ( समं )

साथ ( सोलस ) सोलह ( विज्ञादेवी ) अधिष्ठायिका  
विद्यादेवियां ( संघसस ) चतुर्विधसंघको ( मंगलं ) क-  
ल्याण ( विउलं ) बहुत ( दिंतु ) देओ.

( भावार्थ )

अच्छुसादेवी सहित विख्यात श्रुतदेवताके साथ सोलह  
अधिष्ठायिका विद्यादेवियां चतुर्विधसंघको अत्यंत कल्याण  
देओ.

( गाथा )

जिणसासणकयरक्खा जक्खाचउवीमसासणसुरावि'  
॥ सुहभावासंतावं तित्थत्ससयापणा संतु ॥ १४ ॥

( छाया )

जिनशासनकृतरक्षाः यक्षाः च शुभभावाः चतुर्विंशति'  
शासनसुराअपि सदा तीर्थरय संतापं प्रणाशयन्तु.

( पदार्थ )

( जिणसासण ) जिनशासनमें उत्तम हुए हुए उपद्रव  
निवारण रूप ( कयरक्खा ) कीहै रक्षा जिन्होंने ऐसे ( ज-  
क्खा ) यक्ष और ( सुहभावा ) शुभहै भाव जिन्होंने ऐसी  
( चउवति ) चौदास ( सासणसुरा ) जिनशासनकी अ-

अध्यायिका देवियां ( वि ) भी ( सया ) सदा ( तित्थरस )  
चतुर्विधसंघके ( संतापे ) संतापको ( पणासंतु ) नाशकरो.

( भावार्थ )

जिनशासनमें उत्तम हुए हुए उपद्रव निवारण रूप की है  
रक्षा जिन्होंने और शुभहै भाव जिन्होंने ऐसी चौबीस  
जिनशासनकी अध्यायिका देवियां भी हमेशा चतुर्विध  
संघके संतापको नाशकरो.

( गाथा )

जिणपवयणांमिनिरया विरयाकुपहाउसच्चहासव्वे ॥  
वेयावच्चकरात्रिय तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥१५॥

( छाया )

जिनप्रवचने निरताः कुपधात् सर्वथा विरताः सर्वे  
वेयावच्चकराश्चापि तीर्थस्य शान्तिकराः भवन्तु.

( पदार्थ )

( जिण पवयणांमि ) जिनशास्त्रमें ( निरया ) किया है  
आदर जिन्होंने ( कुपधाउ ) महिपवय रूप निंदनीक  
मार्गसे ( सच्चहा ) सब प्रकारसे ( निरया ) जुड़े ( य )  
और ( सव्वे ) सब ( वेयावच्चकरा ) वेयावच्च करने

वाले ( वि ) भी ( तित्यस्त ) चतुर्विध संघतो ( संनि-  
करा ) दुस्तिरोपशमन करने वाले ( ह्यन्तु ) होओ.

( भावार्थ )

जिन शान्त्वमें किया है आकर जिनोंने महिषरूप रूप  
निंदनीक मार्गमें मर्त्या जुरे और सब येयायच करने-  
वाले भी चतुर्विध संघतो दुस्तिरोपशमन करनेवाले  
होओ.

( गाथा )

त्रिणमय मिद्ध मुमगा वहिय भज्याण जणिय  
साद्वजो ॥ गीयर्द गीयजमो न परिसरो सुहंदि-  
सउ ॥ १६ ॥

( आया )

त्रिणमयमिद्धमुमगावहियभज्याणां जणितरसाध्यः  
गीयर्दः गीयजिः गीयजसाः गुणं दिशतु.

( पदार्थ )

( त्रिण मय ) त्रिनशान्त्वमें ( मिद्ध ) निजिन ( मुमगा )  
जो मृत्तार्ग उममें ( वहिय ) आश्रय गति ( भज्याण )  
न्यस्तहोद्यो ( जणिय ) उपरत किया है ( साद्वजो )  
साध्य त्रिनमें पंकेतीयर्द ) दक्षिण दिग्भव गीयर्दि

नामक व्यंतर और ( गीतयज्ञो ) उच्चर दिग्भव गीत-  
यज्ञ नामक व्यंतर ( सपरिवारो ) द्वादश विध गंधर्व  
निकाय सहित ( मुहं ) सुख ( दिसउ ) देओ ।

( भावार्थ )

जिनशास्त्रमें निश्चित सुमार्गानुसार आराधन में साव-  
धान ऐसे भव्य जीवोंको उत्पन्न किया है तर्हि यात्रादि  
उत्सवमें सहाय जिनने ऐसे दक्षिणोत्तरभव गीतराति  
और गीतयज्ञ नामके व्यंतरद्वय द्वादशविधगंधर्व  
निकाय सहित चतुर्विध संधको सुख देओ ।

( गाथा )

गिद्धि गुत्त खित्त जल थल वण पव्वय वास देव  
देवीउ ॥ जिणसासणाट्टिआणं दुहाणि सव्वाणि  
निहणंतु ॥ १७ ॥

( छाया )

प्रहगोत्रक्षेत्रजलरथलयनपर्वतवासिदेवदेव्यः जिन्-  
शासनस्थितानां सर्वाणि दुःखानि निहन्तु ।

( पदार्थ )

( गिद्धि ) घरमें ( गुत्त ) गोत्रमें ( खित्त ) क्षेत्रमें ( जल )  
जलमें ( थल ) रथलमें ( वण ) वनमें ( पव्वय ) पर्व-

तमें ( वास ) निवास करने वाले ( देव ) देवता और ( देवीउ ) देवियां ( जिण सासन ) जिन शासनमें ( द्विआणं ) स्थित भव्य जीवों के ( सञ्जाणि ) संपूर्ण ( दुहाणि ) दुःख ( निणंणु ) नाशकरो ।

( भावार्थ )

धरमें गोत्रमें क्षत्रमें जलमें स्थलमें वनमें परागमें निवास करने वाले देव और देवियां जिनशासन में स्थित भव्य जीवों के क्लेश निवारण करो ।

( गाथा )

दमदिमिपाल्या सखितपाल्या नवग्गहा मन-  
कल्ला ॥ जंझणि गहुग्गह काल पाम कुट्टि अद्ध  
पहमेहिं ॥ १८ ॥

मह काल कंठ गृहिं मविट्टिवन्धेहिं कालेव्या हि-  
।अन्धे मज्जत्थ गृहं दिमन्नुमत्तम्म मंथम्म ॥ १९ ॥

( ट्याया )

सन्धेत्तत्तकः दमदिमपाल्याः नवक्षयाः नवक्षया  
केमिनी सखित कालपाला कुट्टिहोपदंभेः मह का १८ ।  
मह मविट्टिवन्धेः कालेव्याहिः मह मन्धे मन्धे मन्धे  
मन्धे मन्धे दिमन्नु

## ( पदार्थ )

( सविचपालया ) क्षेत्रपालोंके साथ (दशदिसपाला)  
 दशदिग्पाल ( सनखिचत्ता ) सत्ताईस नक्षत्रोंके साथ  
 ( नवग्रहा ) नौग्रह ( जोइणि ) योगिनी ( राहुग्रह )  
 राहु नाम ग्रह ( कालपास ) कालपाशयोग ( कुलिय )  
 कुलिकयोग ( अर्धप्रहोर्हि ) अर्धप्रहर योगोंके साथ  
 ( सहकालकंटक णाह ) कालकंटक योग क साथे  
 ( सविट्टि ) भद्राके साथ ( दत्थेहिं ) दत्त सहित  
 ( कालवेलाहिं ) कालवेलाके साथ ( सब्बे ) संपूर्ण  
 दिक्पालादि (सव्वरस) संपूर्ण (संघास) संघको (सव्वत्थ)  
 सब अर्थ सहित ( सुई ) मुख ( दिसन्तु ) देओ ।

## ( भावार्थ )

क्षेत्रपालकोंके साथ सत्ताईस नक्षत्रोंके साथ योगिनी  
 राहुग्रह कालपाशयोग, कुलिकयोग, अर्धप्रहरयोग काल-  
 कंटक योग भद्रा दत्तयोग कालवेला इत्यादि योगोंके  
 साथ दशदिक्पाल और नवग्रह ये सब संपूर्ण संघको  
 सब मनोनाशिल्लिख मुख देओ ।

## ( गाथा )

भवणवइवाणमंतर जोइसवेमाणि यायजे देवा ।  
 धरणिंदसक्क सहिया दलंतु दुरियाइं तित्थस्सा॥२०॥



## ( छाया )

(अमुरानुमागता दशभेदाः) भवनज्जयः ( विशाखादि-  
षोडशप्रकाशः) शानज्जंगमाः ज्योतिष्करीमानिहाभये देवाग्ने  
धरणिद्राशक्रमादिनाः (मन्त्रः) शीर्षेभ्यः दुग्निनि दृश्यन्तु ।

## ( पदार्थ )

(भगवत्पद) अमुरकुमारादि दश भवनपति (वागमन्तर)  
विशाखादि सोलह शानव्यन्तर ( जोइस ) ज्योतिष्क (य)  
और ( येमागिया ) वैमानिक ( जे ) जो ( देवा )  
देश्या ( धरणिद्रसत्कसाहिया ) धरणिद्रादि शक्रसहित  
होकर ( तित्थस्त ) संघके ( दुरियाइं ) पापों को  
( दलंतु ) नाशकरे ।

## ( भावार्थ )

अमुरकुमारादि दश भवनपति विशाखादि सोलहवान  
व्यन्तर जोतिष्क और वैमानिक देवता ये सब धरणिन्द्रादि  
शक्रोंकेसाथ संघके पापोंको नाशकरे !

## ( गाथा )

चक्कंजस्सजलंतं गच्छइपुरउं पणासियतमोहं  
तंतित्थस्स भगवउं नमो नमोवद्धमाणस्स ॥२१॥

( छाया )

प्रणाशिततमओषं तत् ज्वलच्चक्रं यस्य पुण्यगच्छति  
(तस्मै) तीर्थकराय भगवते वर्द्धमानाय नमो नमोऽस्तु ।

( पदार्थ )

( पणासिय ) नाशकियाहै ( तमो हं ) अज्ञानरूप  
अंधकारका समूह जिसने (तं) वह अपूर्व (जलंतं) तेजसे  
देदीप्यमान ( चक्रं ) घर्नचक्र ( जस्त ) जिन भगवान्  
के ( पुरत ) आगे ( गच्छइ ) चलता है ( उन )  
( तित्यस्त ) तीर्थकर (भगवत) भगवान् (वर्द्धमाणस्त)  
वर्द्धमानस्वामीको (नमो नमो) धारंवार नमस्कार होओ ।

( भावार्थ )

अज्ञानरूप अंधकारको नाशकरनेवाला तेजसे देदीप्य-  
मान वह अपूर्व घर्नचक्र जिन भगवान्के आगे चलता  
है उन तीर्थकर भगवान् वर्द्धमान स्वामीको धारंवार  
नमस्कार होओ ।

( गाथा )

सो जयउ जिणोवीरो जस्त जविसासणं जए-  
जयइ । सिद्धिपहसासणं कुपहनासणं एव्वभव-  
महणं ॥ २२ ॥

( श्रुत्या )

स जिनवीरः जयतु यस्य सिद्धिपथशासनं कुपथ-  
नाशनं सर्वभयमथनं शासनं अद्यापि जगति जयति ।

( पदार्थ )

( सो ) वे प्रसिद्ध ( जिणोवीरो ) जिनभगवान्  
महावीर स्वामी ( जयउ ) विजयको प्राप्तहोओ ( जंस )  
जिनभगवानका ( सिद्धिपहसासणं ) मुक्तिमार्गका उपदेशक  
( कुपहनासणं ) मिव्यावादी कुमार्गनाशक ( सब्बभयमहणं )  
संपूर्णभयविध्वंसक ( सासणं ) शासन ( अजवि ) सांप्रत  
भी ( जए ) जगतमें ( जयइ ) विजयको प्राप्त होता है ।

( भावार्थ )

वे प्रसिद्ध जिनभगवान् महावीरस्वामी विजयशाली  
होओ, जिन परमेश्वरका मुक्तिमार्गका उपदेशक  
मिव्यावादीकुमार्गनाशक संपूर्णभयविध्वंसक शासन  
सांप्रत भी जगतमें विजयको प्राप्त होताहै ।

( गाथा )

मिरिउत्तभसेण पमुहा ह्यभगनिवहा दिमंतु  
नित्थम्स । सब्वाजिणाणंगणहारिणाणहं वंछियं  
मुच्चं ॥ २३ ॥

( छाया )

श्रीऋषभसेनप्रमुखाः हतभयनिवहाः सर्वजिनानां-  
गणधारिणः तीर्थस्य अनघसर्ववाञ्छितं दिशन्तु ।

( पदार्थ )

( सिरि ) शोभायुक्त ( उसभसेण ) ऋषभसेनहै  
( प्रमुहा ) प्रमुख जिन्होंमें ( हय ) नष्टहुवाहै ( भय )  
संसारभयोंका ( निवहा ) समूह जिन्होंका ऐसे ( सर्व )  
सम्पूर्ण ( जिगाणं ) ऋषभ अजितादि तीर्थकरोंके  
( गणधारिणो ) गणधर ( तित्थरस ) चतुर्विधसंघको  
( अणहं ) अकलंकित ( सर्व ) अखिल ( वाञ्छियं )  
अमिलपितमुख ( दिशन्तु ) देओ ।

( भावार्थ )

शोभायुक्त ऋषभसेनहै प्रमुख जिन्होंमें और नष्टहुआहै  
संसारसंबन्धी भयसमूह जिन्होंका ऐसे सम्पूर्ण तीर्थकरोंके  
१४५२ गणधर चतुर्विध संघको अकलंकित अखिल  
अमिलपित मुखदेओ ।

( गाथा )

सिखिद्धमाणतित्थाहिवेण तित्थंसमप्पियंजस्स  
भगमंमुहम्मसामी दिसउ मुहं सवलसंघंस्स ॥२॥

( छाया )

श्रीवर्द्धमानतीर्याधिपेन तीर्थं समर्पितं सुधर्मस्वामी यस्य  
सकलसंघस्य सम्यक् सुखं दिशतु ।

( पदार्थ )

( सिरि ) शोभायुक्त ( वर्द्धमाणतित्थाहिवेण ) तीर्थके  
अधिप वर्द्धमानस्वामीने ( तित्थं ) चतुर्विधसंघरूपतीर्थं  
( समधिप्यं ) समर्पितक्रिया ( सुहम्मसामी ) पंचमगणधर  
सुधर्मस्वामी ( जस्त ) उस्त प्रसिद्ध ( सलय ) सकल  
( संघस्त ) संघको ( सम्मं ) भलेप्रकार ( सुहं ) सुख  
( दिसउ ) देओ ।

( भावार्थ )

तीर्थके अधिप श्रीवर्द्धमान स्वामीने चतुर्विधसंघरूप  
तीर्थे समर्पितक्रिया. उस्त प्रसिद्ध संपूर्ण संघको पंचम  
गणधर श्रीसुधर्मस्वामी भली भांति सुखदेओ ।

( गाथा )

पर्यईभइयाजे भद्दाणि दिसन्तु सयलसंघस्त ।  
इयसुराविद्धुसम्मं जिणगणहरकहियकारिस्स ॥२५॥

( छाया )

भद्रयाप्रकृत्योपलक्षिताः येजीवाइतासुराअपि सम्य-

गिनगणधरवधितकारिणः सकलसंपन्न भद्राणि  
दिसन्तु ।

( पदार्थ )

( भद्रया ) पापरहित ( पर्यङ्ग ) प्रकृतिसेयुक्त ( जे )  
जो जीवहैं वे और ( इयर ) दूसरे ( सुगवि ) देवताभी  
और ( सम्मं ) सम्यक् प्रकारसे ( जिगगणहर ) जिन  
गणधरोंके ( कहिय ) कथनको ( कारिसि ) करने  
वाले ( सयल ) संपूर्ण ( संपस्त ) संपन्नो ( भद्राणि )  
कल्याण ( दिसन्तु ) देओ ।

( भावार्थ )

स्वभावसेही कल्याणकारी भव्यजीव और दूसरे देवता  
भी जिनगणधरोंकी आज्ञाको सम्यक् पालनेवाले  
संपूर्ण संपन्नो कल्याण देओ ।

( गाथा )

इयजो पदइतिसंज्ञं दुस्सज्जं तस्सनच्छिक्किंपि-  
जए । जिणदत्ताणायद्धिउ मुनिट्टियटोसुहीहोइ ॥२६॥

( छाया )

यः नरः इदं स्तोत्रं त्रिसंभ्यं पठति तस्य जगति किमपि

दुःसाध्यं नास्ति । जिनदत्ताज्ञायांस्थितः सुनिष्ठितार्थः सन्  
सुखी भवति ।

### ( पदार्थ )

( जो ) जो मनुष्य ( इय ) इस स्तोत्रको (तिसंज्ञं)  
त्रिकाल ( पढ़इ ) पठनकरताहै ( तस्स ) उसको (जए)  
जगतमें ( किंपि ) कुछभी ( दुरसज्जं ) दुःसाध्य  
( नच्छि ) नहीं है ( जिण ) जिनभगवानने ( दत्त )  
दीहुई ( अणाय ) आज्ञामें ( ठिउ ) स्थित पुरुष  
( सुनिष्ठियट्ठो ) सिद्धार्थ होकर ( सुही ) मोक्षमुख  
भागी ( होइ ) होता है ।

### ( भावार्थ )

जो मनुष्य इस स्तोत्रको त्रिकाल पठनकरताहै उसको  
जगतमें कुछभी दुःसाध्य नहींहै जिनभगवानकी आज्ञा  
में स्थित पुरुषों की सब कामना परिपूर्ण होकर वे मोक्ष  
सुखभागी होतेहैं ।

इन्दुरदेशीय जैनश्वेताम्बर मुख्यपाठशालाध्यापक

गोपीनाथसूनूपण्डित श्रीकृष्णशर्मकृतसुबो-

धिनी व्याख्यासहितं जिनदत्तसूरिकृत

तंत्रयाख्यस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री ॥

॥ श्रीवितरागायनमः ॥

गुरुपारतन्व्य स्तोत्रम्

॥ गाथा ॥

॥ मयरहित्यंगुणगणरण सायरंसायरंपणामिऊणं ।  
॥ सुगुरुजणपारतंतं उवहिव्वयुणामितंवेव ॥ १ ॥

( छाया )

अहं उदधिमिव मयरहितं गुणगणरत्नसागरं तं सु-  
गुरुजनपारतंतं सायरं प्रणम्य स्तवीमिचेति ( चेति  
शब्दो समुच्चयावधारणार्थी ) प्रणम्य स्तवीमिचेति ॥ १ ॥  
घः समुच्चये अन्यस्तोतव्यत्यागेन तमेवेत्यवधारणम् ।  
उदधिपक्षे पदच्छेदाः मकर हितं मकरेभ्यो जलजन्तु  
विशेषेभ्यो हितं हितकारकं गुणगणरत्नसाकारं गुणानां  
शूलादिरोगापहारिणां ऋद्धिवृद्धिसौभाग्यादिजनकानांच  
गणः ओषः सन्निघतेषुतानि गुणगुणरत्नानिच सा  
लक्ष्मीश्च तयोः आकरः स्थानं तम् सातरं सातं सुखं शति  
ददातीति सादरम् ॥ १ ॥





समुद्रके समान अठमरौते रहित ज्ञानादिगुणोंके समूह रूप रत्नोंकी लक्ष्मीके लाभको देनेवाले ऐसे सुगुण मुषतंस्त्राणि प्रमुख आचार्योंके आम्नायकों आदर पूर्वक नमस्कार कर रतुति करता हूँ ॥ १ ॥

॥ गाय ॥

निम्नह्रियमोहजोहा निहयतिरोहापणहसंदेहा ।  
पणयंगिदग्गदाविय मुहसंदोहासुगुणगेहा ॥ २ ॥

( छाया )

निर्मथितमोहयोधाः निहृतविरोधाः प्रणहसंदेहाः प्रण-  
ताङ्गिर्गदापितसुखसंदोहाः सुगुणगेहाः ॥ २ ॥

( पदार्थ )

( निम्नह्रिय ) नष्टकिये हैं ( मोहजोह ) मोहरूप योधा जिन्होंने ( पणह ) नष्टकिये हैं ( संदेहा ) हृदयके संदेह जिन्होंने ( पणयंगि ) प्रणाम करने वाले प्राणियोंके ( दग्ग ) समुदायको ( दाविय ) दीये हैं ( मुह ) सुखके (संदोहा) समूह जिन्होंने (सुगुण) दृष्टीस श्रेष्ठ गुणोंके ( गेहा ) निवास स्थान ॥ २ ॥

( भावार्थ )

हैं परस्पर वैभाव जिन्होंने दूरकिये हैं हृदयके संदेह  
जिन्होंने प्रणामकरने वाले प्राणियोंको दिए हैं सुख  
बाहुल्य जिन्होंने और उत्तीस श्रेष्ठ गुणोंके [निवास  
स्थान ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

पत्तसुजइत्तसोहा समत्थपरतित्थिजणियसंखोहा ।  
पडिभग्गलोहजोहा दंसियसुमहत्थसत्थोहा ॥ ३ ॥

( छाया )

प्राप्तसुयतित्वशोभाः समस्तपरतीर्थिजनितसंशोभाः  
प्रतिभग्नलोमयोधाः दर्शितसुमहार्थशास्त्रोधाः ॥ ३ ॥

( पदार्थ )

( पत्त ) प्राप्तकी है ( मुजइत्त ) उत्तम यतित्व की  
( सोहा ) शोभा जिन्होंने ( समत्थ ) सम्पूर्ण ( परतित्थि )  
परतीर्थि जनोको ( जणिय ) उत्पन्न किया है ( संखोहा )  
संशोभा जिन्होंने ( पडिभग्ग ) नष्ट किया है ( लोह )  
लोमरूप ( जोहा ) योधा जिन्होंने ( दंसिय ) बनलाया  
है ( सुमहत्थ ) अत्यन्त गंभीर अर्थशास्त्री ( सत्थोहा )  
शस्त्र समुद्र जिन्होंने ॥ ३ ॥

( भावार्थ )

प्रातर्काहि उच्चम यतित्वकी शोभा जिन्होंने  
सम्पूर्ण परतीर्धजनोंको उत्तम किया है संक्षोभ  
जिन्होंने नष्ट किया है लोभरूपयोधा जिन्होंने  
घतलाया है अत्यन्त गंभीर अर्थशाली शास्त्र समूह  
जिन्होंने ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

परिहरियसत्तवाहा ह्यदुहदाहासिवंवतस्ताहा ॥  
संपावियसुहलाहा क्षीरोदधिणुव्वअग्गाहा ॥ ३ ॥

( छाया )

परिहतसत्तवाधाः हतदुःखदाहाः शिवान्नतरुशाखाः  
संप्रापितमुखलाभाः क्षीरोदधिरिवागाधाः ॥ ३ ॥

( पदार्थ )

( परिहरिय ) नष्ट की है ( सत्त ) जीवोंकी  
( वाहा ) पीडा जिन्होंने ( ह्य ) मित्रया है  
( दुहदाहा ) दुःखरूप दाह जिन्होंने ( शिव )  
मोक्षरूप ( अंततरु ) आम्रवृक्षकी ( साहा ) शाखा  
समान ( संपाविय ) सम्यक् प्रकारसे प्राप्त करवाया है,  
( सुहलाहा ) वाञ्छित मुखका लाभ ।

( सीरोदहिणुव ) क्षीरसमुद्रसमान ( अग्गाहा )  
अगाध ॥ ४ ॥

( भद्रार्थ )

दूरकीहै जीवोंकी पीटा जिन्होंने नष्ट किया है  
दुःखरूप दाह जिन्होंने मोक्षरूप आत्रवृक्षकी शाखा  
समान भलीनाँतिप्राप्तकरवायाहै भव्यजीवोंको इच्छित  
सुखका लाभ जिन्होंने क्षीरसमुद्रसमान अगाध ॥ ४ ॥

॥ गाय ॥

सगुणजगजगियपुज्जा सज्जोनिखज्जगहिय ॥  
पवज्जा ॥ शिवसुहसाहपसज्जा भवगुरुगिरि-  
चूर्णवेज्जा ॥ ५ ॥

( छया )

सगुणजनजनितपूजाः सद्योनिखद्यगृहीतप्रव्रज्याः  
शिवसुखसाधनसज्जाः भवगुरुगिरिचूर्णनेवज्जाः ॥ ५ ॥

( पदार्थ )

( सगुण ) सद्गुणोंसे युक्त ( जग ) भव्यजीवोंने  
( जगिअ ) की है ( पुज्जा ) पूजा जिन्होंकी  
( सज्जो ) तत्काल ( निखज्ज ) पापरहित ( गहिय )  
अंगीकार की है ( पवज्जा ) प्रव्रज्याचारित्रदीक्षा

जिन्होंने ( सिद्ध ) मोक्षसुखके ( साधन )  
साधनमें ( तज्जा ) साधन ( भव ) संसाररूप  
( गुरुगिरि ) भारी पर्वत को ( धूरणे ) नष्ट करनेमें  
( वज्रा ) वज्रके समान ॥ ५ ॥

( भावार्थ )

सद्गुणोंसे युक्त भव्यजीवोंनेकीही पूजा जिन्होंनेकी  
तत्काल अंगीकार की है पापरहित चारित्रिकी दीक्षा  
जिन्होंने मोक्षसुख के साधनमें साधन संसाररूप  
भारीपर्वतको नष्ट करनेमें वज्रके समान ॥ ५ ॥

॥ गाथा ॥

ॐ जसुहृन्मपमुहा गुणगणनिवहासुरिदिविहिय-  
महा। तागतिसंज्ञनामं नामं न प्रणाशयतीति न अपितु  
प्रणाशयत्येव ॥ ६ ॥

( छाया )

गुणगणानिवहाः सुरिद्विहितमहाः ( एतादृशाः )  
आर्यसुवर्मप्रमुखाः गणधराः सन्ति तेषां त्रिसंध्यं ( स्मृतं )  
नाम जीवानां आमं न प्रणाशयतीति न अपितु  
प्रणाशयत्येव ॥ ६ ॥

( पदार्थ )

( गुणगण ) आचार्य के छत्तीस सद्गुणोंके समुदाय  
को ( निवहा ) निरंतर धारण करने वाले ( सुरि

देवोंके अधिपति इन्द्रने ( विहिय ) की है ( महा  
 पूजा जिन्होंकी ऐसे ( अज्ज ) पूज्य ( सुहम्म  
 सुधर्म स्वामी हैं ( प्पमुहा ) मुख्य जिन्होंमें  
 गणधरोंका ( तिसंझं ) त्रिकाल ( नाम ) नामस्म  
 ( जियाणं ) जीवोंकी ( आमं ) व्याधियों  
 ( न पणासइ ) नहीं प्रणाश करता ( न ) ऐ  
 नहीं अर्थात् प्रणाश करताही है ॥ ६ ॥

( भावार्थ )

आचार्यके छत्तीस गुणोंको निरंतर धारण करनेवाले  
 देवाधिपति इन्द्रने की है पूजा जिन्होंकी, ऐसे पर  
 पूज्य सुधर्मस्वामी प्रमुख गणधरोंका त्रिकाल नामस्म  
 जीवोंकी सकल आधिव्याधियोंको नष्ट करता है ॥ ७

॥ गाथा ॥

पडिवज्जियजिणदेवो देवायरिउदुरंतभवहारि  
 सिरिनेमिचंदसूरि उज्जोयणसूरिणोसुगुरु ॥ ७ ॥

( छाया )

प्रतिपन्नजितदेवः देवाचार्यः दुरंतभवहारी श्रीनेमि  
 चन्द्रसूरिः सुगुरुः उद्योतनसूरिः एतेत्रयः विजयन्तामि  
 स्वर्घ्याहार्यम् ॥ ७ ॥

( पदार्थ )

( पाडिवज्जिय ) अङ्गीकार किया है ( जिणदेवो )  
जिनदेव जिनने ऐसे ( देवायरिउं ) देवाचार्य ( दुरंत )  
दुष्ट है परिणाम जिसका ऐसे ( भव ) संसारको  
( हारि ) हरण करने वाले ( सिरिनेमिचंद्रसूरि )  
श्रीनेमिचन्द्रसूरि और ( सुगुरु ) अज्ञानरूप अंधकारको  
रोकनेमें समर्थ ऐसे ( उज्जोयणसूरि ) उद्योतनसूरि  
विजयको प्राप्त होओ ॥ ७ ॥

( भावार्थ )

आत्मकल्याणके हेतु अङ्गीकार किया है जिनदेव  
जिनने ऐसे देवाचार्य और दुष्ट है परिणाम जिसका  
ऐसे संसारको हरण करनेवाले श्रीनेमिचन्द्रसूरि और  
अज्ञानरूप अंधकारको रोकनेमें समर्थ ऐसे उद्योतन-  
सूरि विजयको प्राप्त होओ ॥ ७ ॥

॥ अथ वर्धमानमूरिस्तुतिमाह ॥

॥ गाथा ॥

सिरिवद्धमाणमूरि पयडीकयमूरिमंतमाहृष्यो ।  
पडिहृष्यकसायपसरो सरयसमंकुच्चसुहृजणउं ॥ ८ ॥





( छाया )

सुप्रसन्नस्य शोभम् ॥ जिनस्यो निश्चलः युग-  
प्रवरः सुप्रसन्नस्य शोभम् ॥ ( चरणपद  
शब्दी क्रमेण निरास्य समर्थे वाच्ये ) ॥ ९ ॥

( पदार्थ )

( सुप्रसन्न ) विषयसुखमें लंपट ( चोर ) केवलसाधुवेश  
धारणकरनेवाले और निश्चलभक्त जनोके जैनसम्यक्त्व  
घोषित्लोको असदुपदेशद्वारा चुरानेवाले ऐसे लिङ्गी  
साधुओंके ( चरण ) द्वारा जिनराजसिद्धान्तोक्त युक्ति  
द्वारा बलात्कारसे मन्त्रबन्धनमें ( पद ) समर्थ ( जगमयंभि )  
जिनतमें ( निश्चल ) निश्चल ( युगप्रवर ) युगप्रवर  
सुप्रसन्न स्वामीके ( सुप्रसन्न सिद्धंत ) निर्दोष अंगोपांगरूप  
सिद्धान्तके निरंतर अभ्याससे ( जाणत ) प्रसिद्ध और  
( प्रणय ) प्रणाम करनेई ( सुगुण ) सदगुणी ( जणो )  
जन जिनको ॥ ९ ॥

( भावार्थ )

विषयसुखमें लंपट केवल साधु वैपकोहि धारणकरने  
वाले भक्तजनोके जैनसम्यक्त्व घोषित्लोको अस-  
दुपदेशद्वारा चुरानेवाले ऐसे लिङ्गीसाधुओंके जिनराज-

सिद्धान्तोक्तयुक्तिपूर्वकचलारकारसे मतखण्डनमें समर्थ, और जिनमतमें निश्चल, और युगप्रवर सुधर्मस्वामीके निर्दोष अङ्गोपाङ्गरूप सिद्धान्तके निरंतर अभ्याससे प्रसिद्ध, और प्रणाम करते हैं सद्गुणीजन जिनको ऐसे ॥ ९ ॥

॥ गाथा ॥

पुरउंदुल्लहमहिवल्लहस्त अणहिल्लवाडपयडं ।  
मुक्ताविआरिऊणं सीहेणवद्वलिगिगया ॥ १० ॥

( छाया )

(येन) अनहिल्लपाटके दुर्लभमहिवल्लमस्य दुरतः विचार्ये  
सिंहेन गजा इव प्रकटं लिगिनः मुक्ताः ॥ १० ॥

( पदार्थ )

( अणहिल्लवाडप ) अनहिल्ल पाटक नामके नगरमें  
( दुल्लहमहिवल्लहस्त ) दुर्लभसंज्ञक गजाके ( दुरउं )  
सामने ( विआरिऊणं ) पाष प्रविवाद कर  
( सीहेणवद्वगया ) जैसे सिंह हाथियोंके चीरकर  
फेंकदेताहै येमेही ( पयडं ) सब लोगोंके सामने  
( लिगि ) शिथिलचारी साधु ( मुक्ता ) जिनदंतगुणों  
साक्ष्यार्थ में ह्राणगये ॥ १० ॥

( भावार्थ )

अनहिल्लपाटकनामके नगरमें दुर्लभ संज्ञकराजाके समक्ष श्री जिनदत्तसूरिने शिथिलाचारी साधुओंसे वाद प्रतिवाद किया, और जैसे सिंह हाथियोंसे सामनाकर उन्हें चीरकर फेंकदेताहै वैसेही जिनदत्तसूरिने शास्त्रार्थमें उन शिथिलाचारियोंको पराजित किया ॥ १० ॥

॥ गाथा ॥

दशमच्छेरयनिसिविष्फुरंत सच्छन्दमूरिमयतिमि-  
रम् । सुरेणवसूरिजिणे, सुरेण ह्यमहियदोसेण ॥ ११ ॥

( छाया )

अहितदोषेण सूरिजिनेश्वरेण दशमाश्वर्योनिशि विस्फुर-  
त्सच्छन्दसूरिमयतिमिरं सुरेणवहतम् ॥ ११ ॥

( पदार्थ )

( अहिय ) नहीं प्रिय हैं ( दोसेण ) रगादि दोष जिनको ऐसे ( सूरिजिणेसुरेण ) सूरिजिनेश्वराचार्यने ( दशमच्छेरयनिसी ) दशम असंयमरूप पूजा लक्षण-  
आश्वर्यरूप रात्रि में ( विष्फुरन्त ) स्फुरायमाण ( सच्छन्दसूरिमयतिमिरं ) अपने इच्छानुसार चलनेवाले शिथिलाचारियोंका मतरूप अन्धकार ( सुरेणव ) सूर्यकेसमान ( ह्यम् ) नष्ट किया ॥ ११ ॥

## ( भावार्थ )

जैसे सूर्य रात्रिके अन्धकारको सत्वर नष्ट करता है  
 वैसे ही रागादि दोषरहित सूरिजिनेश्वराचार्यने दशम  
 असंयमीरूप पूजा लक्षण आश्चर्य रूप रात्रिमें  
 स्फुरायमाण स्वच्छन्द शिथिलाचारियोंका मत्तरूप  
 अन्धकारको शीघ्र नष्ट किया ॥ ११ ॥

अथ जिनचन्द्रसूरिस्तुतिं श्लेषालंकारेणाह

## ॥ गाथा ॥

सुकइत्तपत्तकित्ती पयडिअगुत्तीपसंतसुहमुत्ती ।  
 पहयपरवाइदित्ती जिणचन्दजईसरमेन्ती ॥ १२ ॥

## ( छाया )

सुकदित्वप्राप्तकीर्तिः प्रकटितगुप्तिः प्रशान्तशुभमूर्तिः  
 प्रहतपरवादिदीप्तिः मंत्री जिनचन्द्रयतीश्वरः नन्दतात् ॥१२॥

## ( पदार्थ )

( सुकइत्त ) सुकदित्वद्वारा ( पत्तकित्ती ) प्राप्त  
 की है कीर्ति जिनने ( पयडिअ ) प्रकट की है ( गुत्ती )  
 मनोवाक्यायसंवरणादिरूप गुप्ति जिनने ( परांत )  
 भोधादिरुपायरहित ( सुह ) मंगलकारक है ( मुत्ती )  
 धर्मीर जिनका ( पहय ) निरस्त किया है ( परवाइ )

पर दादियोंका ( दिती ) तेज जिनने ( गंती )  
 मंत्राचार्य ऐसे ( जिगच्छन्मन्त्रसरो ) जिगच्छन्मन्त्रसरो  
 उत्कर्ष शाली होओ ॥ १२ ॥

( भावार्थ )

सुप्रसन्नप्रसन्नोः प्रातकी है कीर्ति जिनने प्रकट की है  
 मनोवाक्यकाय मन्त्रणादिरूप गुप्ति जिनने क्रोधादिकपाय  
 वृद्धि और मंगलकारक है मूर्ति जिनकी नष्ट किया  
 है परदादियोंका तेज जिनने और मंत्रोंके आचार्य  
 ऐसे जिगच्छन्मन्त्रसरो विजय शाली होओ ॥ १२ ॥

अथ नवाट्टुत्तिकारकं श्रीअभयदेवसूरी गाथा-

द्वयेन वर्णयति

॥ गाथा ॥

पयडियनवद्धुत्तत्पर्यणकोसो पणामिय पउंसो ।  
 भवभीयभवियजणमणफयसंतोसो विगय  
 दोसो ॥ १३ ॥

जुगपवरागमसार प्परुवणा करणबंधुरोधणियं ।  
 तिरिअभयदेवसूरी मुणिपवरोपरमपसमधरो ॥ १४ ॥

( छाया )

प्रकटितनवाट्टुत्तिकारकः प्रणाशितप्रद्वेषा  
 नरभीतभयिकजनमनःकृतसंतोषः दिगतदोषः ॥ १३ ॥

युगप्रवरागमसारप्ररूपणाकरणबंधुरः अत्यर्थं मुनिप्रवरः  
परमप्रशमघरः श्रीअभयदेवसूरिः विजयते ॥ १४ ॥

### ( पदार्थ )

( पयडिय ) प्रकट किया है ( नवंग ) नवांगके  
( सुत्तय ) सूत्रार्थरूप ( रणयकोसो ) रत्नोंका भाण्डार  
जिनने ( पणासिय ) उन्मूलित किया है ( पउत्तो )  
प्रद्वेष जिनने ( भवभीय ) संसारसे डरे हुए  
( भवियजणमण ) भविक जनोंके मनको  
( कयसंतोसो ) किया है संतोष जिनने ( विगयदोसो )  
गए हैं समस्त दोष जिनके ( जुगवरागम ) युगके  
विषय प्रकृत शास्त्रको धारण करनेवाले ऐसे काठिक  
सूरियोंके ( सार ) सिद्धान्तों का अनुसरण करनेवाली  
( प्यरुवगा ) चौधी पर्युषणादिकोंके ( करण ) आचरण  
से ( बंधुरः ) मनोज्ञ ( धणियं ) अत्यर्थ ( मुणिप्रवरो )  
मुनियोंमें श्रेष्ठ ( परम ) उत्कृष्ट ( परम ) शान्तिसे  
( घणे ) धारण करनेवाले ( तिरिअभयदेवसूरि )  
श्रीअभयदेवसूरि विजयशायी होओ ॥ १३-१४ ॥

### ( भावार्थ )

प्रकटकिया है नवांगके सूत्रार्थरूप रत्नोंका भाण्डार

जिनने, उन्मूलित किया है प्रद्वेष जिनने, संसारते डरे हुए भविक जनोंके मनको किया है संतोष जिनने, गए हैं समस्त दोष जिनके, युगमें प्रकृष्ट शास्त्रको धारण करनेवाले, ऐसे कालिक सूरियोंके सिद्धान्तको अनुसरण करनेवाली चौधी पर्युपणादिकोंके आचरणसे मनोऋ, मुनियोंमें अलन्त श्रेष्ठ, उत्कृष्ट शान्तिको धारण करनेवाले, ऐसे श्रीअभयदेवसूरि विजयशाली होओ ॥ १३-१४ ॥

अथ स्वगुरोः श्रीजिनवल्लभसूरेः स्तुत्ये  
सिंहप्रकृतित्वं गाथाद्वयेनाह.

( गाथा )

कयसावयसत्तासो हरिष्वसारंगभगसंदेहो ।  
गयसभय दम्पदलणो आसाइयपवरकच्चरसो । १५ ।  
भीमभवकाणर्णमि दंसियगुरुवयणरयणसंदोहो ।  
नीसेससत्तगुरुंस्त्रीजिणवल्लभोजयइ ॥ १६ ॥

छाया ( प्रभुपक्षे )

पृष्ठाश्रावकसत्याशः सारांगभगसंदेहः गतसमयदर्पदलनः  
आस्वादितप्रवरकाव्यरसः दर्शितगुरुवचनरचनसंदोहः  
निःशेषस्तत्रगुरुकः एतादृशः सूरिजितवल्लभः भीमभद-  
वानने हरिषि जयति



( हरिपक्षे )

कृतश्चापदसंत्रासः सारंगभग्नसंदेहः समदगजदुर्षदलः  
 आस्वादितप्रवरस्कन्धरसः दर्शितागुरुवदनरदनसंदेहो  
 निःशेषसत्वगुरुकः

( पदार्थ )

( कय ) परिपूर्णकी है ( सावय ) श्रावकोंकी ( सन्तांसो )  
 शुभ आकांक्षा जिनने ( सारंग ) प्रधान आचारा  
 अंगोंसे ( भग्नसंदेहो ) दूर कियाहै संदेह जिनने  
 ( गय ) भ्रष्ट हुआहै ( समय ) सिद्धांत जिन्होंने ऐसी  
 चोरासी आचार्योंके ( दुष्प ) अभिमानको ( दलणो )  
 नष्टकरनेवाले ( आसाइय ) आस्वादिन कियाहै ( पवर )  
 सर्वोत्तम ( कन्दरसो ) काव्यरस जिन्होंने ( दंभिय )  
 प्रकट कियाहै ( गुरुवयण ) श्रीअभयदेशूरिके गननोंकी  
 ( रयण ) रचनाओंका ( संदेहो ) समूह जिन्होंने  
 ( नीसेस ) सम्पूर्ण ( सत्त ) जीवोंके ( गुरुउ ) अज्ञा-  
 नांशकारको दूर करनेवाले ऐसी ( गुरी जिगशुद्धो ) गुरी  
 जिनवदभ ( भीम ) भयंकर ( नक्षत्राण्यभि ) संगार-  
 रूप वनमें ( इन्द्रि ) सिद्धके समान ( जयद ) विजय  
 दात्री है ।

( गिहक्षे पदार्थः )

( कय ) किदाहि ( नावय ) जानरगेंगे ( सत्ताता )  
 भय जिसने ( सारंग ) मृगोंके ( भग्न ) भाग किर्मेह  
 ( संदोहो ) शीत जिसने ( समय ) मदीन्मत्त ( गय )  
 हाथियोंके ( दप्प ) दर्पका ( दल्लणो ) नाशकियाहै  
 जिसने ( आत्ताद्य ) घनाहै ( पदर ) नये ( कव्य )  
 गांसका ( रसा ) रसजिसने ( दंसीय ) दिखायाहै  
 ( गुरु ) भारी ( वदन ) मुगमें ( रदन ) दांतोंका  
 ( संदोहो ) समूह जिसने ( नीसेस ) सम्पूर्ण ( सत्त )  
 पशुओंमें ( गुरुओ ) घटा ऐसे ( हरिद्य ) सिंहके समान  
 जिनका मूरि विजयशाली है ।

( भावार्थ )

परिपूर्ण किये हैं श्रावकोंके शुभ मनोरथ जिनने  
 प्रवान आन्नागदि अंगोंसे दूर किये हैं संदेह जिनने  
 अष्ट हुआहै मिद्वान्त जिन्होंसे ऐसे चोरासी आचार्योंके  
 अनिमानका नाशकरनेवाले आस्वादित कियाहै सर्वोत्तम  
 काव्यरस जिनने प्रकट कीहै नवांगवृत्तिलक्षण श्रीअभय-  
 दंवरिके वचनों की रचना जिनने सम्पूर्ण जीवोंके  
 अज्ञानांधकारको दूरकरनेवाले ऐसे मूरि जिनका

## ( हरिपक्षे )

कृतश्चापदसंत्रासः सारंगभग्नसंदेहः समदगजदर्पदलनः  
 आस्वादितप्रवरकव्यरसः दर्शितगुरुवदनरदनसंदोहः  
 निःशेषसत्त्वगुरुकः

## ( पदार्थ )

( कय ) परिपूर्णकी है ( सावय ) श्रावकोंकी ( सन्तांसी )  
 शुभ आकांक्षा जिनने ( सारंग ) प्रधान आचारादि  
 अंगोंसे ( भग्नसंदेहो ) दूर कियाहै संदेह जिनने  
 ( गय ) भ्रष्ट हुआहै ( समय ) सिद्धांत जिन्होंने ऐसे  
 चोरासी आचार्योंके ( दप्प ) अभिमानको ( दलणो )  
 नष्टकरनेवाले ( आसाइय ) आस्वादित कियाहै ( पदर )  
 सर्वोत्तम ( कव्यरसो ) काव्यरस जिन्होंने ( दांसिय )  
 प्रकट कियाहै ( गुरुवयण ) श्रीअभयदेवसूरिके वचनोंकी  
 ( रयण ) रचनाओंका ( संदोहो ) समूह जिन्होंने  
 ( नीसेस ) सम्पूर्ण ( सत्त ) जीवोंके ( गुरुउ ) अज्ञा-  
 नांधकारको दूरकरनेवाले ऐसे ( सूरी जिगवच्छो ) सूरी  
 जिनवलभ ( भीम ) भयंकर ( भक्काणणंमि ) संसार-  
 रूप वनमें ( हरिव ) सिंहके समान ( जयइ ) विजय  
 शाली हैं ।

( सिंहक्षे पदार्थः )

( कय ) किराहै ( साधय ) जानव्रोंको ( सत्तासा )  
 मय जिसने ( सारंग ) मृगोंके ( भग्ना ) भग्न कियेहै  
 ( संदेहो ) शरीर जिसने ( समय ) मदोन्मत्त ( गय )  
 हाथियोंके ( दप्प ) दर्पका ( दलणो ) नाशकियाहै  
 जिसने ( आत्साक्षय ) चखाहै ( पवर ) नये ( कव्व )  
 मांसका ( रसो ) रसजिसने ( दंसीय ) दिखायाहै  
 ( गुरु ) भारी ( वदन ) मुखमें ( रदन ) दांतोंका  
 ( संदेहो ) समूह जिसने ( नीसेस ) सम्पूर्ण ( सत्त )  
 पशुओंमें ( गुरुओ ) बडा ऐसे ( हरिव्व ) सिंहके समान  
 जिनब्रह्मसूरि विजयशाली हैं ।

( भावार्थ )

परिपूर्ण किये हैं श्रावकोंके शुभ मनोरथ जिनने  
 प्रवान आचारादि अंगोंसे दूर किये हैं संदेह जिनने  
 अष्ट हुआहै सिद्धान्त जिन्होंसे ऐसे चौरासी आचार्योंके  
 अभिमानका नाशकरनेवाले आस्वादित कियाहै सर्वोत्तम  
 काव्यरस जिनने प्रकट कीहै नवांगवृत्तिलक्षण श्रीअभय-  
 देवसूरिके वचनों की रचना जिनने सम्पूर्ण जीवोंके  
 अज्ञानांधकारको दूरकरनेवाले ऐसे सूरि जिनब्रह्म

भयंकर संसार रूप वनमें सिंहके समान विजयशाली होओ ।

( सिंहपक्षे भावार्थः )

कियाहै पशुओंके भय जिसने मुर्गाके भय कियेहै शरीर जिसने मदनमत्त हाथियोंके दर्पको दहन कियाहै जिसने चन्दाहै नूतन मांसकारस जिसने दिखायाहै अपने भारी मुखमें वांतोंका समूह जिसने सम्पूर्ण पशुओंके बड़े एसे सिंहके समान.

अथ गाथा दृष्टेन तन्मैत्र स्वगुणेः जिनवल्लभसूरेः  
सर्वोत्तमः शरभौषड्येन श्लेषपूर्वकनाह ॥

॥ गाथा ॥

उपरि द्वियसञ्चरणो चउरणुगप्यहाणसंचरणो ।  
अममयरायमहणो उद्दमुहोमहइजस्तकरो ॥१७॥  
दंसिण्णिम्मलनिच्चल दन्तगणोगणियसावउछ  
भउ । गुरुगिरिगुरुसरहुव्य मूरिजिणवल्लहोहोछा  
॥ १८ ॥

( छाया प्रभुपक्षे )

उपरि स्थिताशरणः चतुरनुयोगप्रधानतंचरणः क्षर  
ममदगजमहनः अममदरागमवनोम उर्ध्वमुखोपायकः

शोभते तथाभूतः दर्शितनिर्भलनिश्चलद्वान्तगणः  
 अगणितश्चापदोत्थभयः गुरगिरिगुरुकः जिनबद्धभूसुरिः  
 शरभपक्षे ॥

### ( शरभपक्षे )

उपरिस्थितसञ्चरणः चतुरनुयोगप्रधानसंचरणः असम  
 भृगजमधनः उत्पन्नमुत्थोत्थयकरः शोभते तथा भूतः  
 दर्शितनिर्भलनिश्चलद्वान्तगणः अगणितश्चापदोत्थभयः  
 गुरगिरिगुरुकः भवति हि शरभोऽपि तथैव सुरिजिनबद्ध  
 भोऽभूत् ॥ १७-१८ ॥

### ( पदार्थ )

( उपरिस्थित ) तब आचार्योसे अत्युत्तम है  
 ( सन् ) शोभायमान ( चरणो ) चास्त्रि जिनका  
 ( चतुरणुत्तम ) द्रव्यानुयोग १ कालानुयोग २ गणिता-  
 नुयोग ३ और धर्मानुयोग ४ इन चार अनुयोगसे  
 ( प्रधान ) प्रधान है ( संचरणो ) प्रवर्तन जिनका  
 ( असम ) उत्कट है ( मय ) मद जिन्होंका ऐसे  
 ( राय ) राजाओंसे किया गया है ( महणो ) पूजन  
 जिनका, अथवा ( असम ) क्रोध ( मय ) गर्व और  
 ( राय ) राग इनका ( महणो ) नाश करनेवाले

( उट्टमुहो ) व्याख्यानके प्रस्तावमें ऊर्ध्वमुख ( सहइ )  
 शोभायमान है ( जरस ) जिनका ( करो ) हात ऐसे  
 ( दंसिय ) दिखाया है ( निम्मल ) पापरहित (निष्कल)  
 भट्टी भांति व्रतके पालन में तत्पर ऐसा ( दन्तगगो )  
 मुनिसमूह जिनने, अगणिय नहीं गिना है  
 ( सावउछ ) श्रावकोंका ( भउ ) अपेक्षा लक्षण भय  
 जिनने अथवा सुसाधुओंसे परिवृत होनेसे (अगणिय)  
 नहीं गिना है ( सावउछ ) मिथ्यात्वी श्रावकोंका  
 ( भउ ) भय जिनने, ( गुरु ) श्रेष्ठ ( गिरि ) वाणीमें  
 ( गुरुउ ) उत्कृष्ट, ( सरहु ) अष्टापदके ( व्व ) समान  
 ( मूरि ) सूरि ( जिणवल्लहो ) जिनवल्लभ ( होछा )  
 हुए अथवा थे ॥ १०-१८ ॥

### ( शरभपक्षे ) पदार्थ

( उवरिडिय ) ऊर्ध्व देसमें स्थित है ( राए )  
 विद्यमान ( चणो ) पांच जिसके, ( चउरणुउग )  
 चार पांचके सम्यन्वमे ( षहाग ) प्रधान है  
 ( संचरगो ) संचार जिसका, ( असम ) असाधारण  
 घटवाटे ( मयगाय ) तिष्ठता ( मट्टणो ) नाश करने  
 वात्र, ( उट्टमुहो ) तीसरासगे ऊंचा किया हुआ

( गण्ड ) शोभायमान है ( जगत् ) जितरा ( करो )  
 शुष्कादृष्ट अधोन् मुंड ऐसा, ( दंशिय ) दिखाया है  
 ( निम्न ) शुभ और ( निश्चल ) दृढ़ ( दन्त )  
 दांतोंका ( गणो ) समूह जिसने, ( गणिय ) नहीं  
 गिना है ( साश्रुत्त ) श्वापदोंका ( भउ ) भय जिसने,  
 ( शुद्ध ) घटे ( गिरि ) पर्वतोंके समान ( गुरुडे )  
 उंचा ऐसा जो शरभ उसके समान सूरि जिनवल्लभ  
 थे ॥ १७-१८ ॥

### ( भावार्थ )

सद्य आचार्योसि उत्तम चारित्रवाले, द्रव्यानुयोग १  
 कालानुयोग २ गणितानुयोग ३ और धर्मानुयोग ४  
 इन चार अनुयोगोंसे प्रधान है प्रवर्तन जिन्होंका अत्यंत  
 गर्व करनेवाले राजाओंकेभी पूज्य अथवा क्रोध गर्व  
 और गग इनका नाश करनेवाले, व्याप्यानके समय  
 जिनका ऊंचा किया हुआ हात शोभता है ऐसे,  
 मुक्तिमार्ग चलाने जिनने पापरहित और व्रताचरणमें  
 तत्पर ऐसे मुनिओंका समूह घतलाया, सुसाधुओंसे  
 नित्य भिरे होनेके कारण जिनको मिथ्यात्वी श्वापदोंका  
 कुछ भय नहीं था, प्रतिज्ञा पूरीकरनेके कारण जो



श्रेष्ठ वाणीके कथन में उत्कृष्ट थे, वे सृष्टिजिनरहम  
अष्टापद के समान हुए ॥ १७-१८ ॥

( शरभपक्षे ) भावार्थ

उपर किये हुए है पाँच जिसने, चार पाँचके  
सम्बन्धसे संभार करनेवाला, बड़े पराक्रमी सिंहको  
मारनेवाला, ऊँची उठानेसे जिसकी रूंड शोभायमान  
है, अपने शुभ और दृष्ट ऐसे चार पाँचको दिगमे  
गाहा, जिसको किसी पशुका पिठकुल भय नहीं है  
और जिसका शरीर बड़े पहाड़के समान है ऐसे शरभके  
गुण्य सृष्टि जिनरहम हुए ॥ १७-१८ ॥

अथ विशेषगम्यगुणगुणोद्योगाणपूर्वकं दम्बनं कमेनि

॥ गाथा ॥

त्रुमपवगममर्पीउ मपाणर्पाणियमणाक्याभना।  
जेणजिणवद्वहेणं गुणान्तमच्चहावन्दे ॥ १९ ॥

( छाया )

येन जिनवद्वहेन गुणान्तरभेदाः गुणप्रथममर्पीपुत्र  
दानप्रतिष्ठितमनसः कृताः ते गाथा यन्ते ॥ ( मतमः  
इति महागम्य मूर्ते प्राहुराण्डोपः । ) ॥ १९ ॥

( पदानि )

( इति ) एतन्मै ( पद्यमस्य ) श्रेष्ठ निदानम् ॥

( पाँउत ) अमृतके ( पाण ) प्राशनमे ( पीजिय )  
 सन्नोषितं ह्यं ( मणा ) मन जिन्होंके ऐमे ( कथा )  
 विचं ह्यं ( भवश ) समस्त भव्य जीव ( जेण ) जिन  
 ( जिगद्वदृष्टं ) जिनद्वदृष्ट ( गुग्णा ) गुग्ने ( तं )  
 उनरो ( सव्यज्ञ ) मनयचनकायसे ( वदे ) नमस्कार  
 करताहं ॥ १९ ॥

( भावार्थ )

युगके धीचमै श्रेष्ठ सिद्धान्तरूप अमृत पिलाकर  
 समस्त भव्य जीवोंके मनको सन्तुष्ट करनेवाले  
 तत्त्वोपदेशक जिनद्वदृष्ट मृत्तिको मनसे, दाणीसे और  
 शरीरसे भी नमस्कार करताहं ॥ १९ ॥

अथ गाथा द्वयेन सुधर्मस्वाम्यादिगुरुपारतन्त्र्य-  
 मुपद्रव्यं सर्वसंचभारवहनक्षमरय गुगेरत्वर्यमाह ।

॥ गाथा ॥

विष्फुरियपवरपवयण सिरोमणीबूदृद्वह्रस्वमोया  
 जोमेसाणंसेसु व्यसहइसत्ताणताणको ॥ २० ॥

सज्जरियाणमर्हाणं सुगुरुणंपारतंतमुच्चहइ जयइ  
 जिणदत्तसूरी सिरिनिलउं पणयमुणितिलउं ॥ २१ ॥

## ( छाया )

विस्फुरतिप्रवरप्रवचनाशिरोमणिः व्यूढदुर्बहक्षमः  
 यः शेषाणां शेष इव ( यः ) सत्त्वानां त्राणकरः सन्  
 सहते, ( यः ) सच्चरितानां सुगुरुणामहीनं पारतन्त्र्य  
 मुद्ग्रहति ( सः ) श्रीनिलयः प्रणतमुनितिलकः जिनदत्त  
 सूरिः जयति ॥ २०-२१ ॥

## ( पदार्थ )

( विष्फुरित ) निकला है ( प्रवर ) श्रेष्ठ ( प्रवयण )  
 सिद्धान्त जिनसे ऐसे आचार्योंमें ( शिरोमणी ) मस्तक  
 के मणिके समान ( वूढ ) धारण की है ( दुर्बह )  
 धारण करनेको कठिन ( खमो ) क्षमा जिनने, ( जो )  
 जो ( सेसाणं ) तत्कालवर्ती अन्य आचार्योंमें ( सेमुव्य )  
 शेषके समान अर्थात् पूज्य हैं, जो ( सच्चरियाणं )  
 उत्तम आचार वाले ( सुगुरुणं ) अपने श्रेष्ठ गुरुओंका  
 ( अहीनिं ) सम्पूर्ण ( पारतन्त्रं ) पारतन्त्र्य ( उच्चहृद् )  
 धारण करते हैं, वे ( सिरि ) समस्त लक्ष्मीके ( निलयं )  
 संस्थान और ( पणय ) नमस्कार करनेवाले [ मुनि ]  
 साधुओंमें ( तिलकं ) तिलकके समान ऐसे ( जिण )  
 जिनोंने ( दत्त ) ज्ञानादिगुणोंसेयुक्त दिवाये हुए

( मणि ) मणि ( जवर ) सुशीर्षादि निगकरण द्वारा  
 चित्रयज्ञाने होंगे।

( यहाँ शीशु कर्णों अपना 'जिनदक्षमूर्ति' यह  
 नाम भी प्रकट कर दिया है )

( भावार्थ )

जिनमें श्रेष्ठ विद्यान्त निराला हैं ऐसे आचार्योंके  
 मन्त्रयंत्र, मणिके समान, धारण करनेवाँ अत्यन्तकठिन  
 होती है। इसी कारणसे, तत्कालदर्शी आचार्योंमें परमपूज्य,  
 आचार्योंमें तत्पर होने अपने गुरुगुरुओंका पूर्ण पारतन्ध्य  
 धारण करनेवाले, नमस्कृत लक्ष्मीके सम्बन्धन, नमस्कार  
 करनेवाले नाथीओंमेंश्रेष्ठ होने जिनदक्षमूर्ति त्रिजयशाली  
 होते ।

श्री ११० ॥ सुप्रसन्नस्योपनिषत्परिभाषाशास्त्रात्सुप्रसन्नस्योपनिषत्परिभाषाशास्त्रात्सुप्रसन्नस्योपनिषत्परिभाषाशास्त्रात्

परिभाषाशास्त्रात्सुप्रसन्नस्योपनिषत्परिभाषाशास्त्रात्

“ सुप्रसन्नस्योपनिषत् ”

समाप्तम् ॥



॥ श्री. ॥

अथ सिन्धुमयहरन्तोषं प्रारभ्यते ॥

॥ श्रीमत्पारागयनमः ॥

॥ गाथा ॥

सिन्धुमयहरन्तोषं जिणशंगणाणुगाभिसंघस्य ।  
सिन्धुपानाजिणार्थेभण पुगद्विउ निद्वियाजिहो ॥१॥

( जया )

जिनशंगणानुगाभिसंघस्य निद्वियाजिहो शंभनरपु-  
नियतः श्रीमत्पारागिनः सिधुं शर्म अपहरतु ॥ १ ॥

( पदार्थ )

( जिनशंग ) श्रीमहाशंभुशर्मावती ( आगा ) आशा  
शं ( अणुगामि ) माननेदाले ( संघस्य ) संघके  
( निद्विआ ) नादाकिये हैं ( अजिहो ) अनभिमत ।

ऐसे ( थंभणपुर ) स्तंभनपुरमें ( ट्टिओ ) रहनेवाले  
 ( सिरिपासजिणो ) श्रीपार्श्वजिनभगवान ( विग्घं )  
 अन्तरायका ( सिग्घं ) जलदीसे ( अवहरउ )  
 नाशकरें ॥ १ ॥

( भावार्थ )

श्री महावीरप्रभुकी आज्ञाको पालनकरनेवाले चतुर्विध-  
 संघके पापोंको नाश कियाहै जिनने ऐसे स्तंभनपुरमें  
 निवास करनेवाले श्रीपार्श्वजिनभगवान अन्तरायका सत्वर  
 नाशकरें ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

गोयममुहम्मपमुहा गणवइणोविहियभव्वसत्त-  
 मुहा । सिरिवद्धमाणजिणतित्थ, मुत्थयंते कुणंतु-  
 सया ॥ २ ॥

( ट्टाया )

ते गौतममुधर्मप्रमुखाः त्रिहितभज्यसत्तमुत्ताः गणवणायः  
 सदा श्रीवर्द्धमानाजिनतीर्यस्वरथतां कुर्वन्तु ॥ २ ॥

( पदार्थ )

( ते ) वे प्रसिद्ध, ( गोयम ) गौतमस्वामी और  
 ( मुहम्म ) मुधर्मस्वामी हैं ( पमुहा ) मुख्य जिन्होंमें

( विहित ) किया है ( भवसत्त ) भव्यजीवोंको ( सुहा )  
सुख जिन्होंने ऐसे ( गणवद्गणो ) गणधर ( तथा )  
निरंतर ( सिरिधरमाणजिण ) श्रीमहावीरप्रभु जिनभगवानने  
स्थापनकिएहुए ( तित्थ ) चतुर्विधसंघकी ( सुत्थयं )  
निरूपद्रवता ( कुणन्तु ) करें ॥ २ ॥

( भावार्थ )

वे प्रसिद्ध गौतमस्वामी और सुधर्मस्वामीहं प्रमुख  
जिन्होंने किया है भव्यजीवोंको सुख जिन्होंने ऐसे  
गणधर श्रीजिनभगवान महावीरस्वामीने स्थापनकिएहुए  
चतुर्विध संघके उपद्रवोंका नाशकरें ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

सकाइणोसुराजे जिणवेयाचमकारिणोसन्ति ।  
अवहरियविग्गसंघा हवन्तु ते संघसन्तिकर ॥३॥

( छाया )

ये अपहृतविघ्नसंघाः जिनवैयाचमकारिणः शक्यादयः  
सुराः सन्ति ते संघशान्तिकराः भवन्तु ॥ ३ ॥

( पदार्थ )

( जे ) जो ( अवहरिय ) नष्ट होगएहैं ( विग्गसंघा )  
अन्तरायोंके समूह जिन्होंके और ( जिण ) जिनके



करभगवानकी ( वैयावच्च ) वैयावच्च ( कारिणो ) करने वाले ( सङ्काङ्णो ) इन्द्रप्रमुख ( सुरा ) देवता ( सन्ति ) हैं ( ते ) वे ( संघ ) चतुर्विधसंघको ( सान्तिकरा ) शान्तिसुखके करनेवाले ( ह्वन्तु ) होओ ॥ ३ ॥

( भावार्थ )

नष्टहोगएहैं अन्तरायोंके समूह जिन्होंके और जिन-तीर्थकर भगवानकी वैयावच्च करनेवाले जो इन्द्रप्रमुख देवताहैं वे चतुर्विधसंघको शान्तिसुखके करनेवाले होओ ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

सिरिथंभणयद्वियपाससामिपयपञ्चमपणयपाणीणं ।  
निहलियदुरियविंदो धरणिंदो हरउ दुरि-  
याइं ॥ ४ ॥

( छाया )

श्रीस्तंभनकरिथतपार्श्वस्वामिपदपञ्चमपणतप्राणिणांनिर्दलित-  
दुरितवृन्दः धरणेन्द्रः दुरितानि हरतु ॥ ४ ॥

( पदार्थ )

( सिरि ) शोभायुक्त ( थंभणय ) स्तंभनकपुरमें  
( द्विय ) वासकरनेवाले ( पाससामि ) पार्श्वभगवानके

( भयपडम ) चरणकमलको ( पणय ) प्रणाम करने वाले ( पाणीणं ) प्राणियोंके ( निद्वलिय ) नाशकिएहैं ( दुरियाविंदो ) कष्ट और पापोंके समुदाय जिनने ऐसे ( धरणिंदो ) धरणेन्द्रभगवान ( दुरियाइं ) दुःखोंको ( हरउ ) नाशकरें ॥ ४ ॥

( भावार्थ )

श्रीयुक्त स्तंभनकपुरवासी पार्श्वभगवानके चरणकमलको प्रणामकरनेवाले प्राणियोंके नाशकियेहैं कष्ट और पापोंके समुदाय जिनने ऐसे धरणेन्द्रभगवान दुःखोंको नाशकरें ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥

गोमुह-पमुख-जक्खा पडिहयपडिवक्खपक्ख लक्खाते । कयसगुणसंघरक्खा हवन्तु संपत्त-सिवसुक्खा ॥ ५ ॥

( छाया )

प्रतिहतप्रतिपक्षपक्षलक्षाः संप्राप्तशिवसौख्याः ते गोमुखप्रमुखयक्षाः कृतसगुणसंघरक्षाः भवन्तु ॥ ५ ॥

( पदार्थ )

( पडिहय ) नाशकियेहैं ( पडिवक्ख ) संघको उप

करनेवाले दैरियोंके ( पक्ष ) पक्षोंके ( लक्षा ) लक्ष  
जिन्होंने ( संपत्त ) सम्यक् प्रकारसे पाएहैं ( सिद्धसुखा )  
कल्याणरूप सुख जिन्होंने ( ते ) वे प्रसिद्ध ( गोमुह  
पमुख ) गोमुखवक्ष है प्रमुख जिन्होंने ऐसे ( जक्षा )  
यक्ष ( कय ) की है ( सगुण ) ज्ञानादि गुणोंसेयुक्त  
( संघ ) चतुर्विधसंघकी ( रक्षा ) रक्षा जिन्होंने ऐसे  
( हवन्तु ) होओ ॥ ५ ॥

( भावार्थ )

नाशकिएहैं संघको उपद्रवकरनेवाले दैरियोंके पक्षोंके  
लक्ष जिन्होंने, सम्यक् प्रकारसे पाया है कल्याणरूप सुख  
जिन्होंने ऐसे गोमुखप्रमुखादियक्ष ज्ञानादिगुणोंसेयुक्त  
चतुर्विधसंघकी रक्षाकरने वाले होओ ॥ ५ ॥

॥ गाथा ॥

अप्पाडिचक्रापमुहा जिणसात्तणदेवयायाजण-  
पणया । सिद्धाइयासमेया हवन्तु संघस्स विग्ग-  
हरा ॥ ६ ॥

( अर्थ )

जिनप्रणताः सिद्धायिकासमेताः च अप्रतिचक्रापमुखाः  
जिनसात्तणदेवताः संघस्य विग्नराः भवन्त ॥ ६ ॥

( पदार्थ )

( जिण ) जिनभगवानको ( पणया ) प्रणामकरने वाली ( सिद्धाइया ) सिद्धाइकानामकी महावीरस्वामीके शासनकी अधिष्ठात्रीदेवीके ( समेया ) साथ ( य ) और ( अप्पडिचच्चा ) अप्रतिचक्राहै ( पमुहा ) प्रमुख जिन्होंमें ऐसी ( जिणसासणदेवथा ) जिनशासनकी अधिष्ठात्री देवियां ( संघरस ) चतुर्विधसंघके ( विग्घहरा ) अन्तरायोंको हरणकरनेवाली ( हवंतु ) होओ ॥ ६ ॥

( भावार्थ )

जिनभगवानको प्रणामकरनेवाली महावीरस्वामीके शासनकी अधिष्ठाइका सिद्धाइका नामकी देवीके साथ और अप्रतिचक्राहै प्रमुख जिन्होंमें ऐसी जिनशासनकी अधिष्ठाइका देवियां चतुर्विधसंघके अन्तरायोंको हरण करनेवाली होओ ॥ ६ ॥

॥ गाथा ॥

सफाएसासन्नउरपुरेष्ठिज्वद्धमाणाजिणभत्तो । सि-  
खिंभसंतिजक्खो रक्खउसंवंपयरोण ॥ ७ ॥

( छाया )

शक्रादेशात् ( सच्चउर ) पुरेस्थितः वर्द्धमानजिनभक्तः  
श्रीमद्विशान्तियशः प्रचत्नेन संघं रक्षतु ॥ ७ ॥

( पदार्थ )

( सक्काएसा ) इन्द्रकी आज्ञासे ( सच्चउरपुर )  
सच्चउरपुरमें ( द्विउ ) रहनेवाले ( वद्धमाणजिण )  
जिनभगवान महाधीस्वामीके ( भत्तो ) भक्त ( सिरि )  
शोभायुक्त ( वंभत्तंति ) ब्रह्मशान्तिनामक ( जवत्तो )  
यक्ष ( पयत्तेण ) यत्नपूर्वक ( संघं ) चतुर्विधसंघका  
( रक्खउ ) रक्षणकरो ॥ ७ ॥

( भावार्थ )

इन्द्रकी आज्ञासे सच्चउरपुरमें रहनेवाले और जिन-  
भगवानमहाधीरस्वामीके भक्त श्रीब्रह्मशान्तियक्ष  
चतुर्विधसंघको रक्षणकरो ॥ ७ ॥

॥ गाथा ॥

विखत्तगिहगुत्तसंताण देसदेवाहिदेवयाताउ ।  
निव्वुइपुरपहियाणं भव्वाणकुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥

( छाया )

याः क्षेत्रगृहगोत्रसंतानदेशदेवाधिदेवताः ताः निर्वृत्तिपुर  
पथिकानां भव्यानां सौख्यानि कुर्वन्तु ॥ ८ ॥

( पदार्थ )

( विखत्त ) क्षेत्र ( गिह ) गृह ( गुत्तसंताण )

गोत्र संतान ( देस ) देश इनसंबंधी ( देव ) देवता  
 और ( अहिदेव ) अधिष्ठात्री देवता ( ता ) ये सत्र  
 ( निव्वुइपुर ) मोक्षरूप नगरके ( पहियाणं ) पधिक  
 ( भव्याण ) भव्यजीवोंको ( मुख्वाणि ) कष्टनिवारण-  
 रूपमुख ( कुणन्तु ) करो ॥ ८ ॥

( भावार्थ )

क्षेत्रदेवता गृहदेवता गोत्र संतानदेवता देशदेवता और  
 इन्होंकी अधिष्ठात्री देवता ये सत्र मोक्षरूपनगरके  
 जन्नेवाले पधिकजनोंको कष्टनिवारणरूपमुख करो ॥८॥

॥ गाथा ॥

चक्रेशरिचक्रधरा विहिपहरिउच्छिन्नकंधरावाणियं ।  
 शिवसरणिलग्नसंघस्स सव्वहाहरउविग्घाणि ॥ ९ ॥

( छाया )

विधिपधरिपूणां अत्यर्थच्छिन्नकंधरा चक्रधरा चक्रेश्वरी  
 शिवसरणिलग्नसंघस्य विघ्नानि सर्वथा हरतु ॥ ९ ॥

( पदार्थ )

( विहिपह ) जैनक्रियाके मार्गके ( रिउ ) शत्रुओंकी  
 ( वाणियं ) अत्यर्थ ( छिन्न ) काटी है ( कंधरा )  
 गर्दन जिस्तने ( चक्रधरा ) चक्रको धारणकरनेवाली



चांदकेसमान (अभयदेवो) भयरहित अत्यन्तप्रतापशाली  
 ( जिणवृद्धां ) सामान्यकेवलियोंके प्यारे ( वरुणाणां )  
 वर्द्धमान ( पटु ) प्रभु ( भं ) मेरा ( रक्षक )  
 रक्षणकरे ॥ १० ॥

( भावार्थ )

चतुर्विधसंपत्केसदामी जिनेश्वरभगवान् मुंदरकियाशाली  
 संघके साथ सामान्यकेवलियोंके चांदकेसमान भयरहित  
 अत्यन्तप्रतापवान सामान्यकेवलियोंके प्यारे ऐसे वर्द्धमान  
 प्रभु मेरा रक्षणकरे ॥ १० ॥

॥ गाथा ॥

सोजयउद्वद्धमाणो जिणेसरोणेसरुव्वहयतिमिरो ।  
 जिणचंदाभयदेवा पटुणोजिणवृद्धाजेय ॥ ११ ॥

( छाया )

जिनेश्वरः ( णेसरुव्व ) आदित्य इव हततिमिरः सः  
 वर्द्धमानः जयतु ( तथा ) जिनचंद्राः अभयदेवाः  
 जिनवृद्धाः प्रभवः जयंतु ॥ ११ ॥

( पदार्थ )

( जिणेसरो ) जिनेश्वरभगवान ( णेसरुव्व ) सूर्यके  
 समान ( हयतिमिरः ) नष्टकियाहै अज्ञानरूपअंधकार





( पदार्थ )

( अभय ) निर्भयता ( देव ) देवत्व और ( पद्भुज ) प्रभुत्व को ( दायगे ) देनेवाले ऐसे ( गुरु ) अज्ञान-रूपअन्धकार को रोकनेवाले ( जिग ) जिनभागवानके ( सुन्दर ) सुन्दर ( पाद् ) चरणोंको ( धंदे ) नमस्कार करताहूं अथवा ( अभयदेव ) अभयदेवसूरिको ( पद्भुज ) प्रभुत्व ( दायगे ) देनेवाले ऐसे ( गुरु जिगपद्भुजपाद् ) गुरु जिनपद्भुजसूरिके चरणोंको ( धंदे ) मैं नमस्कार करताहूं, ऐसेही ( घटमानतिलधरस ) घटमानश्यामीके तीर्थको ( सुद्विकपद् ) सृष्टिकेहेतु ( जिगचन्द्र ) जिन चन्द्रसूरि और ( जहंसर ) जिनेश्वरसूरि को ( धंदे ) नमस्कार करताहूं ॥ १२ ॥

( भावार्थ )

निर्भयता देवत्व और प्रभुत्वको देनेवाले ऐसे अज्ञानरूपअन्धकारको रोकनेवाले जिनभागवानके सुन्दरचरणोंको मैं नमस्कार करताहूं, अथवा अभय देवसूरिको दियाष्टे प्रभुत्व जिन्होंने ऐसे गुरु जिगपद्भुजसूरिके चरणोंको मैं नमस्कार करताहूं और घटमान श्यामीने स्थापन कियेहुए सुद्विकपद्भुजसूरिके हेतु जिगचन्द्र और जिनेश्वरसूरिको नमस्कार करताहूं ॥ १२ ॥

( गाथा )

( जिणदत्ताणंसम्मं मन्नंति कुणंति जेवकारिति ।  
मणसावयसावउसा जयंतु साहम्मियातेवि ॥ १३ ॥

( छाया )

ये जिनदत्ताज्ञां मनसा वचसा वपुषा सम्यक्  
मन्यंते ये च तां कुर्वन्ति ये च तां कारयन्ति तेऽपि  
साधर्मिकाः जयन्तु ॥ १३ ॥

( पदार्थ )

( जे ) जो ( जिण ) जिनभगवानने ( दत्त )  
दी हुई ( आण ) आज्ञाको ( मणसा ) मनसे ( वयसा )  
वाणीसे ( वउसा ) शरीरसे ( सम्मं ) योग्य ( मन्नंति )  
मानते हैं ( कुणंति ) करते हैं ( कारिति ) करवाते  
हैं ( तेवि ) वेषी ( साहम्मिया ) साधर्मिक ( जयन्तु )  
विजयी होवो ॥ १४ ॥

( भावार्थ )

जिन भगवानने दी हुई आज्ञाको जो मन वचन  
कायसे योग्य मानते हैं स्वयं आचरण करते हैं और  
अन्योंसे भी आचरण करवाते हैं वे साधर्मिक भी  
विजयी होओ ॥ १३ ॥









सर्पादिकोंके विषका नाशकरनेवाले अथवा मिथ्यात्वरूप  
विषको धारणकरनेवाले मिथ्यास्त्रियोंके मिथ्यात्वरूप  
विषको उन्मूलितकरनेवाले उपद्रवनिवृत्तिरूप मंगल  
और सुखवृद्धिरूपकल्याणके निवासभूत ऐसे पार्श्वप्रभुको  
मैं वन्दनकरताहूँ ॥ १ ॥

( गाथा )

विसहरफुल्लिंगमंतं कंठेधारेइजोसयामणुउ । तस्स  
गगहरोगमारी दुष्टजराजंति उवसामं ॥ २ ॥

( छाया )

यः मनुष्यः सदा विषधररफुल्लिंगमंत्रं कंठे धारयति  
तस्य गगहरोगमहामारीदुष्टज्वराः उपशमं यान्ति ॥ २ ॥

( पदार्थ )

( जो ) जो ( मणुउ ) मनुष्य ( विसहरफुल्लिंगमंतं )  
विषधररफुल्लिंग नामक अष्टादशाक्षरात्मकमंत्रको ( सया )  
निरंतर ( कंठे ) कंठमें ( धारेइ ) धारणकरताहूँ ( तस्स )  
उसके ( गगह ) सूर्यादिकग्रहकृत्वादुःख ( रोग ) फलबुद्धजलो-  
दरादिरोग ( मारी ) फौलरा प्लेगादि उपद्रव ( दुष्टजरा )  
ऐक्याहिकादिदुष्टज्वर ( उवसामं ) नाशको ( जंति )  
प्राप्तहोतेहै ॥ २ ॥



## ( भावार्थ )

जो मनुष्य विषघरस्फुलिंगनामक अष्टादशाक्षर मंत्रको निरंतर कंठमें धारणकरताहै, उसके सूर्यादिग्रहजन्य दुःख कफकुष्ठजलोदरादिरोग कॉलराप्लेगादि उपद्रव एकान्तरा पाली आदि दुष्टअर नाशको प्राप्तहोतेहैं ॥ २ ॥

## ( गाथा )

चिद्वददूरेमंतो, तुञ्जपणामोवि बहुफलोहोइ ।  
नरतिरिएसुविजीवा पावंतिनदुःखदोगच्चं ॥ ३ ॥

## ( छाया )

विषघरस्फुलिंगमंत्रः दूरे तिष्ठतु तव प्रणामोऽपि बहु-  
फलः भवति नरतिर्येक्षपि जीवाः दुःखदौर्गत्यं न  
प्राप्नुवन्ति ॥ ३ ॥

## ( पदार्थ )

( मंतः ) विषघरस्फुलिंगमंत्र तो ( दूरे ) दूरहीं  
( चिद्वद ) रहो परंतु ( तुञ्ज ) आपको ( पणामोवि )  
प्रणामभी ( बहुफलो ) आरोग्यघनधान्यादिसमृद्धिरूप  
फलको देनेवाला ( होइ ) होता है ( नर ) मनुष्य  
जातिमें और ( तिरिएसु ) तिर्यग्जातिमें ( वि ) नी  
उत्पन्न हुये हुए ( जीवा ) जीव ( दुःख ) संकट

और ( दोग्धं ) दुर्गतिको ( न ) नहीं ( पावन्ति )  
प्राप्त होते हैं ॥ ३ ॥

( भावार्थ )

विषयररफुल्लेग मंत्रतो दूरही रहो, परन्तु हे नाथ ! आ-  
पको कियाहुआ प्रगामभी आरोग्य धन-धान्यादि समृद्धि-  
रूप फलको देनेवाला होता है आपको बंदन करने वाले  
जीव पूर्वजन्मकृत प्रबलकर्मानुसार मनुष्ययोनिमें उत्पन्न  
हों वा तिर्यग्योनिमें उत्पन्न हों तो उन योनिओंमें उन्हें  
भी दुःख और दुर्दिशा कभी प्राप्त नहीं होती ॥ ३ ॥

( गाथा )

॥ तुहसम्मत्ते लद्धे चिन्तामणिकल्पपायवग्ग्भाहिण् ॥  
॥ पावन्तिअविग्घेणं जीवाअयरामरंठाणं ॥ ४ ॥

( छाया )

चिन्तामणिकल्पपादपाभ्यधिके तव सम्यवत्त्वे लद्धे  
सति जीवाः अजरामरंस्थानं अविघ्नेन प्राप्नुवन्ति ॥ ४ ॥

( पदार्थ )

( चिन्तामणि ) चिन्तामणिरत्नसे और ( कल्पपाय-  
वग्ग्भाहिण् ) कल्पवृक्षसे अधिक ( तुह ) आपके  
( सम्मत्ते ) सम्यवत्त्वदर्शनको ( लद्धे ) प्राप्तकिये सते

( जीवा ) भव्यजीव ( अयरामरं ) जरा और मृत्युसे रहित ( ठाणं ) स्थानको ( अविग्घेणं ) निर्विघ्नतासे ( पावन्ति ) प्राप्त करलेतेहैं ॥ ४ ॥

( भावार्थ )

चिन्तामणिरत्नसे और कल्पवृक्षसे अधिक आपके सम्यक्त्वदर्शनको प्राप्त करनेसे भव्यजीव जरा और मरणसेरहित स्थानको निर्विघ्नतासे प्राप्त करलेतेहैं ॥४॥

( गाथा )

इअसंथउमहायस भक्तिभरनिभरेणहिअएण ॥  
तादेवदिज्जवोहिं भवेभवेपासजिणचंद ॥ ५ ॥

( छाया )

हे महायशः भक्तिभरनिभरेणहृदयेन इति संस्तुवे तस्मात् हे देव हे पार्श्वजिनचन्द्र भवे भवे बोधिं देहि ॥ ५ ॥

( पदार्थ )

( महायस ) हे त्रैलोक्यव्यापककीर्तिमान् ( भक्ति ) आत्यन्तिक प्रेमके ( भर ) समुदायसे ( निभरेण ) प्रपूरित ( हिअएण ) हृदयसे ( इअ ) इसप्रकार आपकी ( संथउ ) स्तुतिकरताहुं ( ता ) इसहेतु ( देव ) हे देव ( पासजिणचंद ) हे जिनोमें चांदके समान

पार्श्वनाथस्वामि ( भवे भवे ) जन्म जन्ममें ( चोहिं )  
जिनधर्मकी प्राप्ति ( दिख्ख ) देओ ॥ ५ ॥

( भावार्थ )

हे त्रैलोक्यव्यापककीर्तिमान् आपकी भक्तिके समूहसे  
प्रपूरित हृदयसे पूर्वोक्त प्रकार आपकी स्तुति करताहूं.  
इस हेतु हे सम्पूर्ण जिनोंमें चांदके समान पार्श्वप्रभु ।  
आप जन्मजन्ममें जिनधर्मप्राप्ति मुझे देओ ॥ ५ ॥

शति धीशन्दुरभिनधेताम्बरपाटशाटामुख्याभ्यापकचोबेकुट्टोद्भवभ्रांणोपीनाथसूनु  
षण्डितभ्रांणशर्मकृतमुषोभिनीटीकासहितं

“ उदयगहरस्तोत्रम् ”

समाप्तम् ॥

— — —







